आर.एन. आई.पंजीयन क्रं.
CHHIN/2017/72506

वर्ष ४ अंक ४ ,मई 2020

किलोल

http://Www.kilol.co.in

WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

H. No. 580/1 Street 17 B Durga Chowk,
Adarsh Nagar, Mowa Raipur (CG) 492007
email : wings2flysociety@gmail.com

मूल्य - 80 /-

अनुक्रमाणिका

ये है अपना किलोल 8

रामायण में मैने देखा 10

होली के मस्ती 12

होली आई है होली 13

गुड़िया की होली 14

ज्ञान 15

कोरोना वायरस 17

आलू भालू च्यों म्यो 19

मुझे स्कूल जाना बहुत अच्छा लगता है 21

हवा 24

मोहू पढ़े बर जाहूं गा 25

दो बातें 26

उलटी पड़ गई चाल 29

मैं शिक्षिका हूँ 31

सहनशीलता 33

कोरोना तू भारत आया क्यूँ 35

पुस्तक से हुई दोस्ती जब से 37

कोरेना वायरस ल भगाना हे 39

मेरा स्कूल 41

भारत माता करे पुकार 42

तोता और बहेलियां 44

बासन्ती रँग 47

बूझो पहेली 48

बच्चे परीक्षा को लें एक त्योहार की तरह 50

तारे हमारे 53

चल पेड़ लगाबोन 55

एक लोटा दूध 57

बिल्ली मौसी 59

आई बसंत 61
राम का नया स्कूल 62
बलिदान करना सीखें 65
शिक्षा जन जागरण गीत 66
सत्कर्म तुम्हारा 68
पानी कब, कैसे और कितना पियें 69
परीक्षा 71
आओ हम पढ़ने का जश्न मनाएं 72
पढ़ाई का महत्व 74
कोरोना वाइरस 77
मुझको दिल्ली जाना है 78
चिड़िया की सीख 79
मेरा घोड़ा 80
बाल कविता 81
लॉकडाउन में मेरा घर 82
संडे की पाठशाला - एक अभिनव शिक्षण पहल 83
कार्टून हमें पसंद 85
प्रतीक्षा 87
कोरोना के कहर 89
माँ 91
फूल 92
हाय हाय रे बदरा 94
पुत्र के लिए पत्र 95
मैं तिमिर दूर करने वाला उजाला हूँ 97
संघर्ष जारी रहेगा 99
जय जोहार 101
ज्ञान और विज्ञान 102
भिन्न 105
पंचतंत्र की कथाएँ 106

घमंडी हाथी 108
माँ 110
स्लोगन -शिक्षा जागरूकता 111
हमारे प्रेरणा स्त्रोत हेलेन केलर 112
मेरा बचपन 114
अब तोर का होही 116
लॉकडाउन की कक्षा 118
ऐसा घर 120
लक्ष्य 121
लइका हँव बनिहार के 122
प्रेरक कविता 124
बच्चों इसका ध्यान रखो 126
जीरो (0)का अनोखापन 128
कोरोना को हराना है 131
समय की परख 133
स्कूल पढ़ने जाएंगे 134
राम तय बनवासी हो गेस 137
TREES 144
कोरोना - नया रूप लेकर 102 साल पुराना दर्द 145
कोरोना 148
पढ़ना आसान है मेरे भाई 149
प्यारे बच्चे 151
समाचार 153
दया करो माँ 155
O My Dear 156
कोरोना के जाल 157
प्यारे बच्चों 159
पढेंगे पढ़ाएंगे - जल जरूर बचाएंगे 161
कोरोना महामारी से सुरक्षा एंव बचाव 164

कोरोना 165
स्वच्छता 167
जामझरिया जाना है 169
जीवन 171
कोरोना मुक्त भारत 173
श्यामपट्ट: शिक्षक का मित्र 175
बेटी तुम महान हो 177
चित्र देखकर कहानी लिखो 179
हाथीराजा 180
जैसी करनी वैसी भरनी 181
लेखक- अतुल वर्मा, कक्षा सातवीं, शासकीय प्राथमिक शाला सुलौनी 183
घमंडी मगरमच्छ 184
लालची मगरमच्छ 186
लेखक- वसुन्धरा कुर्रे 187
हमर गाँव के स्कूल 190
शतरंज खेलने के फायदे 192
Thank You God 195
ज्ञान की पाती- वायरस के बारे में रोचक तथ्य 196
बंदर की चतुराई 199
मैराथन की धाकड़ गर्ल्स 201
मुस्कान लाइब्रेरी 203
नटखट निन्नी 205
हमर अघवा क्रांतिकारी - मंगल पांडे 207
अधूरी कहानी पूरी करो 210
संतोष कुमार कौशिक व्दारा पूरी की गई कहानी 211
फलों से संक्रमण 211
प्रियंका सिंह व्दारा पूरी की गई कहानी 213
इंद्रभान सिंह कंवर व्दारा पूरी की गई कहानी 215
सत्कर्म 215

यशवंत कुमार चौधरी व्दारा पूरी की गई कहानी 217
गीता खूंटे व्दारा पूरी की गई कहानी 219
टेकराम ध्रुव 'दिनेश' व्दारा पूरी की गई कहानी 220
इलाज जंगल का 220
कन्हैया साहू 'कान्हा' व्दारा पूरी की गई कहानी 221
वन औषधी का महत्व 221
अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 223
रिश्ता 223
भाखा जनऊला 225

संपादक

डॉ. आलोक शुक्ला

संपादक मण्डल

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, धारा यादव, द्रोण साहू, डॉ. रचना अजमेरा, डॉ. माया नायर, रीता मंडल, कंचन लता यादव, पुर्णेश डडसेना, वृंदा पंचभाई, शिप्रा बेग

तकनीकी सहायक

पुनीत मंगल

संपादक की कलम से

प्यारे बच्चों,

आप सभी लाकडाउन की वजह से घर पर ही अपने माता-पिता, भाई और बहन के साथ होंगे. आपको घर पर रहते हुए एक माह से अधिक समय हो गया है. मुझे उम्मीद है कि इस दौरान आपने घर पर रहकर पढ़ना लिखना नहीं छोड़ा होगा. अपने गाँव में ही अपने अगली कक्षा की पुस्तकें अपने साथियों से अदला बदली कर लेवें. रोज कुछ न कुछ लिखने एवं गणित का अभ्यास करें. अपने घर का काम कर भी अपने पालकों को सहयोग देवें.

आपकी पढाई को जारी रखने के लिए “पढई तुंहर दुआर” नामक कार्यक्रम शुरू किया गया है. इसमें आपके स्कूल के सारे शिक्षक और सारे बच्चे एक साथ जुड़कर अपने अपने क्लास में एक साथ अपने अपने घर पर रहकर वैसे ही पढ़ सकेंगे जैसा कि स्कूल में पढ़ते हैं. ऐसे स्कूल को हम “वर्चुअल स्कूल” कहते हैं. अपने स्कूल में शायद आप अपने शिक्षक से खुलकर प्रश्न नहीं पूछ पाते होंगे. इस स्कूल में आपको विषय से संबंधित जो भी शंका है बिना डरे उन्हें मोबाइल से लिखकर पोस्ट कर सकते हो.

आप सभी को अगली कक्षा में जाने के लिए बधाई पर हाँ, समय निकालकर पिछली कक्षा की पढाई को भी पलट कर देखते रहना. और हाँ अपने अधिक से अधिक साथियों को cgschool.in में अवश्य पंजीयन करवाएं.

आपका
आलोक शुक्ला

ये है अपना किलोल

रचनाकार- गोविंद पटेल

ज्ञान है इसमें बड़ा अनमोल
शब्द है इसके तोल – मोल
गागर में सागर इसके बोल
आओ हम सब पढ़ें किलोल.

घर-घर में किलकारी गूंजे
ऐसे है इसके बोल,
जीवन कैसे जिया जाए?
यह सिखाता है किलोल.

कविता कहानी और संदेश देती
अन्य गतिविधियों से शिक्षा मिलती
खजाना ज्ञान का इसमें अनमोल
है अपना प्यारा दोस्त किलोल.

रामायण में मैने देखा

रचनाकार- पुनीत मंगल

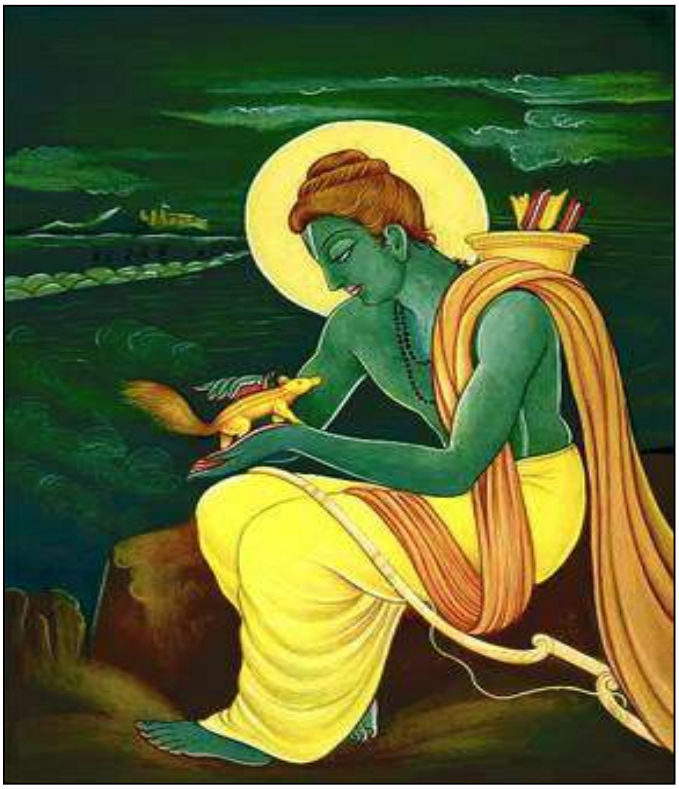

प्यारे बच्चों आप सभी को विदित होगा की रामायण का प्रसारण दूरदर्शन पर पुनः शुरू हुआ है आप सभी को रामायण पसंद आ रहा होगा.

रामायण में भगवान राम जी के बचपन के बारे में बताया गया उनकी शिक्षा के बारे में बताया गया. उनकी शिक्षा-दीक्षा गुरु वशिष्ठ जी के आश्रम में हुई. जहाँ उन्होंने अनेक विषयों की शिक्षा ग्रहण की. गुरु वशिष्ठ जी शिक्षा पूर्ण होने पर जब अपना अंतिम उपदेश दे रहें थे तो उन्होंने अपने शिष्य राम जी से कहा कि हे राम मेरे द्वारा समस्त ज्ञान आपको प्रदान किया गया है. आप सिर्फ मेरे द्वारा दिये गए गुणों को ही ग्रहण करना मेरे अवगुणों को नहीं.

मेरे द्वारा दी गयी शिक्षा को ही सत्य मान कर कोई भी निर्णय न लेना. आप अपने विवेक का उपयोग कर सही गलत का निर्णय लेना.

इस प्रसंग ने मुझे बहुत प्रभावित किया. कारण यह की जो श्री राम के गुरु बनाने की योग्यता रखते है वैसे महान गुरु भी स्वयं के ज्ञान की हर परिस्तिथि के लिए पूर्ण नहीं मानते. उन्होंने विवेक यानि परिस्थिति के अनुसार मानव की समझ को महत्व दिया.

शिक्षा का मतलब सिर्फ ज्ञान ग्रहण करना नहीं है, शिक्षा का वास्तविक अर्थ ज्ञान का उपयोग उचित तरीके से सभी की भलाई के लिए किया जाना है.

विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्.

होली के मस्ती

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियु"

फूले परसा के फूल सुग्घर, लाली लाली दिखत हे.
फागुन ह अब आगे संगी, कवि कविता लिखत हे..
रंग गुलाल उडावत सबझन, होली ल मनावत हे.
भाँग पी के माते हावय, गरमे गरम भजिया खावत हे..
होली है भाई होली है, राग सब झन गावत हे.
घोरे हावय चिखला माटी, कोनो ह नई भावत हे..
बड़े बड़े नँगाड़ा धर के, बबा ह बजावत हे.
नाती पोता सबोझन ह, सुर-म-सुर मिलावत हे..

होली आई है होली

रचनाकार- सरमिला बाई कक्षा 5, प्राथमिक शाला टाकमुंडा

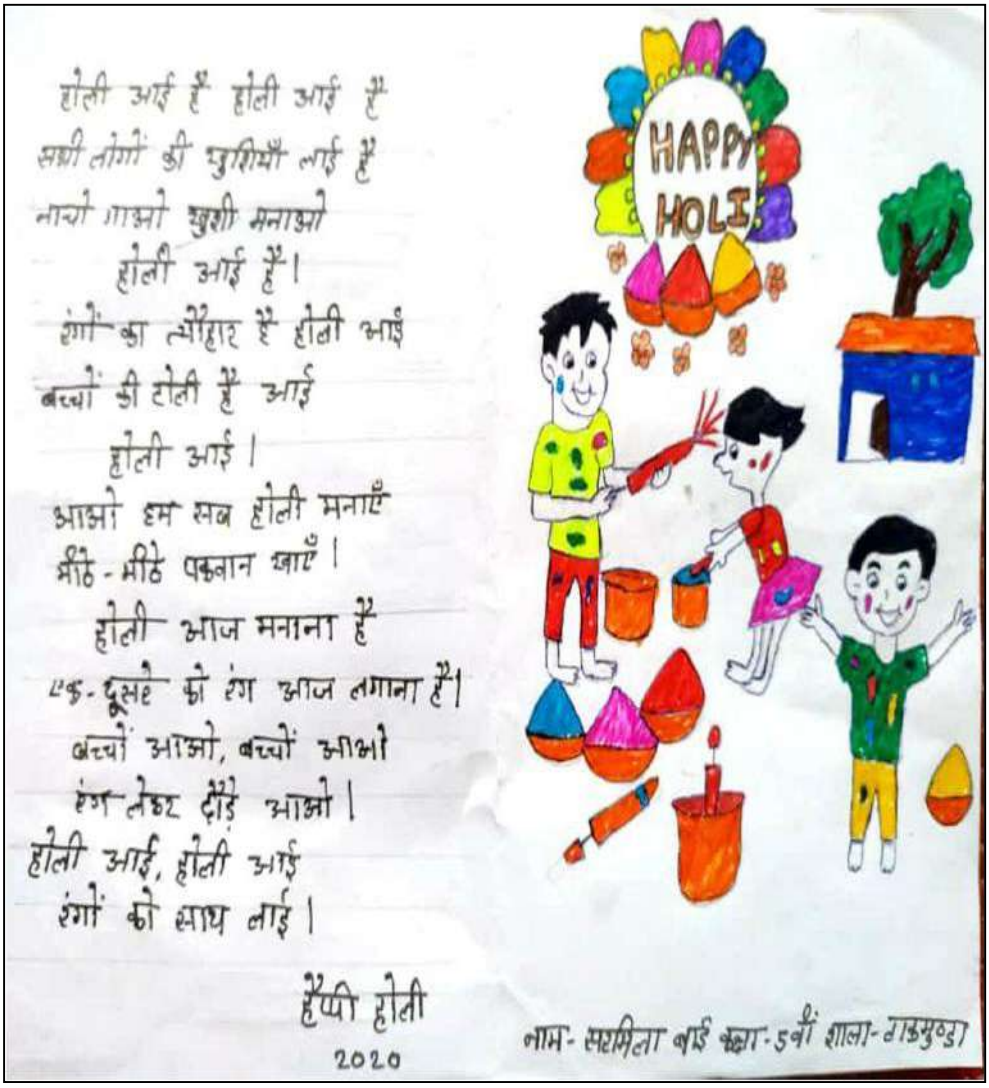

गुड़िया की होली

रचनाकार-प्रिया देवांगन प्रियू

रंग बिरंगे सभी ओर जी, हरियाली है छाई.
फागुन की होली है देखो, गुड़िया रंग है लाई..
घूम -घूम के खेले होली, सबको रंग लगाई.
पापा के संग गुड़िया रानी, पिचकारी खूब चलाई..
चुन्नू-मुन्नू दोनों आये, रंग साथ में लायें.
गुड़िया रानी को देखकर, दंग सभी रह जायें..
दादा जी मुखौटा पहने, गुड़िया को डराये.
दौड़ दौड़ के खेले होली, बच्चे शोर मचाए..
घर घर मीठे पकवान बनाय, मिल बाँट कर सब खाये.
बच्चे बूढ़े सभी मजे से, होली खूब मनाये..

ज्ञान

रचनाकार- मंजु जैन

नहीं छिपा है ज्ञान सिर्फ
स्कूल या किताब में
आंखें अपनी खुल जाएं तो है
दुनिया खुली किताब है
चिड़िया उड़ती मुक्त गगन में है
हंस लगाता ध्यान है
वफादारी है कुत्ते में तो
कोयल में मीठा गान है
पेड़ों से तुम देना सीखो
नदियों से नित चलना

हवा से सीखो शीतल होना
धरती से सब सहना
कितनी बात लिखूं मैं साथी
कम पड़ जायेगी यह पाती
पाना है यदि ज्ञान तुम्हें तो
सब चीजों में ज्ञान है

कोरोना वायरस

रचनाकार- विजय कुमार चंदेल

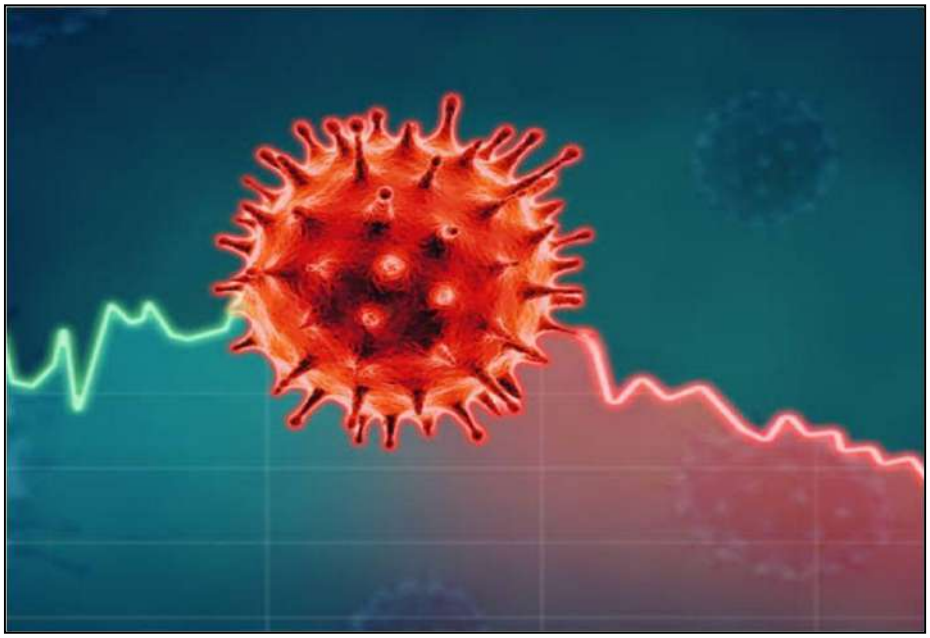

देखो ये कैसी विपदा आई,
सारे जग में कोरोना छाई

हाहाकार मचा है भारी
जग में छाई है अंधियारी
दुनियाँ मौत को देख रही है
बचने का कोशिश कर रही है
अभी समाधान नही हो पाई,,
सारे जग में ,,,,,,,,,,,

लाशों का लग गया अंबार
कैसे होगा इनका उध्दार
कोरोना ने है प्रलय मचाया
महामारी का संकट आया

घर में रहने समें ही है भलाई
सारे जग में ,,,,,,,,,,,

कोरोना से है यदि अब बचना
"कोई रोड प ना निकलना"
रुक गया है जीवन धारा
सार्वजनिक दूरी है आधार
स्वयं सुरक्षित रहो सब भाई
सारे जग में ,,,,,,,,,,,,

आलू भालू च्यों म्यो

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

एक बकरी थी. उसके चार बच्चे थे- आलू, भालू, च्यों, म्यो. बकरी जब भी खाना लेने बाहर जाती वह बच्चों को कहती -

आलू दरवाजा बंद,

भालू दरवाजा बंद,

च्यों दरवाजा बंद,

म्यो दरवाजा बंद.

बच्चे दौड़ कर दरवाजा बंद कर लेते. जब बकरी लौट कर आती तब कहती -

आलू दरवाजा खोल,

भालू दरवाजा खोल,

च्यों दरवाजा खोल,

म्यो दरवाजा खोल.

बच्चे दौड़ कर दरवाजा खोल देते. पास में ही एक भेड़िया रहता था,वह बकरी के मोटे ताजे बच्चों को खाना चाहता था. पर दरवाजा खटखटाने के बाद भी बच्चे दरवाजा नहीं खोलते थे. एक दिन उसने छिपकर सुन लिया कि बकरी ऐसा क्या कहती है कि बच्चे दरवाजा खोल देते हैं. दूसरे दिन बकरी के जाने के बाद वह आया औरउसने बकरी की आवाज में कहा -

आलू दरवाजा खोल,
भालू दरवाजा खोल,
च्यों दरवाजा खोल,
म्यो दरवाजा खोल.

बच्चों ने समझा उनकी माँ आ गई है. उन्होंने दरवाजा खोल दिया. भेड़िया चारों बच्चों को गपा- गप खा लिया और जाकर नदी के किनारे सो गया. जब बकरी लौट कर आई. उसने देखा दरवाजा खुला है और बच्चे भी घर पर नहीं है. पड़ोसन ने उसे सारी बात बता दी. बकरी दुख और गुस्से में चाकू धार करने वाले के पास गई. उसने कहा-'भैया मेरी सींग में धार कर दो. फिर वहाँ से तेली के पास गई और कहा-' मेरी सींग में तेल लगा दो. फिर वह नदी के किनारे गई जहाँ भेड़िया सो रहा था. उसने दौड़ कर भेड़िए के पेट में सींग घोपदिया. भेड़िये का पेट फट गया और बकरी के चारों बच्चे बाहर आ गए. बकरी अपने बच्चों के साथ खुशी खुशी घर लौट आई.

मुझे स्कूल जाना बहुत अच्छा लगता है

रचनाकार- कु. शीला, कक्षा चौथी, शा.प्रा.शाला कन्या आश्रम शिवपुर

घड़ी में दस बजते ही तैयार होकर स्कूल पहुंच जाना अच्छा लगता है.
स्कूल में खेल-खेल में पढ़ाई होती है हर सपना सच्चा लगता है.
मुझे स्कूल जाना अच्छा लगता है

जब मैम हमें नाचते गाते में पढ़ाती है.
हर सबक पक्का लगता है..
स्कूल में दूध और मध्यान भोजन मिलता है.
जैसे हो स्कूल में मां, मन मां का बच्चा सा लगता है..
मुझे स्कूल जाना अच्छा लगता है

संपर्क दीदी हमें नई- नई कविताएं सिखाती हैं.
पिटारे में है उनके रंग बिरंगे खेल-खिलौने उनमें रम जाना अच्छा लगता है..
कुछ सुनना और कुछ सुनाना अच्छा लगता है .

यूं ही दोस्तों के साथ खिलखिलाना अच्छा लगता है ..
मुझे स्कूल जाना अच्छा लगता है

अकेले रहना खलता है, रोज नए-नए दोस्त बनाना अच्छा लगता है.
दोस्तों से रूठना और उनको मनाना अच्छा लगता है..
स्कूल में हरी सब्जियां, बैगन, लौकी ,टमाटर आदि फलते हैं.
साथ में फूलों का खिल जाना अच्छा लगता है..
मुझे स्कूल जाना अच्छा लगता है

हमारी प्रियंका मैम बहुत अच्छी है
उनका हमें डांटकर मुस्कुराना अच्छा लगता है.
और हमें दुखी देखकर उनका मां की तरह
खुद भी दुखी हो जाना अच्छा लगता है..
मुझे स्कूल जाना अच्छा लगता है ..

स्कूल में हमारी चलती है सत्ता (बाल कैबिनेट)
हमें स्कूल चलाना अच्छा लगता है
जब मैम हमें कोई नई कविता सिखाती हैं
हौले -हौले गुनगुनाना अच्छा लगता है.
मुझे स्कूल जाना अच्छा लगता है ..

क्यों लोग स्कूल नहीं जाना चाहते बस यही खलता है.
बड़ी होकर मैं ये बनूंगी! वो बनूंगी.
ऐसे सतरंगी सपने सजाना अच्छा लगता है.
रोते-रोते हंस जाना अच्छा लगता है
मुझे स्कूल जाना अच्छा लगता है

कभी बड़बोला और कभी अनबोला रह जाना अच्छा लगता है.
मैम हमें कविता लिखना सिखाती हैं अब
उन पर ही कविता लिख पाना अच्छा लगता है.
मुझे स्कूल जाना अच्छा लगता है

घर तो है पर समय ज्यादा स्कूल में बिताते हैं,
घर जैसे ही स्कूल को सजाना अच्छा लगता है.
उड़ाएंगे हम हवाई जहाज भी पर बारिश में
कागज की कश्ती बहाना अच्छा लगता है..
मुझे स्कूल जाना बहुत अच्छा लगता है

हवा

रचनाकार-भूमिका राय

ए हवा बहना तेरा काम है
तुझे देखते हुए स्थिर रहना मेरा काम है
मैं महसूस करती हूँ मिट्टी की सोंधि ख़ुशबू
जो बारिश के साथ तू लेकर आती है
फिर छत पर खड़े हो जाती हूँ
गमलों में गिरता टिपटिप पानी-
मैं, हवा, मिट्टी फिर जीते जी एक हो जाते है.

मोहू पढ़े बर जाहूं गा

रचनाकार-गीता खुंटे

मोहु पढ़े बर जाहूं गा,
अब्बड़ नाम कमाहूं गा
दाई ददा ला कहे हों,
एदारी मोला भी तुमन
स्कूल में भर्ती कराहु गा
तुम्हर नाम ला आघु लिहों,
पढ़ लिख के तुम्हर पीरा हरीहों
पढ़ लिख के मोहु
एक दिन अफसर बन जाहूं गा
मोहु पढेबर जाहूं गा.....
दाई जेसने महुँ बनिहो
मैडम महुँ कहलाहुँ गा
ददा जेसने पायलट बनिहो
महुँ जहाज उड़ाहूं गा

दो बातें

रचनाकार- भाग्यश्री जायसवाल कक्षा 9 वीं, आदर्श विद्यालय मोवा, रायपुर

बचपन से ही मैं अपने पापाजी के साथ घरेलू जरुरत की चीजें लेने बाजार जाया करती हूँ. आज हम लोग सब्जियाँ खरीदने के लिए सब्जी मंडी गये थे. व्यापारियों ने हरी-हरी ताज़ी सब्जियों से अपनी दुकानें सजा रखी थीं. हरी –हरी भाजियां, मटर, धनियाँ, मिर्च, लाल –लाल टमाटर, गाजर मेरे मन को लुभा रहे थे. मेरा मन कर रहा था कि झट से सभी सब्जियों को अपने थैले में डाल लूँ. पर पापा जी थे कि मेरा हाथ पकड़ कर भीड़ को चीरते हुए आगे बढ़े जा रहे थे.

मैंने कहा, पापाजी रुकिये, यहाँ पर ताजी सब्जियाँ हैं, खरीद लेते हैं. नहीं बेटा, आगे चलो, कहते हुए पापाजी आगे बढ़ते हुए सब्जी मंडी के दूसरे छोर पहुँच गए.

भीड़ से बाहर एक बुजुर्ग जिन के हाथ कांप रहे थे, अपनी टोकरी में कुछ सब्जियाँ जैसे मटर, गोभी, मिर्च, धनिया ले कर बैठे थे. हमें देखते ही उनकी आँखों में एक विश्वास भरी चमक दिखाई पड़ी. ऐसा लगा जैसे वे हमारा ही इंतजार कर रहे थे.

पापाजी ने टोकरी लेकर उनसे बात चीत करते हुए कुछ सब्जियाँ ख़रीदीं. पैसे देते हुए उनका हाल चाल भी पूछलिया. मानो वे हमारे सगे – संबंधी हों.

फिर कुछ दूर चलने के बाद पापाजी एक भाजी वाली महिला के पास रुके जिनकी गोदी में एक छोटा सा बच्चा था.उसके पास लाल भाजी, पालक व प्याज भाजियां थीं जो मुझे पसंद नहीं आ रही थीं. मैंने पापाजी का हाथ खींच कर अपनी अनीक्षा जाहिर की. पर वे नहीं माने और उससे थोड़ी-थोड़ी तीनों भाजियां ले लिए. हम पैसा देकर आगे बढ़ गए.

कुछ दूर चलने पर ऐसा लगा मानो हमें कोई आवाज दे रहा हो. पीछे मुड़कर देखा तो गोदी में बच्चा लिए हुए वही महिला हमें आवाज दे रही थी. हम रुक गए. पास आते ही उसने कहा, आपने मुझे अधिक पैसा दे दिया है. यह कहकर दस रुपए का एक नोट पापाजी को देकर वापस चली गई. सब्जी मंडी से हम लोग स्कूटी तक वापस आ कर घर की ओर चले. रास्ते भर मेरे मन में एक सवाल गूंज रहा था. सोचा पापा जी से पूछलूँ, लेकिन हिम्मत नहीं हो रही थी. फिर भी साहस कर पूछ ही लिया.

पापाजी, बड़ी दुकान से, जहां भीड़ अधिक थी, हमने सामान क्यों नहीं खरीदा. घर पर मम्मी भी बोलेंगी क्या उठा लाए हैं. पूरा का पूरा बासी है. मेरे प्रश्न को सुनते ही गाड़ी रोककर पापाजी ने मुझे बताया, जरुरी नहीं है भीड़ भरी बड़ी दुकान में अच्छी सामग्री ही मिलती है. बेटा, ये सब्जियाँ भी उतनी ही ताजी हैं जितनी बड़े व्यापारी की दुकान में थी. जिनसे हमने सब्जियाँ खरीदी हैं वे भी इन्हीं बड़े व्यापारियों से खरीद कर बेचते हैं. तुमने देखा आजजिन से हम ने सब्जियाँ खरीदी हैं उनमें से एक अत्यंत बुजुर्ग व परिश्रमी तो दूसरी गरीब व ईमानदार है. हमने इनसे सब्जियाँ तो ख़रीदीं ही, उनका सहयोग भी किया है. चाहते तो वे भी दूसरों की तरह मंदिर या किसी चौक चौराहे पर बैठ, भीख मांग कर जीवन चला सकते थे. पर उनकी ईमानदारी, उनके स्वाभिमान ने उन्हें परिश्रमी बनाया है. परिश्रम करने वाले को हमेशा सफलता मिलती है. वे दोनों परिश्रमी व ईमानदार हैं उनका हमें सम्मान करना चाहिए.

पापाजी ने मुझे बताया कि ये सभी बातें उन्हें मेरी दादीजी ने बताई हैं. जब हम दूसरों का सम्मान करते हैं तो उनके साथ हमारा स्वयं का सम्मान बढ़ता है. ऐसे गरीबों की

सेवा करने व बुजुर्गों के पास कुछ देर रुककर बात करने से हमें आत्मसंतुष्टि मिलती है. ऐसे ही छोटे-छोटे प्रयासों से हम समाज के प्रत्येक व्यक्ति की सेवा कर सकते है. मैं ने पापाजी के उत्तर से जाना कि सेवाभाव किसे कहते हैं. मैंने भी संकल्प लिया कि पापाजी की ये बातें जीवनभर याद रखूंगी. बुजुर्गों व गरीबों की सहायता करना मरा धर्म नहीं कर्म होगा.

उलटी पड़ गई चाल

रचनाकार- नीरज त्यागी

चिंकी हाथी सूंड में रंगों भरा पानी भर लाया.
कालू बंदर बिना कुछ समझे उसके पास आया..

चिंकी ने फिर जैसे ही शरारत भरी मुस्कान से मुस्काया.
तब कहीं जाकर कालू को कुछ समझ आया..

चिंकी ने जैसे ही अपनी सूंड उसकी और बढ़ाई.
कालू ने जोर से छलाँग लगाकर अपनी जान बचाई..

चिंकी ने दिमाग लगाया,कालू को अपने पास बुलाया.
चालाक कालू ने पेड़ पर रंग बिरंगा गुलाल छिपाया..

कालू भोला-भाला बनकर फिर चिंकी के पास जा बैठा.
रंगों में चिंकी को कर सराबोर,कूद कर पेड पर चढ़ बैठा..

जब चिंकी पर पड़ गयी उलटी अपनी ही चाल.
फिर अपनी सूंड घुमाकर चल पड़ा अपनी मस्तानी चाल..

मैं शिक्षिका हूँ

रचनाकार- प्रियंका सिंह

मैं शिक्षिका हूँ
मैं मिट्टी को घड़े बनाती हूँ .
अगर रोए कभी तो उन्हें पुचकारती हूँ..
जो कभी गिरें जमीं पर तो उन्हें उठाती हूँ.
और फिर प्यार से उन्हें सांचे में ढालती हूँ..

मैं शिक्षिका हूँ
वे जो कभी रूठें मुझसे तो उन्हें मनाती हूँ.
उनके प्रति जो मेरे दिल में है उन्हें जताती हूँ!..
लोग कहते हैं मेरा दिल है पत्थर का.

पर बताऊं कैसे सबको इसे हर पल पिघलाती हूँ..

मैं शिक्षिका हूँ
मैं कभी उन्हें गुरु की तरह डांट लगाती हूँ.
और फिर एक मां की तरह दुलारती हूँ..
जब कभी मेरे बच्चे स्कूल आने में आनाकानी करते हैं.
उन्हें शिक्षा का महत्व बता स्कूल बुलाती हूँ..

मैं शिक्षिका हूँ
उन्हें खेल-खेल में पढ़ना सिखाती हूँ.
मैं उनके लिए भयमुक्त वातावरण बनाती हूँ..
मैं पालक संपर्क निरंतर करती हूँ.
उनके बच्चे स्कूल में सुरक्षित है उन्हें विश्वास दिलाती हूँ..

मैं शिक्षिका हूँ
मैं स्कूल में हमेशा प्रिंट रिच वातावरण बनाती हूँ .
और अपने बच्चों में सर्वांगीण विकास के बीज उपजाती हूँ ..
मेरे बच्चे योग्य और काबिल इंसान बनें उनमें यह संस्कार जगाती हूँ .
किसी बच्चे को कभी ना हो किसी तरह का दुख ईश्वर से यही मनाती हूँ ..

मैं शिक्षिका हूँ
मैं उनसे और वह मुझसे जुड़े रहें .
उनमें यह भाव जगाती हूँ
मेरा और उनका रिश्ता है अनमोल.
मैं उनमें इस रिश्ते की दीप जलाती हूँ..

सहनशीलता

रचनाकार- धारा यादव

एक बार छत्रपति शिवाजी महाराज जंगल में शिकार करने जा रहे थे. अभी वे कुछ दूर आगे बढ़े ही थे कि एक पत्थर आकर -उनके ऊपर गिरा.

शिवाजी क्रोध में इधर-उधर देखने लगे, पर उन्हें आस पास कोई भी दिखाई नहीं दिया. तभी पेड़ों के पीछे से एक बुज़ुर्ग महिला सामने आई और बोली “ये पत्थर मैंने फेंका था.

शिवाजी ने पूछा, “आपने ऐसा क्यों किया ?”

बूढ़ी महिला बोली, ”क्षमा कीजिए महाराज, मैं तो इस पेड़ से कुछ फल तोड़ना चाहती थी पर बूढ़ी होने के कारण मैं पेड़ पर चढ़ नहीं सकती, इसलिए पत्थर मार कर फल तोड़ रही थी, ग़लती से वो पत्थर आपको लग गया. ”

शिवाजी सोचने लगे “यदि एक पेड़ इतना सहनशील हो सकता है, जो कि पत्थर मारने पर भी मीठा फल देता है, तो मैं एक राजा होकर सहनशील क्यों नहीं हो सकता ?” ऐसा सोच कर उन्होंने बुज़ुर्ग महिला को कुछ मुद्रा भेंट की और वहाँ से चल दिए.

निश्चित रूप से कोई साधारण व्यक्ति ऐसी ग़लती से क्रोधित हो उठता और ग़लती करने वाले को सज़ा भी देता पर शिवाजी न सिर्फ़ एक महान राजा थे अपितु वे एक महान इंसान थे, वे भला ऐसा कैसे करते.

कोरोना तू भारत आया क्यूँ

रचनाकार- कृष्ण कुमार ध्रुव

कोरोना तू भारत आया क्यूँ,
कोरोना तू भारत आया क्यूँ.
लोगों को इतना सताया क्यूँ,
छोटे से छोटे बड़े से बड़ों को डराया क्यूँ.
गरीब मजदूर तबके के लोगों को,
दो वक्त की रोटी के लिए इतना तड़पाया क्यूँ.
अच्छी चल रही थी भारत की जिंदगी,
यहां आके अपना पैर जमाया क्यूँ ,
कोरोना तू भारत आया क्यूँ.
कोरोना तू भारत आया क्यूँ.
तुम इंसान पहचानते न मजहब,
इतने लोगों के जीवन पर आया क्यूँ.
किसी का चिराग उजाड़ा, किसी से पिता का साया,
किसी के घर का शांति,सुख,चैन उड़ाया क्यूँ.
बहुत हो गई अब तुमको यहां रहने नहीं देंगे,

कोई हाथ नहीं मिलाएगा सब नमस्कार करेंगे.
बाहर से आने के बाद और खाने से पहले,
सब सेनेटाइजर और हैंड वाश का उपयोग करेंगे.
जात देखा न पात इतने लोगों को सताया क्यूँ,
इतने दिन तक लोगों की जीवन को ठहराया क्यूँ.
अब तेरा यहां पैर जमने नहीं देंगे,
लॉकडाउन और सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करेंगे.
हम सब मिलकर एक साथ लड़ेंगे,
तूने देश को इतना डराया क्यूँ.
कोरोना तू भारत आया क्यूँ,
लोगों को इतना सताया क्यूँ.

पुस्तक से हुई दोस्ती जब से

रचनाकार - सुनीता टांडे

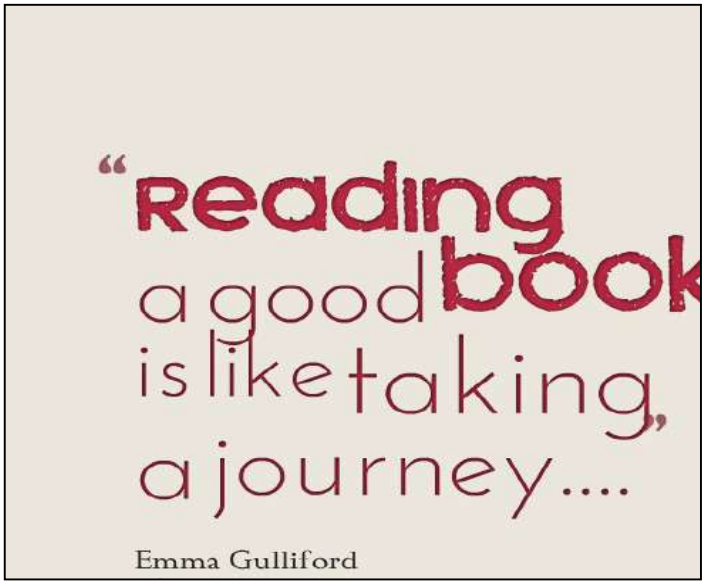

तब से मिला ज्ञान मुझे
दुनिया से अनजान थी मैं
न सीखा था चलना राह में
पुस्तक ने दिखलाई दिशा मुझे
ज्ञान का भंडार है पुस्तक
प्रेम का सागर है पुस्तक
राह से जब भटक जाऊं मैं
सही राह दिखलाती पुस्तक
इनसे ही सब ज्ञान हैं पाते
दुनिया के सफर में हैं चलते
देश के वीर नेताओं ने भी तो
ज्ञान पाया पुस्तक से ही
पुस्तक से ही बने महान
पुस्तक नहीं तो कुछ भी नहीं

पुस्तक करता मनोरंजन भी
मन बहलाता है पुस्तक
सबके मन को भाती पुस्तक
पुस्तक से मुंह न फेरो
पुस्तक को तुच्छ न समझो
करके देखो दोस्ती इससे
कभी न देता धोखा यह
सच्ची दोस्त है पुस्तक हमारी.

कोरेना वायरस ल भगाना हे

रचनाकार-डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"

कोरेना वायरस चीन ले आए हे,
ये ला देख जम्मो विश्व ह थर्राय हे.
कोरेना कोरेना कोहराम मचाय हे,
दिन अउ रात इहि समाचार छाय हे.

हमरो देस ह रोके ब सुरक्षा बनाय हे,
रेलवे टेशन हवई अड्डा म मशीन लगाय हे.
मोबईल म जी कोरेना के रिंगटोन बाजे हे,
कोरेना ला बाहचे के उपाय बताय हे.

इसकूल म लईका के छुट्टी कराय हे,
कोरेना बिमारी ल महमारी बताय हे.
तोप के चलव नाक ल संगी हो,
किसम किसम के उपाय बताय हे.

सुनो डाटीकूचा म नई जाना हे,
घरी घरी साबुन से हाथ ल धोना हे.
जम्मो लोग जन ल बताना हे,
संगी हो मिल के बीमारी ल भगाना हे.

मेरा स्कूल

रचनाकार- मनोज कुमार साहू

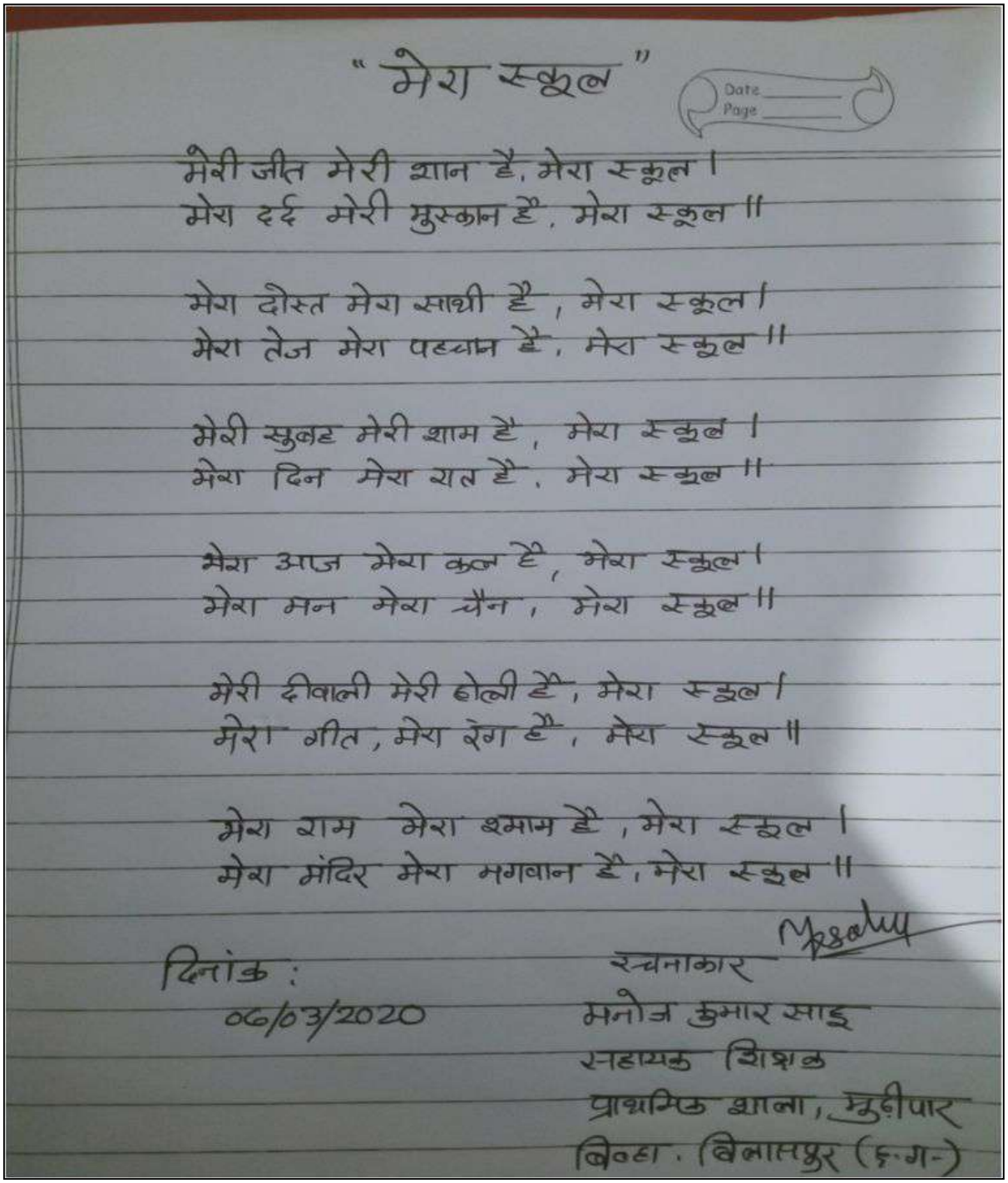

"मेरा स्कूल"

मेरी जीत मेरी शान है, मेरा स्कूल।
मेरा दर्द मेरी मुस्कान है, मेरा स्कूल॥

मेरा दोस्त मेरा साथी है, मेरा स्कूल।
मेरा तेज मेरा पहचान है, मेरा स्कूल॥

मेरी सुबह मेरी शाम है, मेरा स्कूल।
मेरा दिन मेरा रात है, मेरा स्कूल॥

मेरा आज मेरा कल है, मेरा स्कूल।
मेरा मन मेरा चैन, मेरा स्कूल॥

मेरी दीवाली मेरी होली है, मेरा स्कूल।
मेरा गीत, मेरा रंग है, मेरा स्कूल॥

मेरा राम मेरा श्याम है, मेरा स्कूल।
मेरा मंदिर मेरा भगवान है, मेरा स्कूल॥

दिनांक :
06/03/2020

रचनाकार
मनोज कुमार साहू
सहायक शिक्षक
प्राथमिक शाला, मुड़ीपार
विका. बिलासपुर (छ.ग.)

भारत माता करे पुकार

रचनाकार- पुष्पा "पुष्प"

संकट मे है मेरे प्राण
उठो धनुर्धर भरो हुंकार
अब उठा लो धनुष बाण
आज समय की यही पुकार
भारतमाता करे पुकार.

दे दो दुश्मन corona को फटकार
जाने ना पाए किसी की जान
Lockdown ही है रामबाण
तभी सुरक्षित सबका परिवार
भारतमाता करे पुकार

भारतमाता के है तुम पर उपकार
वायरस की ले लो तुम अब जान
कर लो तुम आज दीपदान
बारिश हो या पड़े फुहार
भारत माता करे पुकार

सर्दी खांसी हो या बुखार
डॉक्टर ही है अभी भगवान
चीन बना अब भी नादान
जीवन बचाने का करो उपचार
भारतमाता करे पुकार

तोता और बहेलियां

रचनाकार- वसुन्धरा कुर्रे

नदी किनारे एक पीपल का पेड़ था. उस पेड़ में तोता का एक घोंसला था उस घोसले में उसके छोटे-छोटे बच्चे थे. तोता अपने बच्चों के खाने -पीने की व्यवस्था के लिए इधर उधर जाता था. पास ही में एक खेत था.उस खेत में मक्का की फसल लगी हुइ था तोता रोज उस खेत में जाता और मक्का को आधा खाता और आधे को कुतर -कुतर कर गिरा देता और अपने बच्चों के लिए लाता, रोज तोता वैसा ही करता. एक दिन खेत का मालिक वहाँ आकर देखता है कि कौन उसके फसल को नुकसान पहुंचा रहा है..और खेत के फसल वह मालिक बहेलियां भी था जिसे शिकारी भी कहते हैं.

एक दिन वह बहेलिया खेत के पास आकर छिप जाता है और देखता है कि कौन उसके फसल को नुकसान पहुंचा रहा है तभी तोता आता है और मक्के की पेड़ पर बैठकर मक्के को कुतरना शुरू कर देता है यह सब बहेलिया देखता है

दूसरे दिन बहेलियां जंगल जाकर पेड़ के रस से बने गोंद लेकर आता है और सभी मक्के पर लगा देता है फिर वह खेत के पास में छिपकर देखता है.जैसे ही तोता आता है और

मक्के पर बैठता है उसका पैर उस गोंद पर चिपक जाता है तोता बेचारा बहुत फड़फड़ता है पर निकल नहीं पाता है उसे देख कर बहेलिया आता है और तोता को पकड़ लेता है तोता बेचारा बहुत विनती करता है कि मुझे छोड़ दो, मुझे छोड़ दो मेरे छोटे-छोटे बच्चे हैं. पर बहेलियां नहीं मानता. वह बोलता है कि मैं तुझे ले जाकर मार कर खाऊंगा तुमने मेरा पूरा फसल नुकसान किया है. मैं तुझे नहीं छोडूंगा. उसे पकड़ कर ले जाता है रास्ते में एक राहगीर पैदल जा रहा था उसे देखकर तोता बोलता है

ए डाहर चलईया भैया ग,
मौला बाघ धरे ले जात हे
रम चू चू, रम चू चू
नदी किनारे बसेर ग भाई
नान -नान गदेली
रम चू चू, रम चू चू

इस तरह से तोता बहुत सुंदर गाना गाता है. उसकी आवाज को सुनकर राहगीर, बहेलिया से उसे मांगता है कि इसे मुझे दे दो और इसके बदले रूपये ले लो,पर बहेलिया नहीं देता बोलता है मैं इसे घर ले जाकर मार कर खाऊगा इसने मेरी फसल को बहुत नुकसान पहुंचाया है. इस तरह वह आगे बढ़ जाता है आगे जाता है तो रास्ते पर एक साइकिल वाला देखता है तो तोता फिर से गाना गाता है.

ए साइकिल चलइया भैया ग
मौला बाघ धरे ले जात हे
रम चू चू, रम चू चू
नदी किनारे बसेर ग भाई
नान- नान गदेली
रम चू चू, रम चू चू

इस तरह से तोता की मधुर आवाज को सुनकर साइकिल वाला भी बहेलिया से उसे पाने की मांग करता है पर वह बहेलियां नहीं देता है और वही बोलता है. इस तरह वह आगे बढ़ जाता है अब गांव में तोता की मधुर आवाज की चर्चा गांव भर होने लगता है. और उस गांव में राजा रहता था राजा की 7 रानियां थी तोते वाली खबर राजा के घर तक पहुंच गई राजा की सबसे छोटी रानी उस तोते को पाने के लिए राजा से फरमाइश

करती है. राजा अपनी पत्नी को मना नहीं कर पाता और अपने सैनिक को भेजकर बहेलिया को लाने के लिए आदेश देता है. सैनिक जाकर बहेलिया को पकड़ कर लाता है.

फिर आगे राजा के आदेश पर बहेलिया तोता राजा को दे देता है. राजा उस तोते को अपनी छोटी रानी को लाकर दे देता है. छोटी रानी तोते से खूब प्रेम करता अच्छा-अच्छा खिलाती और उसे घर पर पिंजरे में रखती. तोता और रानी बहुत खुश थे.राजा की अन्य 6 रानीयां छोटी रानी और तोता से जलने लगी रानी को मारने के लिए वे रानियां कुछ ना कुछ करती रहती थीं, यह सब वह तोता देखता रहता और रानी को वह बता देता इस तरह से छोटी रानी बच जाती. एक दिन वे रानियाँ दूध में जहर डाल कर छोटी रानी को देता है तो वह तोता देख लेता है और उस गिलास के दूध को गिरा देता है इस तरह रानी की जान बचा जाती है अंत में तोते ने सब बात राजा को बता दी. तब राजा ने अपनी छः रानीयों को सजा के तौर पर राज पाठ और गांव से बाहर कर दिया. राजा ने तोते को, रानी की रक्षा करने के कारण उसे आजाद कर दिया तोता खुशी-खुशी अपने बच्चों के पास लौट गया उधर राजा रानी खुशी-खुशी रहने लगे.

बासन्ती रँग

रचनाकार-महेन्द्र देवांगन माटी

हुआ भोर अब देखो प्यारे, पूर्व दिशा में लाली छाई.
लगे चहकने पक्षी सारे, गौ माता भी रंभाई..

कमल ताल में खिले हुए हैं, फूलों ने ली अँगड़ाई.
मस्त गगन में भौंरा झूमे, तितली रानी भी आई..

सरसों फूले पीले-पीले, खेतों में अब लहराये.
कूक उठी है कोयल रानी, बासन्ती जब से आये..

है पलाश भी दहके देखो, आसमान में रँग लाई.
पढ़े प्रेम की पाती गोरी, आँचल अपनी लहराई..

दिखे प्रेम का भाव अनोखा, सुंदर चिकने गालों में
झूम रही है साँवल गोरी, गजरा डाले बालों में ..

बूझो पहेली

रचनाकार - योगेश्वरी साहू

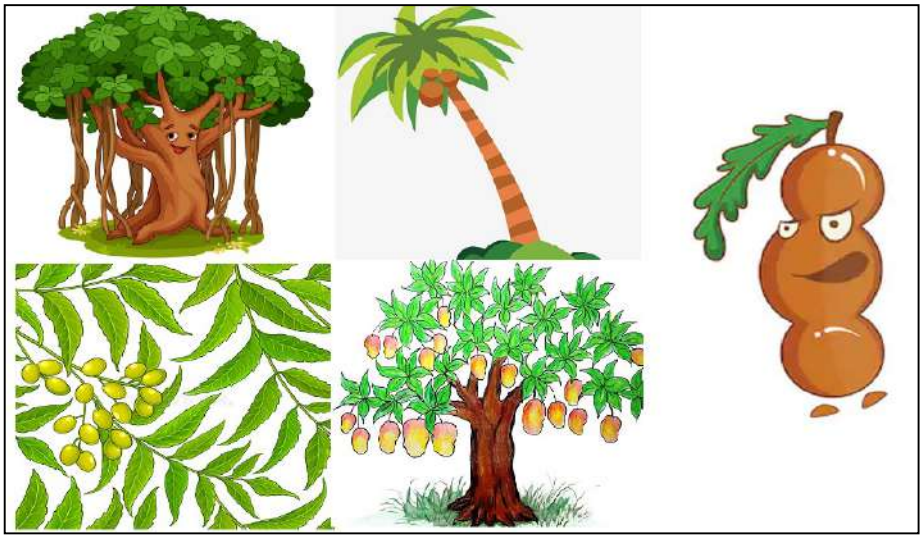

1. ताल किनारे मैं हूँ खड़ा
पेड़ हूँ मैं सबसे बड़ा
निकलें मुझसे ढेरों लट
नाम बताओ तुम झटपट.

2. पूजापाठ के काम मैं आता-
बच्चों बड़ो को मैं भाता
खट्टामीठा कुछ भी खाओ-
अब तुम मेरा नाम बताओ.

3. समुद्र किनारे का पेड़ हूँ
फल है बड़ा भारी
अंदर मीठा पानी होता
नाम बताओ ज्ञानी.

4. फल,छाल, पत्ती,टहनी
आते है कई काम
हूँ मैं इमारती लकड़ी
बताओ मेरा नाम.

5. मच्छर, मक्खी को मैं भगाता
कील, मुहाँसो को जड़ से मिटाता
कड़ुवा बड़ा ही लगता हूँ
सब रोगो का इलाज करता हूँ.

6. गोल हूँ, पर जलेबी नही
फल हूँ, पर सीधी नही
गर्मी के दिनों में आती हूँ
सबका मन ललचाती हूँ.

7. खट्टामीठा मेरा स्वाद-
सबका मन ललचाये
ऊँचे पेड़ में फलती हूँ
हाथ पहुँच न पाये.

8. गुच्छों में मैं फलता हूँ
रहता नहीं अकेला
हर बाड़ी में मिलता हूँ
नाम हैं मेरा.....

उत्तर--1.बरगद 2. आम 3. नारियल 4. बबूल 5.नीम 6. गंगाइमली 7. इमली 8.केला

बच्चे परीक्षा को लें एक त्योहार की तरह

रचनाकार- प्रियंका सिंह

जीवन है अनमोल फूलों और बहार की तरह.
और बच्चे हमारे नाजुक से फूल हैं जैसे मदार की तरह..
बच्चे परीक्षा को लें एक त्योहार की तरह

स्कूल का अस्तित्व बच्चों से है यह याद रहे स्कूल में उन्हें इतना प्यार और सम्मान मिले.
बच्चों को सोमवार भी लगे रविवार की तरह..
हम शिक्षक कर जाएं कुछ ऐसा जादू हो जैसे एक नवाचार की तरह.
और बच्चों को लगे स्कूल भी अपने घर द्वार की तरह..

बच्चे परीक्षा को लें एक त्योहार की तरह

हार जीत तो जीवन के दो पहलू हैं मत आंको अंको से उनको
जैसे वे हों किसी गुनहगार की तरह..
बच्चे परीक्षा में आए कम अंकों से नहीं, आपके विश्वास खोने से डरता है
अन्य से तुलना करना है उनपर अत्याचार की तरह.
बच्चे परीक्षा को लें एक त्योहार की तरह

बड़े होकर भी आप वही करते हो जो मन को लगता है अच्छा.
बच्चों पर ना लगाओ इतनी पाबंदी कि उन्हें घर भी लगे एक कारागार की तरह..
दुनिया तो बोलेगी बोलना काम है उनका आप उनका मनोबल बढ़ाएं,
ना करें व्यवहार संसार की तरह..
बच्चे परीक्षा को लें एक त्योहार की तरह

अभी तो बच्चे हैं क्या अभी ही बन जाएंगे इंजीनियर -डॉक्टर.
बच्चों से इतनी उम्मीदें रख क्यों बनाते हो आप उनकी जिंदगी एक लटकती तलवार की तरह..
ना थोपें उन पर अपनी इच्छा, उड़ने दें उन्हें खुले आसमान में.
हो सकता है वह कुछ ऐसा कर दिखाएं ,हो जैसे किसी चमकते स्टार की तरह..
बच्चे परीक्षा को लें एक त्योहार की तरह

सोशल मीडिया में वायरल हैं वे हीरोज जो बच्चों को परीक्षा में पहुंचाते हैं समय पर.
ऐसे समाचार नहीं होते रोज के समाचार की तरह..
एक जिम्मेदार नागरिक का फर्ज निभाएं भारत के कर्णधार की तरह.
मां बाप का प्यार बच्चों के लिए होता है शक्तिशाली हथियार की तरह
बच्चे परीक्षा को लें एक त्योहार की तरह

लौटा कर बचपन बना दो उनकी जिंदगी सुरीली ,जैसे हो गीत मल्हार की तरह.
समय है अभी भी संभल जाओ अनुरोध यही है पालनहारों से.
वे बच्चों को रखें अपने दोस्त- यार की तरह..
कहीं बच्चे उठा न लें कोई ऐसा कदम, पश्चाताप को भी बचे न कुछ कई बार की तरह
बच्चे परीक्षा को लें एक त्योहार की तरह

तारे हमारे

रचनाकार- सुशीला साहू "शीला"

छोटे-छोटे तारे कितने प्यारे तारे,
थाली में सजे हैं सुन्दर सितारे.

झूला झूलते हैं नभ में सारे,
कभी नहीं गिने जाते हैं तारे

जगमग जगमग दिये जैसे जलते,
हवा पानी सब रोज-रोज सहते.

अंधेरा होते सब निकल आते,
सूरज निकलते सब छिप जाते.

सारी रात ये गीत गुनगुनाते,
नहीं किसी से ये शरमाते.

चंदा हमारे प्यारे मामा कहलाते,
बादलों में रहकर नाच दिखाते.

चल पेड़ लगाबोन

रचनाकार- तुलस राम चंद्राकर

चल संगी पेड़ लगाबोन,
धरती ल सरग बनाबोन
पर्यावरण ल बचाये बर,
जुरमिल हाथ बटाबोन.
चल संगी पेड़ लगाबोन.....

किसम किसम के रुख राई,
अउ फुलवारी लगाबोन.
जेखर शीतल छांव म संगी,
बइठ के हम सूरताबोन.
धरती दाईं के कोरा ल,
हरियर हम बनाबोन.
चल संगी पेड़ लगाबोन.....

पेड़ लगे ले पानी ह गिरही,
तरिया नरवा भराही.
हरियर हरियर धरती दिखही,
ताजा हवा बोहाही.
पानी गिरहि रिमझिम रिमझिम,
अब्बड़ धान उगाबोन
चल संगी पेड़ लगाबोन.....

कारखाना ले धुआं निकलथे,
पेड़ ओला फरियाही.
वातावरण ल सुध करके,
बीमारी ल दूर भगाही.
पेड़ लगाके हरियाली लाबो,
मिलके खुशी मनाबोन
चल संगी पेड़ लगाबोन.....

झन काटव पेड़ पौधा ल,
एही भुईंया के सिंगार.
ऐखर जतन करव भईया,
जिनगी के अधार.
पेड़ लगाके पुन कमाके,
म नाव कमाबोन
चल संगी पेड़ लगाबोन.....

पर्यावरण ल बचाये बर,
जुरमिल हाथ बटाबोन.
चल संगी पेड़ लगाबोन.....

एक लोटा दूध

रचनाकार- शीला गुरुगोस्वामी

एक बार की बात है, एक गांव में ऐसे लोग रहते थे जो काम काज तो कुछ ना करते परंतु अधिक से अधिक पैसा और सुविधा चाहते थे. वे हमेशा भगवान से शिकायत करते कि आपने हमें कुछ नहीं दिया लेकिन दूसरों को बहुत सारी सुविधाएं दीं. भगवान उन्हें समझाते की मेहनत करो तो सारी सुविधाएं मिल जाएंगी. दूसरों को देखने से हमें कुछ भी हासिल नहीं होगा. लेकिन वे समझने को तैयार ही नहीं होते. कोई उन्हें कुछ काम कहता तो वह दूसरों पर टाल देते. अगर कोई उन्हें कुछ उपहार देने आता तो सब सामने हो जाते.

भगवान जी बोले, चलो एक काम करते हैं. मैं एक बड़ा बरतन तुम्हें देता हूं. आज रात सभी को इसमें एक - एक लोटा दूध डालना है और जब सब लोग ऐसा कर लेंगे तब तुम सब की मनोकामना पूरी हो जाएगी.

रात हुई. धीरे-धीरे करके सारे गांव वालों ने कहे अनुसार किया. सुबह हुई. भगवान जी बोले, चलो बरतन को देखते हैं उसमें तो बहुत सारा दूध इकट्ठा हो गया होगा. सबने देखा, बरतन में तो एक बूंद भी दूध नहीं था.

भगवान मुस्करा कर बोले, तुम लोग निकम्मे तो हो ही साथ में स्वार्थी, लालची भी हो. तुमने सोचा, सभी तो दूध डाल रहे हैं, क्यों ना मैं पानी डाल दूं. किसी को पता नहीं चलेगा. पर कहते हैं कि हम जैसा सोचते हैं वैसा ही दूसरे भी सोचते हैं सबके मन में यही विचार आ गया कि क्यों ना मैं पानी डाल दूं. इस प्रकार सब ने पानी डाला.

तुम लोगों ने दूसरे के बारे में नहीं सिर्फ अपने बारे में सोचा और अपने भाग्य को ही ठुकरा दिया. जो मेहनत करेगा वही उन्नति करेगा और जो सचआचरण करेगा वही आगे तक जाएगा अन्यथा दुख भोगता रहेगा.

गांव वालों को बात समझ में आ गई सभी मेहनत करने लगे और धीरे - धीरे सभी सुखी हो गए.

बिल्ली मौसी

रचनाकार- सुशीला साहू शीला

बिल्ली मौसी रोज आती,
नहीं किसी से ये डरती.
गुड़िया बोली बिल्ली मौसी,
दिखती हो शेरनी जैसी.

म्याऊँ -म्याऊँ कर आती हो,
सबको खुब सताती हो.
रोज खा जाती दूध मलाई,
कभी न हो पाती तेरी पिटाई.

मेरे घर दावत में आना,
दौड़ दौड़ कर चूहे खाना.
बिल्ली बोली म्याऊँ -म्याऊँ
गुड़िया रानी मैं रोज आऊँ.

तुम मुझे कुछ न कहना,
मुझे अब तेरे साथ है रहना.
हम दोनों साथ साथ रहेंगे,
नाच नाच कर खेल खेलेंगे.

आई बसंत

रचनाकार- वसुन्धरा कुर्रे

आई बसंत लेकर उमंग.
आई बसंत लेकर उमंग.
चारों ओर छाए बसंत के रंग.
रंग-बिरंगे दिखें उपवन.
जैसे सतरंगी छटा छाई.
पेड़ों के कोमल पंखुड़ियां.
और टेसू की नारंगी फूल.
उस पर भँवरे की मंडराई धुन.
आम के बौर की महकी खुशबू.
बसंत की आई बहार.
पपीहे की प्यार की तड़प चारो दिशा गुंजन गान करें.
सब के मन में छाया प्रकृति प्रेम.
बसंत की आई बहार.
आई बसंत लेके उमंग.
आई बसंत लेके उमंग.

राम का नया स्कूल

रचनाकार- नीरज त्यागी

राम नवीं कक्षा का विद्यार्थी है. वह हमेशा से पढ़ने लिखने में बहुत ही होशियार रहा है. आठवीं कक्षा तक उसकी उपस्थिति हमेशा पूरी रहती थी.

इससे उसकी टीचर भी उससे बहुत खुश रहती थी. पढ़ाई में अव्वल रहने वाला राम हमेशा बहुत अच्छे नंबरों से पास होता था. इस साल नौवीं कक्षा में उसके माता-पिता ने उसका एडमिशन दूसरे स्कूल में करा दिया क्योंकि उसका पिछला स्कूल आठवीं कक्षा तक ही था.

नवीं कक्षा में एक नया स्कूल,एक नया माहौल था, पिछला कुछ बदल गया था. राम को भी अपनी नई किताबों के साथ नए स्कूल में जाना बहुत ही अच्छा लग रहा था. राम के माँ-बाप भी बहुत खुश थे. राम ने एक बार फिर अपनी पढ़ाई पूरे ध्यान से करनी शुरू कर दी.

नये स्कूल में राम नए-नए मित्र बने. टीचर भी सारे नए थे. लगभग दो महीने की कक्षा के बाद राम का स्कूल जाना कुछ कम सा हो गया. निन्यानबे प्रतिशत से ऊपर हाजिरी रखने वाला राम धीरे-धीरे स्कूल जाने से कतराने लगा. राम के माता- पिता ने शुरू-शुरू में इस बात पर ध्यान नहीं दिया, लेकिन धीरे-धीरे उन्हें लगने लगा कि पता नहीं क्यों राम स्कूल जाने से बचने लगा है.

राम पढ़ने लिखने में तो बहुत ही उत्तम बच्चा था किंतु अपने मन की बातों को अपने माँ-बाप के साथ शेयर नहीं कर पाता था. ना जाने राम के दिमाग में क्या चल रहा था.
आखिर एक महीने बाद राम के अभिभावक-शिक्षक बैठक का समय आ गया. राम के पिता राम की क्लास टीचर से मिलने पहुँचे. तब क्लास टीचर ने राम के पिता को बताया कि राम कक्षा से बहुत ज्यादा गायब रहने लगा है. स्कूल में आता है तो खोया-खोया सा रहता है. आप उससे जानने की कोशिश करें कि वह पढ़ाई में इतना क्यों पिछड़ता जा रहा है.
राम के पिता भारी मन के साथ क्लास टीचर के पास से उठे और घर आ गए. घर जाकर बड़ी ही समझदारी से राम के पिता ने राम से पूछा- बेटा क्या हुआ,क्या तुम्हारा मन पढ़ाई में नहीं लग रहा है. राम कुछ देर तो चुप रहा लेकिन उसकी आँखों में आँसू आ गए. उन्होंने पूछा- बेटा बताओ मुझे, क्या बात है. क्या किसी ने कुछ कहा है.
तब राम ने अपने पिता को बहुत डरते हुए बताया- पापा इस स्कूल में सब बड़े-बड़े घरों के बच्चे आते हैं. कुछ अपनी गाड़ियों से आते हैं और कुछ अपनी अपनीबाइक से आते हैं. लेकिन मैं अक्सर या तो पैदल जाता हूँ या आप मुझे छोड़ देते हैं.
यह सब देख कर मुझे कक्षा के सभी विद्यार्थी गरीब-गरीब कहकर चिढ़ाते हैं. राम के पिता को समझते कुछ भी देर न लगी कि राम अपनी गरीबी को लेकर परेशान है. तब राम के पिता ने उसे समझाया- बेटा, आगे बढ़ने के लिए हर व्यक्ति को कहीं ना कहीं से शुरुआत करनी पड़ती है.
तुम अपने आप को इस तरीके से तैयार करो कि इन छोटी-छोटी बातों से तुम्हें कभी परेशान ना होना पड़े. एक दिन ऐसा आए कि तुम इन सब बच्चों से आगे निकलो और अपनी कक्षा में नंबर एक पर रहकर सबसे ऊपर खड़े दिखाई दो.
राम के मन की परेशानी काफी हद तक दूर हो गई और उसने पूरी लगन से अपनी पढ़ाई शुरू कर दी. अपनी कक्षा में अपनी मेहनत के साथ राम ने टॉप किया और बड़ी-बड़ी गाड़ियों में आने वाले बच्चों के सामने खड़े होकर टॉपर की ट्रॉफी लेते हुए अपने लिए सभी बच्चों को अपने लिए ताली बजाने के लिए मजबूर कर दिया.
राम के पिता की छाती गर्व से चौड़ी हो गई और उन्होंने राम को खुशी से गले लगा लिया. राम अपने पिता के सही मार्गदर्शन से एक बार फिर कक्षा में सबसे आगे बढ़

गया. अब उसकी कक्षा के सारे साथी उसके पास आकर बातें करते थे,उससे दोस्ती चाहने लगे, उससे पढ़ाई करने के लिए पूछने लगे.

अपनी पढ़ाई की बदौलत अब राम दूसरे बच्चों के लिए एक उदाहरण बन चुका था. अब सभी बच्चों के माता पिता अपने बच्चों को राम जैसा बनने के लिए कहते है.

बलिदान करना सीखें

रचनाकार- भोलाराम सिन्हा गुरुजी

वीरों, देश की माटी के लिए अभिमान करना सीखें.
इस पावन धरती के लिए बलिदान करना सीखें.

ना जाने इस देश के लिए कितनों ने दी है कुर्बानी
उन वीर शहीदों का अब तो सम्मान करना सीखे.

अब तक अपने लिए जिये तो क्या जिये यारों
दीन दुखियों के हित चिंतक बनकर अवदान करना सीखें.

हम भारत के बेटे हैं, भू के कण-कण में बसते है
देश की खातिर सर्वस्व अपना कुर्बान करना सीखें.

शिक्षा जन जागरण गीत

रचनाकार- तुलस राम चंद्राकर

पढ़ा देवा तुमन बेटा बेटी ल, एहीम हवय भलाई.
ज्ञान के दिया जलाही, दाई ददा के नाम जगाही.
स्कूल म आंकें पढही लीखही त, शिक्षा के अलख जगाही .
गाँव गली अउ मोहल्ला म, अपन नाम ल कमाही.
ए स्कूल ल अपन जानव, झन मानव सरकारी
ज्ञान के दिया जलाही.....

शासन ह डरेस पुस्तक ल देथे,
दाईं ददा ल नई हे बोझ.
सरकार के योजना मध्यान भोजन,
खाये ल मीलथे रोज.

नवमी ल पढही नोनी,त साइकील ह घलो मीलही
ज्ञान के दिया जलाही.....

आज ले परन करौ ग भइया,
पढ़े ल स्कूल भेजबोन .
का पढ़ाथे , कैसे पढ़थे,
जुरमिल के सब देखबोन.
पढ़ही लीखही त भईया , देश म नाम कमाही
ज्ञान के दिया जलाही .....

सत्कर्म तुम्हारा

रचनाकार- रणजीत कुमार पाटनवार

मंदिर अपने, मस्जिद अपने, अपना ये गुरुद्वारा
आओ हम सब मिलकर बोले, हिंदुस्तान हमारा
धरती बोले, अंबर बोले, बोले चांद सितारा
आज नहीं तो कल होगा, ये संसार तुम्हारा
सपनों से ऊपर उठकर, देख जीवन की धारा
नैय्या तेरी डूब न जाए, पहुंचा उसे किनारा
जीवन में तुझे अकेले चलना, कोई नहीं सहारा
कोई साथ न देगा तेरा, देख जग का नजारा
तेरी राह में कांटे होंगे, पार उसे करना है यारा
सत्कर्म को देख तेरा, ईश करेंगे तुझे इशारा
जीवन में और आगे बढ़, मैं हूं तेरा सहारा
एक दिन सांस थम जाएगा, जग को होगा गंवारा
सब लोग मिलकर बोलेंगे, जीवन धन्य तुम्हारा

पानी कब, कैसे और कितना पियें

रचनाकार- शशि पाठक

प्यारे बच्चो,कैसे हैं आप? आशा है आप सभी सकुशल होंगे. बच्चो, क्या आप जानते हैं कि मानव शरीर का सत्तर प्रतिशत हिस्सा पानी से बना होता है,इसीलिए गर्मियों में डिहाइड्रेशन से बचने के लिए समय - समय पर पानी पीने की आवश्यकता होती है. पानी पीने से शरीर के विषैले पदार्थ बाहर निकल जाते हैं और हमारे शरीर का संतुलन बना रहता है. आइये जानते हैं कि कब, कैसे और कितना पानी पीना लाभदायक होगा.

कब पियें

1. सुबह उठते ही- खाली पेट सुबह एक से दो गिलासपानी पीना चाहिए. इससे पेट व त्वचा दोनों स्वस्थ्य रहते हैं.

2. खाने से आधे घण्टे पहले और एक घण्टे बाद- खाने से आधे घण्टे पहले पानी पीने से भूख कम लगती है और आंतें ठीक से काम करती हैं. एक घंटे बाद पीने से पाचन सही तरीके से होता है.

3 थकान महसूस होने पर- हमारा दिमाग पचहत्तर प्रतिशत पानी से भरा होता है. यदि आप थकान लगने पर पानी पियेंगे तो आपका दिमाग ठीक से काम करेगा और काम में मन लगेगा.

4. नहाने से पहले - नहाने से पहले पानी पीने से ब्लड प्रेशर नियंत्रण में रहता है.

5. व्यायाम के पहले व बाद- व्यायाम के पहले और बाद में पानी पीने से मांसपेशियों को एनर्जी मिलती है साथ ही थकान मिटती है.

कैसे पियें

1. घूँट घूँट कर पियें - पानी हमेशा घूँट - घूँट कर पियें ताकि शरीर के तापमान से अनुकूलन हो सके.

2. गर्दन ऊपर करके या खड़े होकर ना पियें - पानी हमेशा बैठकर व होठों से लगाकर पियें. ऐसे न पीने पर अपच, एसिडिटी, घुटने में दर्द आदि परेशानी होती है.

कितना पिएं

1. एक साथ ज्यादा ना पिएं - एक साथ ज्यादा पानी पीने से किडनी व हृदय पर विपरीत प्रभाव पड़ता है. हर एक घंटे में थोड़ा - थोड़ा पानी पीना सर्वोत्तम है.

2. एक स्वस्थ व्यक्ति को कम से कम दो से तीन लीटर अर्थात आठ से दस गिलास पानी पीना चाहिए.

सावधानी

गरमी के दिनों में अधिक पानी की आवश्यकता होती है, लेकिन फ्रीज़ व गंदे पानी स्वस्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकते हैं.

हमेशा उबला हुआ, साफ बरतन या मिट्टी के घड़े में रखा हुआ पानी पियें.

परीक्षा

रचनाकार- गोविंद पटेल

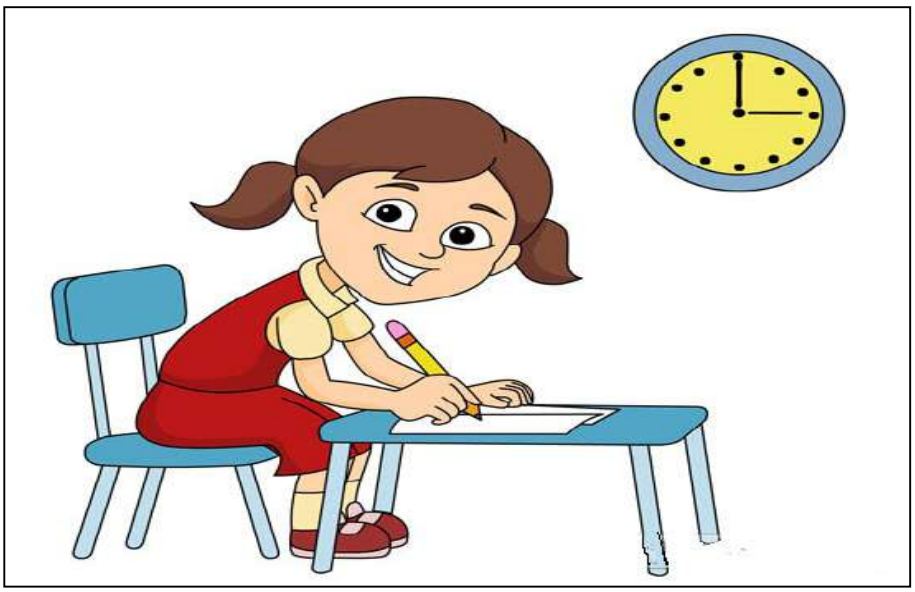

आओ मनाएँ परीक्षा उत्सव,
चुनौतियों को स्वीकार करें,
देकर एक एक प्रश्न का उत्तर,
एक नया सोपान चढ़े.

पढ़ाई से जी चुराने वाले,
आलसी बच्चे कहलाते हैं,
असफल होकर ऐसे बच्चे,
बाद में फिर पछताते हैं.

मेहनत करते रहने वाले,
परीक्षा से नहीं घबराते हैं,
अच्छे परिणाम परीक्षा में पाकर,
सबकी शाबाशी पाते हैं.

आओ हम पढ़ने का जश्न मनाएं

रचनाकार- लुकेश्वर सिंह

हर बच्चे को उसकी कक्षानूरुप पढ़ाएं .
उन्हें लिखित भाषा डिकोड कराएं.
आओ हम पढ़ने का जश्न मनाएं

बच्चों को मजेदार कहानी सुनाएं,पढ़ना है मजेदार उन्हें बताएं .
माता-पिता के मन में बच्चों की पढ़ाई के प्रति रुचि बढ़ाएं.
आओ हम पढ़ने का जश्न मनाएं

पढ़कर जीवन को बेहतर बनाएं.
पढाई है एक "पेंटिंग" ,जो जीवन को सुंदर बनाएं.
आओ हम पढ़ने का जश्न मनाएं

पढ़ेगा इंडिया बढ़ेगा इंडिया सबको बताएं .
सर्व शिक्षा अभियान में भागीदारी निभाएं.
आओ हम पढ़ने का जश्न मनाएं

पढ़कर अवसरों के दरवाजे खुलवाएं .
सभी के जीवन को कहानी सी मजेदार बनाएं.
आओ हम पढ़ने का जश्न मनाएं

पढ़ किताब चीजों को बेहतर जानें और बेहतर बनाएं.
जीवन के उलझनों को सुलझाएं.
आओ हम पढ़ने का जश्न मनाएं

"पठन अभियान" में सबको जोड़ें और जुड़वाएं.
समाज में नाम और इज्जत कमाएं .
आओ हम पढ़ने का जश्न मनाएं

पुस्तकों को अपना मित्र बनाएं.
रीडिंग कैंपेन का हिस्सा बन भारतीय होने का फर्ज निभाएं.
आओ हम पढ़ने का जश्न मनाएं

पुस्तकें होती हैं सबकी अच्छी मित्र ,पुस्तकों को अपना मित्र बनाएं .
रीडिंग कैंपेन में भाग ले,भारत को साक्षर बनाएं .
आओ हम पढ़ने का जश्न मनाएं

जीवन है कहानियों की लंबी सीरीज, उन कहानियों को पढ़ना सिखाएं.
पढ़कर ही समझेंगे जीवन को बेहतर, सबको यह खुल कर बताएं.
आओ हम पढ़ने का जश्न मनाएं

पढ़ाई का महत्व

रचनाकार- पुनाराम वर्मा

पढ़ाई पर ध्यान दें
बहाना न बना.
पढ़ाई से मिलता है
आनन्द घना.घना-
ये तो ऊंची कमाई है
सोर्स आफ इन्कम.
पढ़ाई तो खजाना है
होता नही कभी गम..
जीवन निर्वाह चलता इससे
चैन मिलता है.
सब दुःख दूर होते
भाग्य खिलता है.
धक्के खाना खत्म होते
आईना है अंधों का.
हमे पवित्र बनाती है

ताकत है कंधों का.
दैवी गुण इसी से आते
ज्ञान.योग तलवार मिले-
दुनिया से वैराग्य हो जाते
सारे जीवन का सार मिले..
पढ़ाई ही पूज्यनीय बनाते
मिलते बड़ी.बड़ी जागीर-
काम चिता से उठाते
हरते मन के सारे पीर.
पढ़ाई तो अमृत है
निकाल देती बीमारियां.
भिखारी से महाराजा बनाते
कराते नवयुगी तैयारियां..
बुद्धि को स्वच्छ बनाते
बनते सम्पूर्ण निर्विकारी.
पारा खुशी का चढ़ जाता
पा लेते वैभव सारी..
संगदोष से दूर रखते
हंसबुद्धि बना जाते.
पढ़ाई तो शुद्ध अन्न है
सभी वाइरस को खा जाते..
योग को पक्का कराते
बनाते अवस्था कर्मातीत.
सतोप्रधान बन हमारी
पारसबुद्धि करते चित.
आफतों से मुक्त करते
बनते जीवन सुखदाई.
स्वर्ग की बादशाही मिलती

होती कमियों की भरपाई.
नमन योग्य बनाती हमको
अतीन्द्रिय सुख मिलता है.
मन मजबूत हो जाता फिर
कांटों में सुमन खिलता है.
कर्मेन्द्रियां नियंत्रित होती
दृष्टि दिव्य बन जाते.
नशा कायम रहते प्रभु का
पापों की ओर न मन जाते.
शनि से वृहस्पति दशा होती
रहस्य सारे खुल जाते.
जन्मपत्री अच्छी हो जाती
यदि ईश्वरीय स्कूल जाते.
ऊबासी, झुटके से मुक्त करते
शुद्ध कर्म सिखलाती है.
विकर्मो से हमे बचाकर
स्वर्गीय राह दिखलाती है.
स्वर्गीय राह दिखलाती है.
सब पढ़े,सब आगे बढ़े
नये.नये कीर्तिमान गढ़े-
हम भी योगदान देकर
सफलताओं के शिखर चढ़े

कोरोना वाइरस

रचनाकार- प्रिया देवांगन प्रियू

जगह जगह होवत हे कोरोना के चरचा.
वायरस फैलत हे कहिके बाँटत हे परचा.
टीवी हो चाहे मोबाइल हो,
दिनभर कोरोना वायरस ला दिखात हे.
कइसे बचना हे कहिके तरीका सिखात हे.
विदेश में फैले कोरोना ह अब, हमर देश म आवत हे.
विदेशी मन आ आ के, बीमारी फैलावत हे.
मुहूं बांध के रेंगत आदमी ह, अब नई चिन्हात हे.
विदेशी मन आ आ के, कोरोना फैलात हे.
रायपुर में आगे कोरोना कहिके, आदमी मन डर्रात हे.
कोरोना से बचे के तरीका ल, टीवी में बतात हे.
हाथ मिलाय ला छोडके, नमस्ते करे ल सीखात हे.
कोनो खाँसत आदमी त, डॉक्टर ल दिखात हे.

मुझको दिल्ली जाना है

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर सरल

एक बहुत सयानी बिल्ली.
रेल से घूमने निकली दिल्ली.
स्टेशन पहुंचकर बोली म्याऊँ.
सोची हूँ-मैं दिल्ली जाऊँ.
वहां चूहों का जमघट है.
सिस्टम में पूरा खट- पट है.
फुरसत नहीं है, खाने से.
लड़ने और लड़ाने से.
उनको सबक सिखाना है.
मुझको दिल्ली जाना है.

चिड़िया की सीख

रचनाकार- संगीता देशमुख

एक दिन सुबह- सुबह मैंने अपने घर के आंगन में लगे तारों पर एक चिड़िया को अपना घोंसला बनाते हुए देखा. मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि रातभर में उस नन्ही चिड़िया ने कैसे इतना बड़ा घोंसला बना लिया? बड़े कौतूहल वश मैं उस चिड़िया को देखने बैठ गई. मैंने देखा कि दो नन्हीं चिड़ियाँ लगातार दूर-दूर से उठा कर तिनके, धागे, रुई जैसी हल्की चीजें ला रही थी और बड़ी सफाई से उन्हें घोसले में फंसा रही थीं. इस काम में उन्हें बड़ी मेहनत लग रही थी. पर वे बिना थके काम में लगी रहीं. इस बीच कई बार घोंसले के हिस्से गिर भी रहे थे पर, वे निराश नहीं हुईं.वे फिर से उड़कर जातीं और सामान ले आतीं. उनका धैर्य, लगन और दृढ़ निश्चय देखकर उस दिन मैंने उन्हें अपना गुरु मान लिया, जिन्होंने मुझे सीख दी कि मन में दृढ़ निश्चय हो, कुछ पाने या करने की लगन हो, तो कोई मुश्किल बड़ी नहीं होती, कोई राह कठिन नहीं होती और सचमुच, दिनभर में उन्होंने अपना घोंसला बना ही लिया.

मेरा घोड़ा

रचनाकार- प्रभु दयाल श्रीवास्तव

मेरा घोड़ा
अब हवा से
बात नहीं करता
कहता है जब
हवा बोलती है
तो उसके मुंह से
दुर्गन्ध आती है.

बाल कविता

रचनाकार- सुशीला साहू शीला

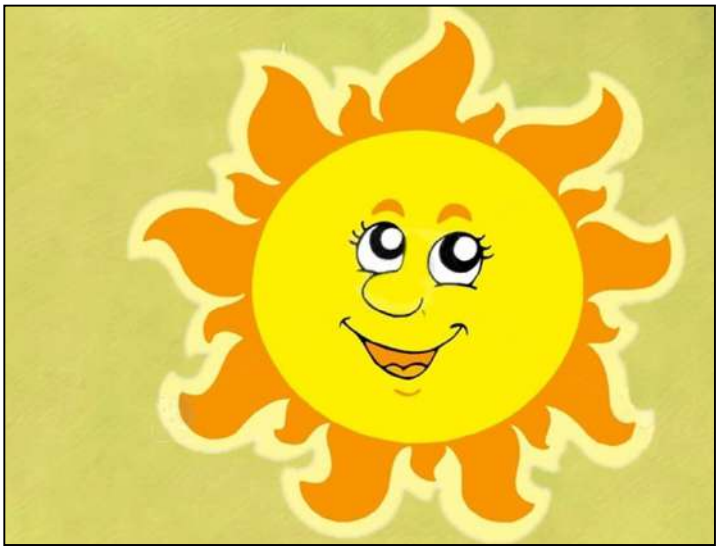

भोर हुई सूरज जब आया
पक्षी गाए गीत.
सुबह हमें जगाने के लिए
मुर्गी बाँगे प्रीत.
हम बच्चे भी उठ कर पहले
प्रभु का ले नाम.
मातपिता को वंदन करते-
चले विद्यालय धाम.
लोग सभी कहते हैं हमसे
बच्चों सुज्ञान बनो.
मत घबराओ बाधाओं से
लक्ष्य अपना चुनो.

लॉकडाउन में मेरा घर

रचनाकार- रीता मंडल

ख़ामोश हैं गली-शहर, सुनसान रातें,
मेरा घर कर रहा मुझसे हज़ार बातें.
मिलना नहीं किसी से तो न मिलेंगे,
मेरा घर कर रहा मुझसे शानदार बातें.
ज़िंदगी के मायने समझा दिए वक़्त ने,
मेरा घर कर रहा मुझसे वज़नदार बातें.
मुझे वक़्त नहीं है कि अकेली हो जाऊँ,
मेरा घर कर रहा मुझसे लगातार बातें.
रुक नहीं रही हँसी, आँखों से आँसू,
मेरा घर कर रहा मुझसे मज़ेदार बातें.
मेरा पूरा ख़्याल रख रहा है मेरा घर,
मेरा घर कर रहा मुझसे यादगार बातें.

संडे की पाठशाला - एक अभिनव शिक्षण पहल

रचनाकार- हेमन्त खुटे

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नवाचार शिक्षा पहल का महत्वपूर्ण योगदान है. शिक्षा पाठ्यक्रम में सुगमता, बोधगम्य और गुणवत्तायुक्त शिक्षा के लिए शिक्षक ही पहल कर एक अनुकरणीय उदाहरण बनते हैं. छत्तीसगढ़ राज्य में नवाचार को लेकर अभिनव पहल की शुरुआत हो चुकी है और अधिकांश शिक्षक अपने-अपने स्कूलों में नवीन गतिविधियों का संचालन कर बच्चों को नवाचार शिक्षा के माध्यम से सरल तरीके से समझाने का प्रयास कर रहे हैं तथा पाठ्यक्रम को पूरी तरह से मनोरंजक व रोचक बनाने में लगे हुए है ताकि बच्चा खेल-खेल में सहजता से शिक्षा ग्रहण कर सके.

इसी क्रम में महासमुंद जिले के अंतर्गत पिथौरा ब्लाक में संचालित संडे की पाठशाला नवाचार गतिविधियों पर आधारित होने के कारण हमेशा सुर्खियों में रही है.

शासकीय मिडिल स्कूल कसहीबाहारा के शिक्षक हेमन्त खुटे विगत 2014 से अवकाश के दिन यानी रविवार को सह संज्ञानात्मक गतिविधियों पर आधारित बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु संडे की पाठशाला का नियमित संचालन कर रहे है. इस नवाचार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बच्चों की रचनात्मक एवं सृजनात्मक क्षमता का विकास करना है. उन्होंने सह संज्ञानात्मक गतिविधियों को लेकर नित नूतन प्रयोग किए हैं जिसका प्रभाव स्पष्ट

रूप से विद्यार्थियों पर पड़ा है और वे प्रेरित होकर कुछ नया करने की मुहिम की ओर अग्रसर हो रहे हैं. इस नवाचार पहल में आंगनवाड़ी से लेकर हाई स्कूल तक के विद्यार्थी सम्मिलित हो रहे हैं. रचनात्मक, सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा बौद्धिक, मानसिक एवं शारीरिक विकास के लिए यह अभियान सार्थक साबित हो रही है. पाक्षिक दीवार पत्रिका, चित्रकला, आर्ट एंड क्राफ्ट, शैक्षणिक भ्रमण, रूबरू कार्यक्रम, साहित्य सुरभि, आनंद उत्सव, रिंग चिंगी कार्यक्रम, छत्तीसगढ़ खेल गढ़िया एवं तनाव मुक्त जीवन शैली के लिए योगाभ्यास को शामिल किया गया है. संडे की पाठशाला में ए टू जेड कलेक्शन के तहत मुख्य रूप से 100 प्रकार की गतिविधियों का समावेश किया गया है.

संडे की पाठशाला की विशेषताएं

1 बच्चों की प्रतिभा को तराशना.

2 बाल मनोविज्ञान के अनुकूल रोचक कार्यक्रमों को बढ़ावा.

3 बच्चों को बस्ते की बोझ से मुक्त करने का प्रयास.

4 गीत- गायन एवं क्विज कंपीटिशन के माध्यम से विषय वस्तु को जोड़ना.

5 तनाव मुक्त जीवन शैली विकसित करने के लिए खेल गढ़िया के अंतर्गत शतरंज खेल का समावेश एवं प्रशिक्षण की नि:शुल्क व्यवस्था.

6 कार्यक्रम के माध्यम से बच्चों में सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करना तथा सामुदायिक सहभागिता के आधार पर कार्यक्रम का संयोजन.

7 अवकाश के दिनों का बेहतर उपयोग करते हुए विद्यार्थियों से संवाद स्थापित करना.

8 समग्र शिक्षा विकास के लिए ए –टू- जेड कलेक्शन के तहत विविध गतिविधियां.

9 सामुदायिक सहभागिता से आमंत्रित अतिथियों द्वारा सभी बच्चों के लिए उपहार एवं प्रमाण पत्र की व्यवस्था.

10अभिव्यक्ति कौशल हेतु कहानी वाचन.

कार्टून हमें पसंद

कार्टून हम बच्चों को,
आते बहुत पसंद.
इसे शौक से सभी देखते ,
पढ़ना करते बंद.

छोटा भीम,
मोटू- पतलू ,
अच्छे हमें हैं लगते.
रिमोट अगर मिल जाए तो,
मम्मी की भी न सुनते.

डोरेमान व निंजा हथौड़ी,
जब टीवी पर आए.
हवा में डोरेमान का उड़ना,
हमको बहुत है भाए.

कार्टून फिल्में जब चलती हैं,
लगती भूख न प्यास.
कार्टून देख मन होता है खुश,
नींद न आती पास.

पढ़ने का तब मन न करता,
कार्टून जब - जब आएँ.
पर मम्मी का डर भी लगता ,
कहीं न वो चिल्लाएँ.

पापाज्यों ही घर पर आते,
हम पढ़ने लग जाते.
देख हमें खुश होते जब वो,
मन में हम मुस्काते.

प्रतीक्षा

रचनाकार- यशवंत कुमार चौधरी

प्रतीक्षा ! धरा को रवि किरण की,
माता को स्नेही संतान की,
आसमान को परिंदों की,
स्कूल को विद्यार्थियों की है.

प्रतीक्षा ! उपवन को सुमन की,
सुमन को नयन की,
प्रसून को पवन की,
नयन को स्वप्न की है.

प्रतीक्षा ! मृतप्राय आशाओं को नवजीवन की,
सुदूर फैले मरूस्थल को जलकण की,
गहन तिमिर को प्रदीप्त चन्द्रकिरण की,
पिंजरबंद विहग को उन्मुक्त गगन की है.

प्रतीक्षा ! अंतर्मन को शांत रखने की,
अभिव्यक्ति को सशक्त बनाने की,
संकल्प को सिद्ध करने की,
जीवन लक्ष्य तक पहुँचने की हैं.

प्रतीक्षा ! श्रद्धा - संबल का विस्तार,
सृजन सुख का आधार,
विपत्ति में मुस्कान एक प्रहार,
जीवन अभिलाषाओं का सीमाहीन संसार है.

प्रतीक्षा ! निज साहस- विश्वास के जागरण का,
जीवन के नैतिक मूल्य विकास का,
इस विकल्पहीन पल से संघर्ष का,
नित्य नवीन विकल्पों की तलाश की है.

प्रतीक्षा ! एक नई आस – गहरी श्वास का,
मनुज- मनुज प्रेम आराध्य का,
सतत कर्मशीलसाधना का,
व्याकूल मन को शांत करने की है

कोरोना के कहर

रचनाकार- महेन्द्र देवांगन माटी

वाह रे कोरोना - सब जगा होगे हे रोना.

आज देश विदेश सबो जगा एक्केच बात के चरचा हे. वो हरे कोरोना वायरस के. कोरोना वायरस के कहर ह चीन से निकल के दुनिया के 122 देश में फैल गेहे. माने जाथे के येहा अब तक के सबले बड़े कहर बरपाने वाला वायरस हरे. एकर चपेट में आ के लगभग 5000 ले जादा आदमी मन अपन जान गँवा चुके हे. ये बहुत बड़े चिंतनीय बात हरे. विश्व स्वास्थ्य संगठन (W H O) ह येला महामारी घोषित कर चुके हे. आदमी मन ल सावधानी बरते के निर्देश बार - बार सरकार ह देवत हे.

कोरोना वायरस का हरे -- कोरोना वायरस ह एक अइसे सूक्ष्म वायरस हरे जेहा आदमी के शरीर में पहुंच के बहुत जल्दी अपन प्रभाव देखाथे. सबले पहिली येहा चीन के वुहान नगर से शुरू होइस अउ दुनिया भर में तेजी से फैल गेहे.

एकर अभी तक कोनों पक्का इलाज नइ निकले हे. वैज्ञानिक मन एकर बारे में बहुत शोध करत हे. ये वायरस ल इबोला, सार्स, अउ स्वाइन फ्लू जइसे वायरस ले कोरोना ल सबले जादा खतरनाक वायरस माने जावत हे.

बीमारी के लक्षण-- कोरोना वायरस के लक्षण सर्दी, खाँसी, बुखार, गले में खराश, साँस ले में तकलीफ इही एकर लक्षण हरे. ये बीमारी ह हवा के माध्यम से एक दूसर में बहुत जल्दी फैल जथे. एकर से बचे बर सावधानी बहुत जरूरी हे. सर्दी खाँसी बुखार आय ले तुरंत डाक्टर के तीर इलाज करवाना चाहिए.

कोरोना वायरस ले बचे के उपाय--

(1) हाथ, गोड़, मुँहू ल अच्छा से साबुन में धोना चाहिए.

(2) खाँसी या छींके के बेरा अपन मुँहू में रुमाल रखना चाहिए.

(3) सर्दी खाँसी बुखार आय ले तुरंत डाक्टर कर इलाज कराना चाहिए.

(4) भीड़ भाड़ जगा में नइ जाना चाहिए.

(5) एक दूसर से हाथ मिलाय ले बचना चाहिए. येकर बदला नमस्ते करके अभिवादन करना चाहिए.

(6) जगा - जगा थूकना नइ चाहिए.

(7) अपन मुँहू में रुमाल या कपड़ा बाँध के चलना चाहिए.

ये सब सावधानी सबझन ल बरतना चाहिए.

सावधानी ह ही एकर बचाव के उपाय हरे. आदमी ल जतेक जादा हो सके सावधानी बरतना चाहिए.

हमर देश में जादा डरे के बात नइहे. तभो ले अपन तरफ से सावधानी बरतना जरुरी हे.

तब कतको आय कोरोना - नइ परे हमला रोना.

माँ

रचनाकार- भानुप्रताप कुंजाम 'अंशु'

ताने सबकी सहती माँ
फिर भी कुछ न कहती माँ
हमें भरपेट खिलाती है
भूखी कभी सो जाती है
कठोर संघर्ष है जीवन में
बैर नहीं फिर भी मन में
उदास कभी न रहती माँ
निर्मल गंगा बहती माँ
मेरे जीवन की मोती माँ
रूप भगवान की होती माँ
गोद स्वर्ग का एहसास है
खुशनसीब है माँ जिसके पास है

फूल

रचनाकार- टेकराम ध्रुव 'दिनेश'

रंग- बिरंगी फूल बाग की
शोभा खूब बढ़ाती है.
अपनी खुशबू से सारे,
गुलशन को महकाती है.

रंग -बिरंगी तितली जब,
इनके ऊपर मंडराती है.
फूलों की सुंदरता में,
चार चांद लग जाती है.

रंग -बिरंगी फूलों की,
खुशबू सबको भाती है.
प्यारी- प्यारी तितली रानी,
हमसे ये कह जाती है.

फूलों से सुंदरता लेकर,
घर - आंगन को सजाएं.
खुशबू लेकर सारे जग को,
महर- महर महकाएं.

हाय हाय रे बदरा

रचनाकार-डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"

परिसान होगे किसान, करा ह पोठ गिरथे.
तिवरा रहेर के खेती ह, पानी म सरथे.
घाम के महीना म, रदरद ले पानी गिराय.
हाय हाय रे बदरा, तय घुमड़ घुमड़ आय.

बिन मउसम के पानी, तय कइसे गिरे.
खोर दुवारी ल, अड़बड़ चिखला करे.
नान नान नोनी बाबू के, खोखी सर्दी लाय.
हाय हाय रे बदरा, तय घुमड़ घुमड़ आय.

रुखराई चिरई चुरगुन, देख कइसे नाचथे.
गोरसी जगा बईठके, बबा कइसे खासथे.
चिखला चांदो म घुमैय्या, कइसे बुले तो जाय.
हाय हाय रे बदरा, तय घुमड़ घुमड़ आय.

पुत्र के लिए पत्र

रचनाकार- श्वेता तिवारी

मदनपुर गांव में नंदू नाम का एक लड़का रहता था. नंदू की मां गरीब थी पर बहुत ईमानदार थी. नंदू जब - तक छोटा था, अपनी मां से बहुत प्यार करता था. जैसे - जैसे वह बड़ा होने लगा, उसे महसूस होने लगा कि उसकी मां सुंदर नहीं दिखती. दरअसल नंदू की मां की एक आंख नहीं थी.

नंदू को इस बात पर शर्म आती थी इसलिए वह अपनी मां के साथ कहीं बाहर नहीं जाता था और ना ही उन्हें अपने साथ ले जाता था. उसे लगता था, अगर मैं अपनी मां को लेकर कहीं बाहर गया तो उसके दोस्त उसे चिढ़ाएंगे.

एक दिन नंदू खाने का डिब्बा घर पर ही भूल गया. नंदूदिनभर भूखा ना रहे इसलिए उसकी मां उसे डिब्बा देने के लिए उसकी पाठशाला पहुंच गई. इस बात पर नंदू को बड़ा अपमान महसूस हुआ. उस बहुत ही गुस्सा आया. उसने घर आकर मां को बहुत भला- बुरा कहा. फिर भी उसकी मां ने इस बात का बुरा नहीं माना.

मां उसका हमेशा ख्याल रखती रही और कभी कोई कमी ना होने दी. दिन गुजरते गए और नंदू बड़ा हो गया. एक दिन उसकी शादी भी हो गई. शादी के बाद उसने अपनी

मां से कहा कि अब उसे अलग रहना है. मां के उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना वह उन्हें छोड़कर चला गया और दूसरे घर में रहने लगा.

कुछ दिनों के बाद गांव का ही एक बूढ़ा आदमी नंदू के दरवाजे पर आया और एक पत्र नंदू को देकर बोला कि तुम्हारी मां अब इस दुनिया में नहीं है. मरते समय भी उसे तुम्हारी बहुत प्रतीक्षा थी. अपने अंतिम समय में तुम्हें उसने ये चिट्ठी लिखी थी. मुझे लगा इसे तुम तक पहुंचा दूं.

नंदू पर इस दुखद समाचार का कोई प्रभाव नहीं पड़ा. फिर भी उसने सोचा पत्र पढ़ लेने में क्या बुरा है. पत्र में मां ने लिखा था - " बेटा, मेरी एक आंख ना होने की वजह से जीवन भर तुम्हारी बेइज्जती होती रही. मुझे माफ कर देना. पर आज मैं तुम्हें एक बात बता रही हूं जो मैंने पहले तुम्हें कभी नहीं बताई. जब तुम छोटे थे, खेलते - खेलते तुम्हारी आंख में चोट लग गई थी. तब डॉक्टर ने कहा कि तुम्हारी एक आंख खराब हो गई है. तुम तभी देख पाओगे जब तुम्हें कोई अपनी आंख दे दे. मैंने तभी तुम्हें अपनी एक आंख दे दी ताकि तुम्हें जीवन में कोई तकलीफ ना आए. तुम जीवन में सदा सुखी रहना.

पत्र पढ़कर नंदू पश्चाताप में डूब गया और बहुत रोया. पर अब कुछ वापस नहीं आ सकता था. उसे जीवन भर इस बात का पछतावा रहा कि वह अपनी मां से क्षण भर भी प्रेम से बात ना किया और हर समय उन्हें तिरस्कृत करता रहा. उसका हृदय इस अपराध बोध से कभी मुक्त न हो सका.

मैं तिमिर दूर करने वाला उजाला हूँ

रचनाकार- कृष्ण कुमार ध्रुव

मैं तिमिर दूर करने वाला उजाला हूँ,
हिन्द को सभ्य बनाने निकला हूँ.
अभिमान है हम गुरुजन जीवन पाये,
आओ पथिक अज्ञानता रूपी अंधकार दूर भगायें..
फिर चली पतवार उस नैया में,
तरणी आज बचा दी हमनें..
अब न रुकना किसी किनारे पर,
जब तक तुम मंजिल न पाओगे.
मैं तिमिर दूर करने वाला उजाला हूँ,
हिन्द को सभ्य बनाने निकला हूँ.
अंधेरा रहता इस जहां में,
इस जहां में उजाला लाया गुरुजन
बनाया सभ्य, संस्कारी और बुद्धिमान,
गुरु महिमा क्या है जान न पाए कोई इंसान..
रहता है न कभी इसे प्रसिद्धि का ध्यान,

बनाता है सबको बुद्धिमान..
मैं तिमिर दूर करने वाला उजाला हूँ,
हिन्द को सभ्य बनाने निकला हूँ!.
अब मानव जायेगा वहाँ,
जहां इनको मंजिल पाना है..
केन्द्र बिंदु वो अब इसका होगा,
जिनको कुछ करने का सपना होगा..
मिट जाएगा अब अंधकार इस जग से,
नव युग, नव उजियारा आएगा..
मैं तिमिर दूर करने वाला उजाला हूं.
हिन्द को सभ्य बनाने निकला हूँ.

संघर्ष जारी रहेगा

रचनाकार- यशवंत चौधरी

ए जिन्दगी तू इम्तिहान बहुत लेती है ,
मुस्कुराने की वजह छीन लेती है .
गुनगुनाने का वक्त ही नहीं देती है ,
ए जिन्दगी तू इम्तिहान बहुत लेती है.

पर तेरे इस बेसकिमती इम्तिहान से ,
ना हारा हूँ - ना ही कभी मैं हारूंगा ,
माना कि मेरे कदम कभी –कभी डगमगा जाते हैं ,
पर फिर से तेरा सामना करने तैयार हो जाते हैं.
ए जिन्दगी तू इम्तिहान बहुत लेती है ....

कोशिश बहुत कि तूने मुझे हराने-सतीने की ,
पर जब तक हौसला है मेरे सीने में ,
राह से ना मैं कभी हटने वाला ,

संघर्ष जारी रहेगा तेरे संग.
ए जिन्दगी तू इम्तिहान बहुत लेती है .....

नाराज तो नहीं हूँ तुमसे -पर एक शिकायत जरूर है तुझसे ,
तू सुख चैन अरमान क्यूं छीन लेती है ,
जो कभी हुआ करती है मेरा ,
उसे अपना बनाने की फितरत में लगा क्यूं रहती है ?
ए जिन्दगी तू इम्तिहान बहुत लेती है.....

हकीकत में रिश्तों का हाल कुछ यूं है
मैं कश्ती तो तू जवां साहिल सा है ,
दिल में है अब बस अरमान यही,
कुछ कर जाएं इस जहां में करतब ही सही .
ए जिन्दगी तू इम्तिहान बहुत लेती है.....

और आशाओं के जीवन दीप जलाएं,
तनिक भी विचलित ना हो पाएं ,
कभी ना निराश होकर मर्यादित भाव से
अब रचनाशीलती में खुद को समर्पित कर जाएं .
ए जिन्दगी तू इम्तिहान बहुत लेती है.....

जय जोहार

रचनाकार- कु.नंदनी, शासकीय विद्यालय कोसमा

जईसे मोबाईल के टावर हे, वईसे छत्तीसगढ़िया के पावर हे.
जईसे बिहाव के भाँवर हे, वईसे खेती करईया के नाँगर हे.
जईसे इडली अऊ शाँभर हे, वईसे खोकसी अऊ बाँबर हे.
जईसे घुँघरू अऊ माँदर हे, वईसे पड़की अऊ घाघर हे.
जईसे गागर मे सागर हे, वईसे गड्ढा कोड़े बर साबर हे.
जईसे दन्त मंजन डाबर हे, वईसे तरिया के सुग्घर वाटर हे.
जईसे धरती अऊ बादर हे, वईसे कथरी अऊ चादर हे.
जईसे बंगाला अऊ टमाटर हे, वईसे ददा अऊ फादर हे .
छत्तीसगढ़िया मनखे मन ल जय जोहार

ज्ञान और विज्ञान

रचनाकार- जितेश्वरी साहू

ज्ञान से विज्ञान से
टिका हुआ संसार है
जीवन सार छिपा है इसमें
सृष्टि का आधार है.

अनंत-अगणित ग्रह-तारें
विपुलित इसका विस्तार है,
सोंच से भी परे
अद्भुत-अनुपम ब्रम्हांड है,
नियत नियम का करते परिपालन
मनके गुंथें ज्यों एक तार है,
ज्ञान से विज्ञान से.....

फेंका ऊपर आया नीचे
गुरूत्व का प्रभाव है,
घुर्णन करती धरा अक्ष पर
होता तब दिन रात है,
अनुशासन के ये बड़े ही पक्कें
होते न ये गद्दार है,
ज्ञान से विज्ञान से.....

अनुसंधानें और खोजें कितनी
संसाधनों का लगा अम्बार है,
शोधें कितनी चलती रहती
थ्योरी से भरे पड़े किताब है,
चंद्र-मंगल पर बेशक झंडे गाड़ें
पर संवेदनाएं हुई बेकार है,
ज्ञान से विज्ञान से.....

हर क्रिया का प्रतिक्रिया निश्चित है
गति का सर्वव्यापी सिद्धांत है,
उर्जा है बस रूप बदलती
होता न इसका कोई अंत है,
जड़ता ने तो खूब निभाई
चैतन्यता हुई लाचार है,
ज्ञान से विज्ञान से.....

विज्ञान की बातें कितनी अद्भुत

रोमांचकता से है भरपूर,
रहस्य कितनें अब भी अनसुलझे
जीवन क्या है ? कोई तो बूझें,
पहूंच से भी परे
वृहद प्रश्नों के भंडार है,
ज्ञान से विज्ञान से
टिका हुआ संसार है.

भिन्न

रचनाकार- संतोष कुमार तारक

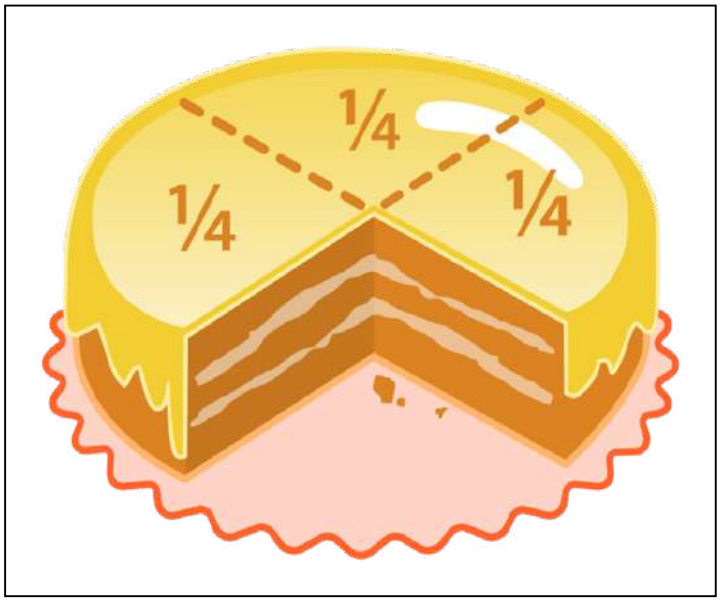

भिन्न तीन तरह के बतलाते.
उचित,अनुचित,मिश्र कहलाते.

उचित भिन्न की यह पहचान.
अंश छोटा और हर बलवान.

अनुचित भिन्न के उल्टे छोर.
अंश तगड़ा और हर कमजोर.

मिश्र भिन्न के अनोखे रंग.
पूर्णांक हो उचित के संग.
उचित भिन्न कहलाता है सम.

पंचतंत्र की कथाएँ

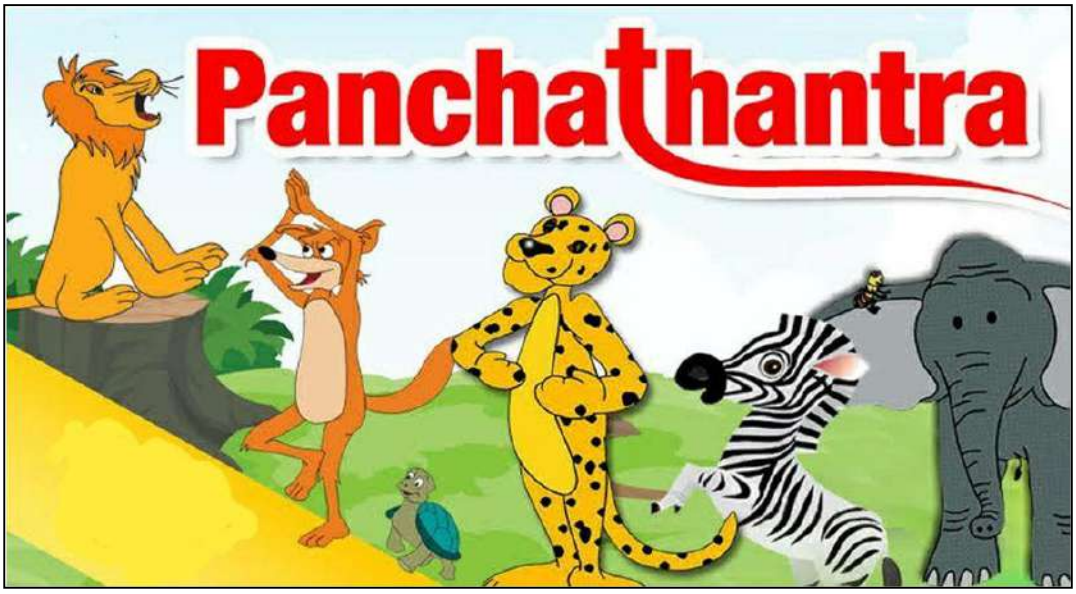

भारत के दक्षिण प्रान्त में एक नगर था महिलारोप्य. वहाँ का राजा था अमरशक्ति, अमरशक्ति बहुत ही योग्य, वीर और प्रजावत्सल राजाथा. राजा के तीन पुत्र थे बहुशक्ति, उग्रशक्ति, अनंतशक्ति. राजा जितना विद्वान, नीतिनिपुण एवं विनम्र था, उसके पुत्र उतने ही मुर्ख, अज्ञानी और अशिष्ट थे.

राजा अपने पुत्रों की अज्ञानता और उद्दंडता से बहुत दुखी और चिंतित रहता था. उसने अपने पुत्रों में राजोजित गुण विकसित करने के लिए अनेक प्रयत्न किये किन्तु उसके सभी प्रयत्न निष्फल हुए.

एक दिन राजसभा में अपने मंत्रियों से विचार विमर्श करते हुए राजा अमरशक्ति ने कहा कि ऐसे अज्ञानी और अयोग्य पुत्रों का पिता कहलाने से अच्छाहोता कि मैं नि:संतान ही रहता. इन पुत्रों से मुझे जीवन भर दुख और लज्जा ही प्राप्त होगी. क्या हमारे राज्य में कोई ऐसा गुणवान शिक्षक नहीं है जो मेरे इन पुत्रों को उचित शिक्षा देकर सही मार्ग पर ला सके.

राजा के मंत्रियों में एक कुशाग्र बुद्धि नीतिवान मंत्री था सुमति. उसने राजा से कहा महाराज हमारे राज्य में ही एक विद्वान और महाज्ञानी शिक्षक निवास करते हैं उनका नाम है पण्डित विष्णु शर्मा. वे सभी शास्त्रों के ज्ञाता और नीति विशारद हैं. अपने

विद्यार्थियों में उनकी बड़ी प्रतिष्ठा है. यदि वे राजकुमारों को अपना शिष्य स्वीकार कर लें तो अवश्य ही उनका कल्याण होगा. चूँकि राजपुत्र युवा हो चुके हैं अत: उन्हें प्रारंभ से शिक्षा देने में अत्यधिक समय व्यतीत हो जायेगा. अत: यह आवश्यक है कि उन्हें अल्पकाल मेंही नीतिशास्त्र और अर्थशास्त्र में पारंगत किया जाये. मुझे विश्वास है की महापण्डित विष्णु शर्मा यह कार्य कर सकेंगे.

राजा अमर शक्ति ने बड़े सम्मान और श्रद्धा के साथ पंडित विष्णु शर्मा से अनुरोध किया कि वे राजपुत्रों को अर्थशास्त्र एवं नीतिशास्त्र की शिक्षा दें. राजा ने विनम्रतापूर्वक यह भी कहा कि गुरू दक्षिणा के रूप में उन्हें 5 गाँव एवं स्वर्ण मुद्राएँ भेण्ट करेंगे.

तब पण्डित विष्णु शर्मा ने राजा से कहा, राजन! मैं विद्या को बेचता नहीं. एक पिता का अनुरोध है इसलिए यह दायित्व मैं स्वीकार करता हूँ. आपको वचन देता हूँ कि छ मास में आपके तीनो पुत्रों को ज्ञान शील नीतिशास्त्र और अर्थशास्त्र में निपुण करूँगा. यदि में अपने वचन को पूर्ण नहीं कर सका तो ईश्वर मेरी समस्त विद्या का हरण कर ले.

पंडित विष्णु शर्मा की इस प्रतिज्ञा को जिसने भी सुना वह अचंभित रह गया. राजा ने बड़े ही कृतज्ञ भाव से राजकुमारों को पण्डित विष्णु शर्मा को सौंप दिया. विष्णु शर्मा ने राजकुमारों को नीति शास्त्र में निपुण करने के उद्देश्य से कथाओं पर आधारित एक ऐसे अद्भुत ग्रन्थ की रचना की.

इस ग्रन्थ में पांच तंत्र थे-मित्रभेद, मित्रसंप्राप्ति (मित्रलाभ), काकोलूकीयम, लब्धप्रणाशम एवं अपरीक्षितकारकम. पांच तंत्र होने के कारण इस ग्रन्थ को पंचतंत्र के नाम से जाना गया.

इस ग्रन्थ की सहायता से पण्डित. विष्णु शर्मा तीनो राजकुमारों को छः मास में ही नीति शास्त्र में निपुण बनाने में सफल हुए.

पंचतंत्र कीकथाएँ मूलरूप से संस्कृतभाषा मेंहैं ऐसा माना जाता है कि पंचतंत्र की रचना ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में हुई. हम किलोल के प्रत्येक अंक में इसकी एक कथा आपके लिए लेकर आयेंगें.

घमंडी हाथी

रचनाकार- पुर्णेश डडसेना

बहुत समय पहले की बात है. किसी जंगल में एक हाथी रहता था. उसे अपनी ताकत पर बड़ा घमंड था. वह जंगल में यहां - वहां घूमता और पेड़ों की डालियां तोड़ तोड़ कर गिराता. इससे पेड़ों पर रहने वाली चिड़ियों के घोंसले गिर जाते थे.

एक बार हिम्मत करके एक चिड़िया ने हाथी से बात की और उससे कहा, हाथी दादा, आप छोटी-छोटी डालियों को क्यों नहीं खाते हैं? बड़ी-बड़ी डालियों को खींचने पर हमारे घोंसले टूट जाते हैं. हमारे अंडे भी फूट जाते हैं और हमारे बच्चे घर से बेघर हो जाते हैं. इन घोंसलों को बनाने के लिए हमें दिन- रात मेहनत करनी पड़ती है और तिनका - तिनका जोड़ना पड़ता है. तब हाथी सारी डालियां तोड़ते हुए आगे बढ़ जाता है. चिड़िया की बातों का उस पर कोई असर नहीं पड़ता.

हाथी की ऐसी उद्दंडता से नन्हींचीटियों के घर भी दबकर टूट जाते थे. एक बार चींटियों ने उससे विनम्रता पूर्वक कहा कि आप यहां से दूर चले जाएं, हमारे घरों को नष्ट ना करें. तब हाथी ने कहा,चीटियां मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं. मुझे जो करना है मैं वही करूंगा.

सभी चींटियों ने सोचा,उसे सबक सिखाया जाए. एक दिन जब हाथी डालियां तोड़ रहा था, बहुत सी चीटियां उसके सूंड में घुस गईं. हाथी इससे तिलमिला उठा. वह इधर - उधर भागने लगा,अपनीसूंड बार - बार ज़मीन पर पटकने लगा,परचीटियां उसे काटती रहीं.

अब हाथी को अपनी गलती का एहसास हुआ. उसे समझ में आ गया कि जिन्हें वह छोटा समझ रहा था वे बहुत कुछ कर सकती हैं. हाथी ने अपनी गलती के लिए माफी मांगी और जंगल में मित्रता पूर्वक सबके साथ रहने लगा.

माँ

रचनाकार- शकुंतला साहू

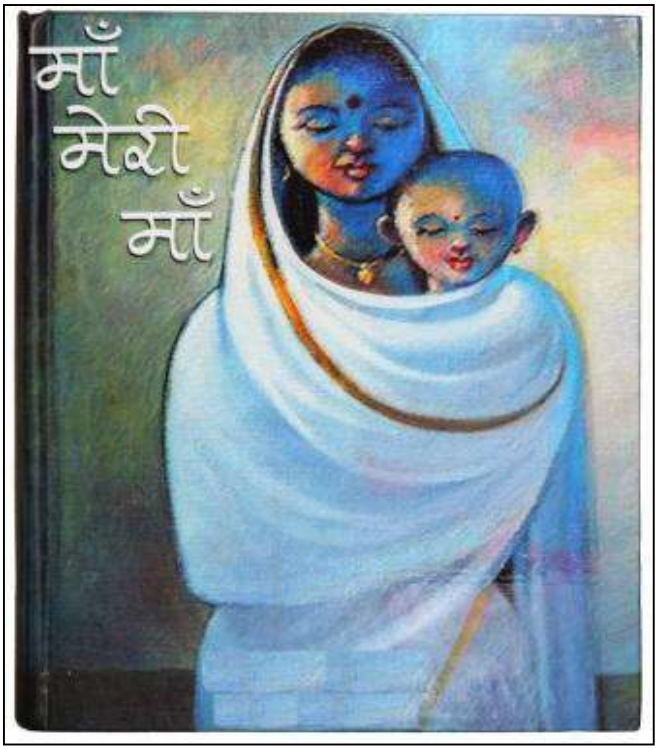

सुबह की कोमल गुनगुनी धूप है माँ,
दिन भर की थकान में प्यार भरी सुख है माँ
विपत्ति और हताशा में विराट शक्ति है माँ,
भोजन की तृप्ति, श्रद्धा और भक्ति है माँ
जब-जब राहों में काँटे आए,
राह की सुगंधित फूल है माँ
खुदा की बनाई बेमिसाल नेमत हो तुम,
माँ! तुझ पर जितना लिखूँ कम है माँ
लेकिन माँ ! मैं केवल इतना कहूँगी,
माँ के चरणों में ही जग पल्लवित है, पुष्पित है,
माँ यह जनम तो क्या, माँ का ऋण चुकाने में,
जन्मों - जनम समर्पित है

स्लोगन -शिक्षा जागरूकता

रचनाकार- शशि पाठक

1. छत्तीसगढ़ शासन ने नई नीति अपनाई,
पढ़ाई तुंहर दुवार शिक्षा पोर्टल ले आई.

2. छत्तीसगढ़ स्कूल शिक्षा पोर्टल में जाएँ,
विद्यार्थी और शिक्षक पंजीयन कराएं.

3. निःशुल्क ऑनलाइन शिक्षा का लाभ उठाइये,
कठिन विषय वस्तुओं पर सहज समझ बनाइये.

4. ज़ूम ऍप्स डाऊनलोड करना है,
ऑनलाइन कक्षा में पढ़ना है .

5. सभी शिक्षक ये लें संकल्प,
पठन पाठन का हो अधिक विकल्प .

हमारे प्रेरणा स्त्रोत हेलेन केलर

रचनाकार- प्रीति सिंह

हेलो बच्चो,

आज हम बात करने वाले हैं एक ऐसी महिला की, जिनका जन्म तो एक साधारण बच्ची की तरह ही हुआ. मगर दो वर्ष की उम्र में एक तेज बुख़ार की वजह से उनकी देखने और सुनने की शक्ति चली गई.

जी हाँ, बच्चो,वही बच्ची बड़ी होकर एक मशहूर लेखिका बनी जिनका नाम था हेलेनकेलर. जिनका जन्म अमेरिका के तुस्कुम्बिया शहर में 27 जून1880 को हुआ. उनके पिता सेना में अधिकारी थे और माँ हाउस वाइफ़ थीं.

आपको पता है हेलेन की सफलता में उनकी माँ के अलावा जिनका बहुत बड़ा योगदान था वे थीं उनकी टीचर मिस सुलीवान. एक दिन उनकी माँ अपने मित्र की सलाह

परमिस सुलीवान को बतौर शिक्षक घर लाईं. हेलेन और मिस सुलीवान एक-दूसरे के जैसे मित्र बन गए. हेलेन अपने सूँघने और छूकर पहचानने की शक्ति का इस्तेमाल करने लगी थी. वह फूलों की सुगंध से उनके नाम पहचानने लगी, गले के कंपन के स्पर्शसे शब्दों को पहचानने लगी.

एक दिन मिस सुलीवान उन्हें वॉटरका मतलब बता रही थी. वह किचन से मग में पानी ले आई और हेलेन के हाथ में थमाया. हेलेन थोड़ी दुविधा में थी,वह अंतर समझ नहीं पा रही थी कि पानी का मतलब क्या है और मग का मतलब क्या है. फिर मिस सुलीवान उनको घर के गार्डन में ले गई और पाइप से एक हाथ पर पानी डाला और दूसरे हाथ पर 'WATER' लिखा. इस तरह हेलेन ने छह साल की उम्र में पहला शब्द 'WATER' बोला, क्योंकि उस बीमारी के बाद वह बोल नहीं पा रही थी. यह घटना उनके अँधेरे जीवन में जैसे रोशनी की किरण बन कर आई. मिस सुलीवान और उनके परिवार में जैसे ख़ुशी का ठिकाना ना रहा. इस घटना के बाद तो हेलेन खेल-खेल में कभी-कभी एक दिन में लगभग तीस शब्द सीख जाती थीं. इस तरह अपने कठिन परिश्रम से हेलेन ने अंग्रेज़ी, जर्मन, फ्रेंच, लैटिन जैसी कई भाषाओं में ज्ञान अर्जित किया. दस वर्ष की उम्र में उन्होंने अपना पहला लेख लिखा "दी फ़्रॉस्टकिंग" और उनके द्वारा लिखी गई पुस्तक "दी स्टोरी ऑफ़ माई लाइफ़" बहुत चर्चित हुई. उन्होंने हावर्ड यूनिवर्सिटी से आर्ट्स में ग्रेजुएशन किया. ऐसा करने वाली वे दुनिया की पहली मूक - बधिर महिला बन गईं.

हेलेन केलर ने अपने कामों से यह साबित कर दिया कि दिव्यांगता किसी व्यक्ति के पढ़ने - लिखने, बोलने और खेलने में बाधक नहीं बन सकती.

मेरा बचपन

रचनाकार- अनिता चंद्राकर

कभी ना भूलने वाला बचपन,
बड़ा सुहाना भोला बचपन
टिड्डे,तितली, चिड़ियों के पीछे,
दिन भर दौड़ लगाता बचपन
आम, जाम, इमली के बगीचे,
क्या- क्या नहीं चुराता बचपन
गिल्ली, डंडे, भौंरा बाटी,
खेल -खेल में बीता बचपन
पेड़ों, की डाली, माँ की साड़ी,
झूलों में झूलता बचपन
छम-छम बारिश, कागज की नाव,
दुनिया की सैर लगाता बचपन

दादा-दादी, नाना-नानी,
कई रिश्तों संग पलता बचपन
दरिया, नदियाँ, खेतों की पगडण्डी,
हँसता और हँसाता बचपन

अब तोर का होही

रचनाकार- दिलकेश मधुकर

बेटा के बिहाव करें, अऊ मांगें हीरो होंडा.
रंग रूप म ठिकाना नइय, चाल परे हे पोंडा.
जब चल देबे दुनिया लें, तब तोर पाप ल कोन धोही
वाह रे दहेज के लोभी, तहीं बता,अब तोर का होही.

दाई ददा के खेत बेचागे, अऊ बेचागे दमड़ी.
सोन चांदी देहे बर, घर बेचागे अऊ बेचागे पगड़ी.
एक दिन तोरो पारी आही, तब कोन तोर हाथ लमोही
वाह रे दहेज के लोभी, तहीं बता, अब तोर का होही.

बेटी बनाके लाय रहेय, अऊ लगाय चार डंडा.
का कसूर रहीच तेन तै, फांदें जुलुम के फंडा.
एक दिन फंदबे तै मुसुवा कस, तब कोन तोर बर रोही
वाह रे दहेज के लोभी, तहीं बता, अब तोर का होही.

मारपीट के घर ले लिकाले, अऊ लगाये फंदा.
होरा कस आगी म भुंजे, काम करें तै गंदा.
लेगही पुलिस हर एक दिन, अऊ कपड़ा कस निचोही
वाह रे दहेज के लोभी, तहीं बता, अब तोर का होही.

लॉकडाउन की कक्षा

रचनाकार- शशि पाठक

सरकारी और निजी स्कूलों के बच्चें, साथ साथ पढ़ पाएंगे
ई लर्निंगप्लेटफार्म पर ऑनलाइन,
वीडियोकॉनफ्रेसिंग से जुड़ जाएंगे
सीजी स्कूल डॉट इन पर, पंजीयन कर लो सब भाई
ताकि लॉकडाउन में प्रभावित ना हो छात्रों की पढ़ाई
ऑडियो वीडियो और गतिविधियों से
कक्षाओं को चलाया जाना है
घर मे रहकर ही छात्रों को,
विषय वस्तु की समझ बनाना है
ऑनलाइन होमवर्क मिलेगा, और होगी कॉपी की जांच भाई
ताकि लॉकडाउन में प्रभावित ना हो छात्रों की पढ़ाई
लॉकडाउन का पालन करके,
कोरोना को हराना है
अच्छी शिक्षा पाकर हम सबको,
देश का मान बढ़ाना है

देखो अब खुद ही चलके, *पढ़ाई तुंहरदुवार* है आई
ताकि लॉकडाउन में प्रभावित ना हो छात्रों की पढ़ाई
ज्यादा बच्चे लाभ लें सकें,
यह जगरुकता फैलाइये
सभी छात्रों और शिक्षकों का भी,
अनिवार्य पंजीयन कराइए
उत्साहित आनन्दित होकर, कीजिये विद्या धन की कमाई
ताकि लॉकडाउन में प्रभावित ना हो छात्रों की पढ़ाई

ऐसा घर

रचनाकार-हिमोनी बघेल

ऐसा घर में बनाऊं सखी,
जिसमें रहे संसार सारा.
घर छोटा हो, बगीचा बड़ा हो,
बगीचे में हों पेड़ बड़े.
एक नीम हो, कुछ आम हों,
और भी कई हों पेड़ खड़े.
आंगन में एक गौ माता हो,
जिसका आशीर्वाद सदा हो.
बछड़े संग रंभाए वो,
मेरे आंगन में शाम सवेरे .
हर तरह के पक्षी गाएं ,
सुबह-शाम बगिया में मेरे .
पेड़ों से देना, पक्षियों से गाना,
प्रकृति का हर गुण ले बच्चे मेरे.
ऐसा घर मैं बनाऊं सखी,
मेरे घर में रहे संसार सारा.

लक्ष्य

रचनाकार- प्रिया देवांगन प्रियू

एक गाँव में एक गरीब बालक रहता था .उसका नाम वैभव था. वैभव के माता -पिता बहुत गरीब थे.माँ दुसरो के घर बर्तन साफ करने का काम करती थी और पिता जी सब्जी बेचते थे.

वैभव बचपन से ही होशियार था. उसका लक्ष्य था कि वह बड़ा होकर सैनिक बने और देश की रक्षा करे. वैभव के माता पिता ने कड़ी मेहनत कर उसे पढ़ाया-लिखाया. वैभव अपने घर की गरीबी को देख कर अपने माता - पिता से अपने लक्ष्य के बारे में कुछ कह नहीं पाता था. वैभव स्कूल की शिक्षा प्राप्त करने के बाद कॉलेज के साथ - साथ अपने पिता जी के साथ सब्जी बेचने जाता था तथा धन इकट्ठा करता था. धन इकट्ठा करने के बाद वैभव दिल्ली गया और वहाँ से सैनिक बनकर अपने लक्ष्य को प्राप्त किया.

लइका हँव बनिहार के

रचनाकार- भानुप्रताप कुंजाम 'अंशु'

ददा मोर बड़ खरतरिया
चमकत हीरा निच्चट करिया
फेकिस माटी बनाइस तरिया
होइस हरिहर रिहिस परिया
बनइया घर-दूवार के...
लइका हँव बनिहार के..

दिन रात हकन के कमाइस
पच्छिना पोछ के मोला पढ़ाइस
पूरा करिस जम्मो फरमाइस
सुघर पहिनाइस सुघर खवाइस
दाता मोर संसार के...
लइका हँव बनिहार के..

कभू नईं खोलिस कापी- किताब
मोर बर लानिस कापी-किताब
दुख-पीरा के नईं हे हिसाब
जिनगी बिताइस हाँसत गुलाब
मोला हँसाइस आँसू ढार के...
लइका हँव बनिहार के..

कतको खुन चुसिन सेठमन
भोकवा बनाइन मेटमन
रहम नईं करिन ठेठ मन
वोकर जांगर टोरिन हमर पेट मन
बइठिस नईं तब ले हार के..
लइका हँव बनिहार के..

प्रेरक कविता

रचनाकार-संतोष कुमार कौशिक

सफल लोगों का काम, दिखता है आसान
उसके पीछे संघर्ष कठिन है, तब पहुंचता है मुकाम

इसे समझने के लिए एक कहानी, मैं सुनाता हूं
चित्रकारऔर एक युवक की कहानी,उसे बताता हूं

एक राज्य में बहुत बड़े,चित्रकार रहते थे
उनके बनाए हुए चित्र, बहुत महंगे बिकते थे

चित्रकार एक दिन कहीं, यात्रा में निकल गया
मार्ग में रात होने के कारण, एक गांव में ठहर गया

उस गांव में एक युवक ने , उसे पहचान लिया
चित्रकार के पास पहुंच कर,उसे प्रणाम किया

उस युवक ने कहा- मैं आपके चित्रों कीप्रशंसा करता हूँ
आप मेरे लिए भी एक चित्र बनाएँ, आपसेआग्रह करता हूँ

उस चित्रकार ने अपने थैले सेएक कागज निकाला
कुछ ही समय में एक चित्र बनाकर,उस युवक को दिया

युवक नेइतनी जल्दी चित्र बना देख, बहुतनिराशा हुआ
उसने सोचा चित्रकार ने टालनेके लिए जल्दबाजी में चित्र बनाया

चित्रकार युवक के हाव-भाव देख, उसे समझाया
इस चित्र का मूल्य सौ स्वर्ण मुद्राएं हैं, उसने बताया

विश्वास नहीं हुआ युवक को,कलादीर्घा में चित्र लेकर पहुंच गया
कीमत सही बताया था चित्रकार ने,वह दौड़ कर उसके पास आया

युवक ने कहा- महोदय जी चित्र बनाना, मुझे भी सिखाएँ
ताकि मैं कुछ क्षणों में चित्र बनाऊं,कीमत हो सौ स्वर्ण मुद्राएँ

चित्रकार ने कहा- कुछ क्षण चित्र बनाने में,तीस वर्ष लगा है हमारे
अगर तुम भी तीस वर्ष लगा सकते हो तो,चित्र बनाना सीखो प्यारे

तब युवक को लगा, सफलता दिखता है आसान
इच्छा करते हैं,थोड़ी ही समय में बन जाए महान

बच्चों इसका ध्यान रखो

रचनाकार-सुजीत कुमार मौर्य

लंबी छुट्टी व्यर्थ न जाए,
बच्चों इसका ध्यान रखो
समय है जीवन गढ़ने का,
पढ़ने का आगे बढ़ने का
करो विषय की पुनरावृत्ति,
निर्धारित कर लो मनोवृत्ति

कॉमिक्स, कार्टून खेलो खेल,
घर को ना समझो तुम जेल
मम्मी के काज में हाँथ बटाओ,
नाना-नानी को भी फोन घुमाओ

आँगन के पौधे में डालो पानी,
टीवी भी देखो, सुनो कहानी
झूमो, नाचोथिरकाओ अंग,
खेलो लूडो, कैरम और शतरंज

करो योग भगाओ रोग,
धमा चौकड़ी न मचाओ रोज
कम्प्यूटर चलाओ, कुछ नया करो,
जीवन को अपना स्मार्ट करो

बीता पल नही आता है,
आदमी सिर्फ पछताता है
हर पल का तुम मान रखो,
बच्चों इसका ध्यान रखो

जीरो (0)का अनोखापन

रचनाकार- खेमराज साह

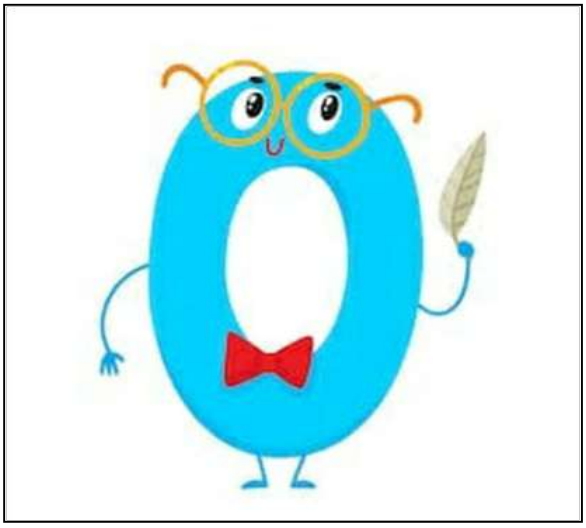

समग्र शिक्षा, छत्तीसगढ़ के आदेशानुसार 11दिसंबर 2019 से 21 दिसंबर 2019 तक सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र नई दिल्ली(संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार) एवं विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान, कुरुक्षेत्र के सहयोग से 228 वी कार्यशाला "प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में स्कूलों की भूमिका" विषय पर संस्कृति भवन, कुरुक्षेत्र हरियाणा में भाग लेने का मौका मिला.

कार्यशाला के चौथे दिन शैक्षणिक भ्रमण का आयोजनश्री डॉ. रामेन्द्र सिंह के निर्देशनतथा मास्टर ट्रेनर श्री देवेंद्र कुमार रजक के मार्गदर्शन में कुरुक्षेत्र की संग्रहालय तथा पनोरमा में अध्ययन का अवसर मिला. इस अवसर पर मैं गणित से सम्बंधित सभी पौराणिक तथा ऐतिहासिक शिलालेख का अध्ययन किया. उक्त शिलालेख से प्राप्त जानकारी को प्रस्तुत कररहा हूँ.

शून्य (जीरो) की खोज - जीरो या शून्य की खोज दुनिया की महान और क्रांतिकारी खोज थी. गणित में शून्य का विशेष महत्व है इसके बिना गणित की कल्पनानहीं की जा सकती है. शून्य की खोज या अविष्कार भारत के महान गणितज्ञ आर्यभट्ट ने किया था.

वर्ष 1498 मेआर्यभट्ट ने अपने महान ग्रन्थ आर्यभटीय में शून्य के बारे में बताया था. आर्यभट्ट को भारत का महान गणितज्ञ माना जाता है. जिन्होंने गणित के क्षेत्र में भारत का मान बढ़ाया था. शून्य का अविष्कार पर अभी भी मतभेद है लेकिन ज्यादा निकट आर्यभट्ट का सिद्धांत ही है. शून्य का अविष्कार ने आर्यभट्ट को इतिहास में अमर कर दिया. ब्रम्हगुप्तने आर्यभट्ट की परम्परा को आगे बढ़ते हुए गणित को अधिक समृद्ध बनाया ब्रम्हगुप्त पहले भारतीय गणितज्ञ है जिन्होंने पाटी गणित (अंकगणित) और बीज गणित के रूप में गणित को दो भागो में बांटा एवं बीजगणित में शून्य का उपयोग करने वाले वे प्रथम भारतीय गणितज्ञ थे.

शून्य का इतिहास - भारत का शून्य अरबमें 'सिफर 'नामसे प्रचलितहुआ वराहमिहिर ने अपनी किताब 'पंचसिद्दांतिका' में शून्यको बताया है पश्चिमि देशो में शून्य को पहुंचाने का श्रेय अरबो को जाता है कई अरब विद्वानों ने अपने ग्रंथो में शून्य का जिक्र किया था. कुछ पश्चिमि विद्वान यह भी कहते है की "शून्यका अविष्कार" उनकी तरफ हुआ था लेकिन इसका कोई पुख्ता सबूत नहीं है. माया सभ्यता या बेबीलोनवासियो को भी जीरो का पता था. गणितज्ञ ब्रम्हगुप्त ने 598 वी ईस्वी एवं अन्य गणितज्ञों ने शून्य के साथ जोड़, घटाव एवंगुणा जैसी कई अंकगणितीय संक्रियाएँ की है. परिकलन के माध्यम से आप उन संक्रियाओं को कर सकते है जिन्होंने इन गणितज्ञों ने 1300 वर्षो पूर्व किया था. अब अपने परिकलन में 35 से 0 करने की अथवा किसी संख्या को शून्य से भाग देने की कोशिश करे आपक्या पाते है. इसका परिणाम अनिश्चित होता है जिसे भास्कराचार्य -2(1114ईस्वी)ने कच्छेद का नाम दिया. भास्कराचार्य प्रथम गणितज्ञ थे जिन्होंने शून्य को एक परमात्य (अत्यंत छोटी) संख्या माना. तथा यह कहा कि किसी संख्या को शून्य से भाग देने पर अनंत प्राप्त होता है.

शून्य का अनोखापन - अंको में शून्य का विशेष स्थान है यह एकमात्र अंक है जो न धनात्मक एवं ऋणात्मकहै. कोई भी पैमाना जो धनात्मक एवं ऋणात्मक अंको का प्रयोग करता हैयह उसके लिए अतिआवश्यक है. कोईवस्तुजो ऋणात्मक अपरिमित संख्या से धनात्मक अपरिमित संख्या तक जाती है, शून्य के बिना पूरी नहीं हैलेकिन पूर्ण संख्या शून्य के बिना अधूरा है इसी प्रकार पूर्णांको की बात करे तो शून्य (0) के बिना पूर्णांक अधूरा है.

वास्तविकता में शून्य (0) एक गणितीय अंक है यह संख्याओं का पूर्णांक भी है.

किसी भी संख्या को शून्य से गुना करने पर शून्य ही प्राप्त होता है. अगर किसी संख्या को शून्य से जोड़े या घटाए तो वही संख्या प्राप्त होती है. किसी भी संख्या के पीछे शून्य लगाने में उस संख्या विशेष का मूल्य बढ़ता है.

उदाहरण के तौर पर 1 के आगे एक शून्य लगाने पर 10 आता है इत्यादि 0, 1000,10000,100000 मान प्राप्त होता है. सौ हजार से लेकर लाख या करोड़, अरब, पदम्तक की संख्याये शून्य की वजह से ही मिलती है. शून्य का आविष्कार ही बड़ी संख्याओं का जनक है.

परिमेय संख्याओं पर संक्रियाएँ से हम जानते है की शून्य के अलावा कोई भी परिमेय संख्या ऐसा नहीं है, जिसे किसी अन्य परिमेय संख्या में जोड़ने पर मान नहीं बदलता. शून्य के इसी गुण के कारणही इसे योगात्मक तत्समक कहते है. गणित में अंको का दशमलव एवं पूर्ण करने में शून्य की अहम् भूमिका है कि कोई भी अंक के बाद दशमलव एवं अंक के पहले दशमलव संख्याभारत देश का दुनिया को महान देन है.

कोरोना को हराना है

रचनाकार- प्रियंका सिंह

एक

चारों ओर सफाई रख के देख

दो

दिन में पांच छ:बार साबुन से हाथ धो

तीन

गंदगी फैला कर सब की जिंदगी मत छीन

चार

आंख नाक मुंह ना छुओ बार-बार

पांच

खांसते,छींकते वक्त मुंह पर रखो कोहनी, टिशू या रुमाल किसी भी बीमारी की ना पड़ेगी आंच

छः
सतर्कता ही बचाव है

सात
ना करो चुंबन ,आलिंगन और ना मिलाओ हाथ

आठ
स्वच्छता का सबको पढ़ाओ पाठ

नौ
सोशलगैदरिंग को बोलो नो

दस
देश हित में कोरोना से बचने इतनी बातें याद रखो बस

समय की परख

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे

एक गांव में एक भोला भाला किशन नाम का लड़का रहता था. प्राथमिक शिक्षा गांव में ही पूरा की.वह होशियार था उसके पिताजी का सपना था कि उसका बेटा सरकारी अधिकारी बने. फिर उसने अपने बेटे को शहर के स्कूल दाखिल करवा दिया. किशन शहर जाने के बाद पता चला कि पैसे की मोल क्या है. एक-एक पैसे की लिए मोहताज हो जाता था. किशन अपनी चाहतो को पूरा नही कर पाता था. चाहे कपड़े खरीदने की हो चाहे पेन कॉपी हो चाहे पुस्तक के लिए हो हर चीज हर वस्तु के लिए उसे समस्या का सामना करना पड़ता था. वह नहीं चाहता था अपने पिताजी को यह समस्या को बताए उन्होंने समय की जरुरत को समझा और एक दुकान में काम करने के लिए निकल पड़ा उसे एक ज्वेलरी की दुकान में काम मिल गया पार्ट टाइम नौकरी करते-करते अपनी पढ़ाई पूरी की पढ़ाई पूरा करने के बाद वह हमेशा अपने पापा के सपनों को पूरा करने के लिए दिन रात मेहनत किया और खुद को साबित किया.उसे एक सरकारी ऑफिसर के रूप में नौकरी मिल गयी. उसके पिताजी बहुत खुश हुए अपने बेटे के ऊपर उनको काफी नाज था. समय के महत्व को जाना.

स्कूल पढ़ने जाएंगे

रचनाकार-दिनेश कुमार चन्द्राकर

नन्हे मुन्हे बच्चे हम,
स्कूल पढ़ने जायेंगे.
अ,आ,इ,ई पढ़कर हम,
ज्ञान की दीप जलायेंगे.

पापा मुझे स्कूल है जाना,
पढ़ लिखकर है नाम कमाना है.
पढ़ाई के सारे वस्तु है लाना,
बनठन कर स्कूल है जाना.

मम्मी जल्दी से तैयार कर दो,
कॉपी,पुस्तक, बैग भर दो.
अपनी ममता की आँचल कर दो,
आशीष देकर मुझको वर दो.

भैया स्कूल साथ ले चल,
उंगली पकड़ कर हाथ ले चल.
छोटी बहना का इतना ही कहना,
भैया स्कूल साथ लेचल .

हँसते गाते स्कूल जो पहुंचे,
देखें मैंने ढेर सारे बच्चे.
अच्छा किया जो स्कूल आया,
देख स्कूल,मन हर्षाया.

स्कूल का हरा भरा मैदान,
मैं भी थाइन सबसे अनजान.
सब बच्चे मस्ती में चूर,
देखे सहसा मुझेआँखे घूरघूर.

सबने मुझे खेल खिलाया,
अपनों से फिर खूब मिलाया.
पहुंचे हम कक्षा के अंदर,
देखा मैंने शेर,भालू,बन्दर.

सबका चित्र बना हुआ है,
सुंदर, सरल सचित्र बना है.
सुसज्जित कक्षा देख मन भाया,
रोज स्कूल आऊं, दिल हर्षाया.

नन्हे मुन्हे बच्चे हम,
स्कूल पढ़ने जायेंगे.
अ,आ,इ,ई पढ़ लिखकर हम,
ज्ञानवान बन जायेंगे.
हम स्कूल पढ़ने जाएंगे.

राम तय बनवासी हो गेस

रचनाकार- योगेश ध्रुव "भीम"

"राम घलो तोर राज तिलक बर,
होवत हावे सुघ्घर अबड़ तैयारी,
तोर परजा बड़ मगन घलो हे,
नाचत गावत अबड़ भारी हावे"

"रिकबिक-रिकबिक महल अटारी,
दिया घलो ल जलावत नर नारी,
दसरथ के दुलरवा बेटा रामा,
मन-मन तय हरसत बड़ भारी"

"एकेच दिन घलो पहली तोला,
आसीस मिलिस ददा के राम,
कइसन अलहन आगे बिधाता,
राजा बने ल तय छोड़ दे राम"

"बनवासी होय के सन्देसिया आगे,
मिले हावे चौदह बच्छर बनवासा,
तोला अजोध्या छोड़े पड़ही मयारू,
बेरा घलो अलकरहा आये हावे"

"मनखे चिन्हे न देवता अइसन बेरा,
कैकई के अइसन कोप घलो,
ये ला तो माने ला पड़ही रामा,
राजा बने तय छोड़ बन जाय पड़ही"

"बनबासी तोला बने ला पड़गे,
तेहर बात मनइया घलो राम,
लइका बड़ भारी दुलरुवा हावस,
मानेस घलो दाई ददा के तय बात"

"ददा घलो कलप रोवत भारी हे,
राम तेहर झन छोड़ ये बेरा मोला,
हरस घलो तय परान अधार रामा,
रही रही आंसू ल धरकावत हावे"

"तय बनबासी बनगेस बेटा राम,
तोर संगे संग घलो जावत हावे,
कुलबेटी सीता अउ लखन बेटा न,
करत तैयारी बन जाय बड़ भारी,
पीवरा ओनहा पहिरेव तुमन रमा"

"दाई तोर घलो कौसिल्या के न,
आँखि हर सुखवत हावे भारी,
ददा घलो पड़गे भुइय्या म मुरछा,
तेहर निकले बन जाए देराउठि राम"

"देख के तोला नगर घलो रोवत,
कुमलावत हावे बड़ भारी रामा,
लइका अउ सियान माईपिला,
ढ़हमार के रोवत नर नारी हावे"

"अगास ले आँसू घलो ढ़रकत,
बरसा होवत हावे बड़ भारी न,
ते हमर दुलरवा राम रमैय्या,
झन जा तय हमू मन ल छोड़ के"

"राजा के तय मंत्री सुमन्त न,
रथ ल घलो लानत रोवत हावे,
बैईठींन लागिन घलो सबो ओमे,
रामसिया अउ लखन तीनो संघरा"

"लेगिन तहु मन ल जंगल म रामा,
छोडे खातिर जाय वनवासे बर,
पहुचीन लागिन घलो जंगल म,
उतरीन रामसिया लखन घलो ह"

"सुमन्त कलपत रोवत भारी हावे,
आँसू ल ढ़रकावत ओहर रोवत,
घोड़वा मन घलो रोवन लॉगिन,
अतक मयारू तयह दुलरुवा राम"

"छोड़त नइहे कोन्हों तोला रामा,
समझाय घलो तय ओमन ल,
लौटन लागिन नगर वहू मन ह,
जवत हस तय हमू ल छोड़ रामा"

"तुंहर कोंवर-कोंवर चिक्कन पाँव,
पड़न लागिन घलो भुइय्या म,
जंगल के एक पाइंया रद्दा,
कांटा घलो ह गड़न लागिन"

"पथरा ल हपटत रेंगत तय,
आगू ड़हर तुमन जावत हवो,
अइसन का बिपत आये रामा,
यहु अलकरहा बेरा घलो हावे"

"बिताये ल पड़ही बिपत भारी,
भेटेस तेहर घलो संगी केंवट ले,
तोला पा के मेहर रमैय्या,
जनम-जनम के दुखपीर हरगे"

"मगन होवन लागिन केवट ह,
जनमो-जनम के अगोरा करत,
चलो मोरेच देराउठि घलो म,
टूटहा कुरिया अउ छानी हावे,
राम घलो चलिस मगन होके"

"केंवट राज संग घलो तय घर म,
राजमहल के रहवैय्या हरस,
अउ बने बने तय खावैय्या रामा,
खाय केवट घर तैहर ले राम"

"कांदा कुसी खाय घलो जंगल के,
धन-धन हावे मोर भाग परभु,
जात हरे मोर केंवट धन भाग रामा,
मोरो देराउठि ल पवितर तय करे"

"करदेस आके मोरो फुटहा करम हे,
अबड़ सेवा केवट करन लागिन,
नाचा गाना बड़ होवन लागिन,
होवन लागिन भगवान घलो खुश न"

"अइसन बेरा देखेल नइ मिले रामा,
केंवट घलो बड़ सोचन लागिन,
आघू डहर जाये बेरा घलो होवत न,
राम ह केंवट ल बिदा माँगन लागी"

"गंगा नदिया नहकादे हमला,
केंवट भैय्या राम कहन लॉगिन,
उतरौनी तय ले लेबे हमरो ले,
बिनती करत राम बोलन लॉगिन"

"बीनती तोर करत हावो संगी,
पार हमु मन ल तय नहकादे,
केवट राम के पाँव पड़न लागी,
घेरी-बेरी पड़त हावे पाँव राम के"

"तोरो पाँव के धुर्रा माटी रामा,
तय हर घलो धोवाले राम,
भगवाने हर मानान लॉगिन,
केंवट घलो धोइन राम के पाँव"

"पखारन लागिन पाँव घलो तय,
आंसू ढ़रकात घलो केंवट ह,
आँसू घलो निकरन लागिन,
धोवत पाँव तय राम रमैय्या के"

"पाँव पखारीन बैईठावट डोंगा म,
नहकवत गंगा पार केंवट तय,
धन बड़ भाग तोरो हावे केंवट,
बईठारे हस तैहर पार लगईय्या ल"

"गंगा ल तेहर पार कराय,
दुनिया के पार लगैय्या ल,
बड़ भाग तोरो हावे केंवट,
ये तो मोर राम रमैय्या न"

"उतरौनी तोला दिस परभु ह,
सोना के घलो मुंदरी ल,
झोकेस नई तेहर केंवट,
लुहु तोर ले लहुटति बेरा म"

"आगु चलदेस मोर तय बनवासी राम
बनवास चौदह बच्छर तोला मिले हे"

TREES

Poetess- Chani Airy

Trees trees trees.
Don't cut the trees.
If you cut the trees,
There will be pollution.
So please please please
don't cut the trees.
They are gift of god
but we treat them
like a man dog
save tree, save life.
So please please please
don't cut the trees...

कोरोना - नया रूप लेकर 102 साल पुराना दर्द

रचनाकार- नीरज त्यागी

आज पूरी दुनिया कोरोनावायरस से लड़ रहा है. ये वायरस लगभग सभी देशों में फ़ैल चूका है. पूरे दुनिया में कोरोना से संक्रमित मरीजों की संख्या लगातार बढ़ती ही जा रही है. कोरोनावायरस कि इस महामारी ने लोगों को 1918 के स्पेनिशफ्लू की याद दिला दी है. उस दौर में जिस तेजी से ये संक्रमण फैला था और जितनी मौतें हुई थी उससे पूरे दुनिया को हिला कर रख दिया था. 102 साल पहले पूरी दुनिया में स्पेनिशफ्लू के कहर से एक तिहाई आबादी इसकी चपेट में आ गयी थी. कम से कम पाँच से दस करोड़ लोगों की मौत इसकी वजह से हुई थी. रिपोर्ट के मुताबिक इस फ्लू के कारण भारत में कम से कम 1 करोड़ 55 लाख लोगों ने जानें गवाईं थी.

स्पेनिश फ्लू की वजह से करीब पौने दो करोड़ भारतीयों की मौत हुई जो विश्व युद्ध में मारे गए लोगों की तुलना में ज्यादा है. उस वक्त भारत ने अपनी आबादी का छह फीसदी हिस्सा इस बीमारी में खो दिया था. मरनेवालों में ज्यादातर महिलाएँ थीं. ऐसा इसलिए हुआ था क्योंकि महिलाएँ बड़े पैमाने पर कुपोषण का शिकार थी. वो

अपेक्षाकृत अधिक अस्वच्छ एवं अस्वस्थ माहौल में रहने को मजबूर थी. इसके अलावा नर्सिंग के काम में भी वो सक्रिय थी.

ऐसा माना जाता है कि इस महामारी से दुनिया की एक तिहाई आबादी प्रभावित हुई थी और करीब पाँच से दस करोड़ लोगों की मौत हो गई थी. गांधी जी और उनके सहयोगी किस्मत के धनी थे कि वो सब बच गए. हिंदी के मशूहर लेखक और कवि सुर्यकांत त्रिपाठी निराला की बीवी और घर के कई दूसरे सदस्य इस बीमारी की भेंट चढ़ गए थे. उन्होंने बाद में इस सब घटना चक्र पर लिखा भी था कि मेरा परिवार पलक झपकते ही मेरी आँखों से ओझल हो गया था. वो उस समय के हालात के बारे में वर्णन करते हुए कहते हैं कि गंगा नदी शवों से पट गई थी. चारों तरफ इतने सारे शव थे कि उन्हें जलाने के लिए लकड़ी कम पड़ रही थी. ये हालात तब और खराब हो गए थे जब खराब मानसून की वजह से सुखा पड़ गया और आकाल जैसी स्थिति बन गई. इसकी वजह से बहुत से लोगो की प्रतिरोधक क्षमता कम हो गई थी. शहरों में भीड़ बढ़ने लगी. इससे बीमार पड़ने वालों की संख्या और बढ़ गई.

बॉम्बे शहर इस बीमारी से बुरी तरह प्रभावित हुआ था. उस वक्त मौजूद चिकित्सकीय व्यवस्थाएं आज की तुलना में और भी कम थीं. हालांकि इलाज तो आज भी कोरोना का नहीं है लेकिन वैज्ञानिक कम से कम कोरोना वायरस की जीन मैपिंग करने में कामयाब जरूर हो पाए हैं. इस आधार पर वैज्ञानिकों ने टीका बनाने का वादा भी किया है. 1918 में जब फ्लू फैला था. तब एंटी बायोटिक का चलन इतने बड़े पैमाने पर नहीं शुरू हुआ था. इतने सारे मेडिकल उपकरण भी मौजूद नहीं थे जो गंभीर रूप से बीमार लोगों का इलाज कर सके. पश्चिमी दवाओं का इस्तेमाल भी भारत की एक बड़ी आबादी नहीं किया करती थी और ज्यादातर लोग देसी इलाज पर ही यकीन करते थे.

इन दोनों ही महामारियों के फैलने के बीच भले ही एक सदी का फांसला हो लेकिन इन दोनों के बीच कई समानताएं दिखती हैं. संभव है कि हम बहुत सारी जरूरी चीजें उस फ्लू के अनुभव से सीख सकते हैं. उस समय भी आज की तरह ही बार-बार हाथ धोने के लिए लोगों को समझाया गया था और एक दूसरे से उचित दूरी बनाकर ही रहने के लिए कहा गया था. सोशल डिस्टेंसिंग को उस समय भी बहुत अहम माना गया था और आज ही की तरह लगभग लॉकडाउन की स्थिति उस समय भी थी इतने सालों बाद भी वही स्थिति वापस हो गई है.

स्पेनिशफ्लू की चपेट में आए मरीजों को बुखार, हड्डियों में दर्द, आंखों में दर्द जैसी शिकायत थीं. इसकी वजह से महज कुछ दिन में मुंबई में कई लोगों की जान चली गई. एक अनुमान के मुताबिक जुलाई 1918 तक 1600 लोगों की मौत स्पैनिशफ्लू से हो चुकी थी. केवल मुंबई इससे प्रभावित नहीं हुआ था. रेलवे लाइन शुरू होने की वजह से देश के दूसरे हिस्सों में भी ये बीमारी तेजी से फैल गई. ग्रामीण इलाकों से ज्यादा शहरों में इसका प्रभाव दिखाई दिया.

बॉम्बे में तेजी से फैलने के बाद इस वायरस ने उत्तर और पूर्व में सबसे ज्यादा तांडव मचाया. ऐसा माना जाता है कि दुनियाभर में इस बीमारी से मरने वालों में पांचवां हिस्सा भारत का था. बाद में असम में इस गंभीर फ्लू को लेकर एक इंजेक्शन तैयार किया गया, जिससे कथित तौर पर हजारों मरीजों का टीकाकरण किया गया. जिसकी वजह से इस बीमारी को रोकने में कुछ कामयाबी मिली.

हालांकि बाद में कुछ बाते सामने आई. सन 2012 की एक रिपोर्ट से पता चलता है कि भारत के जिन हिस्सो में अंग्रेजो की ज्यादा बसावत थी. उन हिस्सों में इस बीमारी ने ज्यादा कहर मचाया था. इन हिस्सो में भारतीय इस महामारी में सबसे अधिक मारे गए थे. अब एक बार फिर से कोरोना के बढ़ते कहर की वजह से लोग बेहद आशंकित हैं. फिलहाल सरकार और दूसरी संस्थाएं लगातार लोगों को इस गंभीर वायरस से बचाव को लेकर कोशिश में जुटी हुई हैं.

आखिरकार गैर सरकारी संगठनों और स्वयं सेवी समूहों ने आगे बढ़कर मोर्चा संभाला था. उन्होंने छोटे-छोटे समूहों में कैंप बना कर लोगों की सहायता करनी शुरू की. पैसे इकट्ठा किए, कपड़े और दवाइयां बांटी है. नागरिक समूहों ने मिलकर समितियां बनाईं. एक सरकारी रिपोर्ट के मुताबिक, "भारत के इतिहास में पहली बार शायद ऐसा हुआ था जब पढ़े-लिखे लोग और समृद्ध तबके के लोग गरीबों की मदद करने के लिए इतनी बड़ी संख्या में सामने आए थे.

आज की तारीख में जब फिर एक बार ऐसी ही एक मुसीबत सामने मुंह खोले खड़ी है तब सरकार चुस्ती के साथ इसकी रोकथाम में लगी हुई है लेकिन एक सदी पहले जब ऐसी ही मुसीबत सामने आई थी तब भी नागरिक समाज ने बड़ी भूमिका निभाई थी. जैसे-जैसे कोरोनावायरस के मामले बढ़ते जा रहे हैं, इस पहलू को भी हमें ध्यान में रखना होगा और सभी लोगो को मिलकर इस बीमारी की लड़ाई में आगे बढ़ना होगा.

कोरोना

रचनाकार-भूमिकाराय

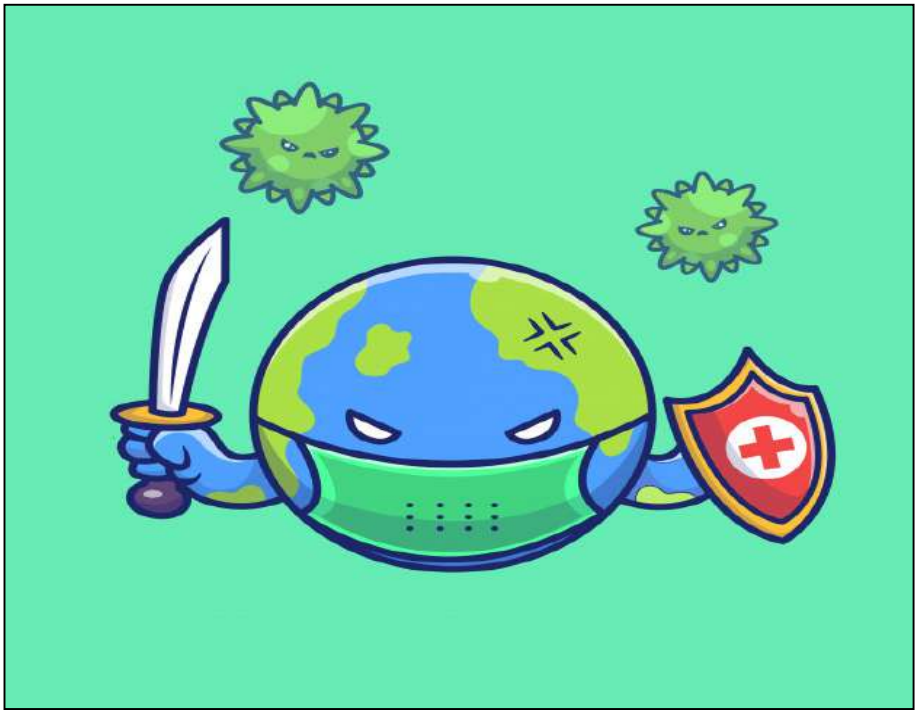

ध्यान रखें अपना सभी
ध्यान रखें औरों का भी
चुपचाप बैठें घर में सभी
निकलें ना घर से अभी
कोरोना है रास्ते में खड़ी
कोरोना को हराना है
घर में ही जश्न मनाना है
निकलो ना घर से सभी
उल्लंघन ना करो कभी

पढ़ना आसान है मेरे भाई

रचनाकार-सीमांचल त्रिपाठी

पढ़ना आसान है मेरे भाई
पढ़ना आसान है मेरे भाई

राज्य शासन की नई शिक्षा नीति आई
पढ़ाई तुंहर दुआर शिक्षा पोर्टल पर आई

प्ले स्टोर में जाकर जूम एप्प को डाउनलोड करना है
ऑनलाइन विषय वस्तु को समझना है

सी जी स्कूल डॉट इन मे जाओ
छात्र और गुरुजी सब पंजीयन करो

ऑनलाइन शिक्षा निःशुल्क है
घर बैठे विषय वस्तु को पढ़ो

ऑनलाइन पढ़ाने पर मानदेय मिलना तय है
घर बैठे वीडियो अपलोड करना आसान है

सभी गुरुजी को संकल्प लेना है
छात्र हित में पठन को आसान करना है

प्यारे बच्चे

रचनाकार-अलका राठौर

पेड़ पर जैसे चिड़िया चहचहाते
वैसे शाला में चहचहाते मेरे बच्चे
ठाठ नवाबी,चाल मस्त शरारती
बेफ़िक्री की मौज,दिल के सच्चे

कुछ को कापी,किताब ही भाता
कुछ के लिए सरदर्दी बन जाता
कुछ को पसंद है, खट्टे मीठे बेर
कुछ को पसंद गोलगप्पे का ढेर

कोई आता सूट बुट में,
कोई कल के नाइट सूट में
किसी के सपटे चमकीले बाल
किसी के उलझे बिखरे बाल

किसी में किताबों के ज्ञान की जिज्ञासा,
किसी में बस खेलने की अभिलाषा
कोई सबसे बस मित्रता निभाता,
कोई सबका बस सत्रू बन जाता

जैसे भी हैं , पर दिल के हैं सच्चे,
शाला में, हंसते गाते मेरे बच्चे
ठाठ नवाबी,चाल मस्त शरारती,
बेफ़िक्री की मौज,पर दिल के सच्चे

समाचार

रचनाकार- महेन्द्र देवांगन माटी

कोरोना वायरस के बारे मे बच्चों को जानकारी दिया गया

पंडरिया - देश में बढ़ते हुए कोरोना वायरस के खतरे को देखते हुए शा प्राथमिक शाला डोमसरा में इनसे बचने के उपाय के बारे में बच्चों को जानकारी दी गयी क्योंकि जानकारी ही बचाव है.

इस अवसर पर विद्यालय के शिक्षक श्री महेन्द्र देवांगन माटी ने बच्चों को बताया कि अपने हाथ,पैर,मुँह को अच्छी तरह साबुन से धोना चाहिए.

खाँसते या छींकते समय मुँह में रुमाल रखना चाहिए.

सर्दी खाँसी बुखार आने पर तुरंत डॉक्टर से इलाज कराना चाहिए.

किसी से हाथ न मिलायें बल्कि नमस्ते करके अभिवादन करना चाहिए.

सार्वजनिक स्थानों पर थूकना नहीं चाहिए.

फल को पानी से धोकर खाना चाहिए.

साफ सफाई का ध्यान रखना चाहिए.

इस अवसर पर विद्यालय के प्रधान पाठिका श्रीमती विश्वलता मानिकपुरी भी बच्चों को भी साफ सफाई के बारे में जानकारी दिये.

दया करो माँ

रचनाकार-महेन्द्रदेवांगन माटी

दीन हीन हम बालक माता, पास तुम्हारे आए.
दया करो हे अम्बे माता, और कहाँ कोई जाए.

विपदा में हम पड़े हुए हैं, अब तो हमें बचाओ.
अंधकार सब दूर करो माँ, राह नई दिखलाओ.

दीप जलाऊँ मन के माता, उर आनंद छा जाए.
हो उजियारा जग में तेरे, हृदय सुमन खिल जाए.

.

भटक गया है मानव अब तो, पापी बढ़ते जाएं.
करें दिखावा भोलेपन का, मन सबका भरमाएं.

कर उद्धार सभी का माता, तेरे ही गुण गाएं.
दया करो हे अम्बे माता, और कहाँ हम जाएं.

O My Dear

Poet- Tikeshwar Sinha "Gabdiwala"

O my dear!
Come here,
A tree near,
Look at dear,
They are nine
In the sunshine,
Stand in line,
And so fine,
Jumping long,
Singing song,
Ping pong,
Ping pong!

कोरोना के जाल

रचनाकार-प्रिया देवांगन प्रियू

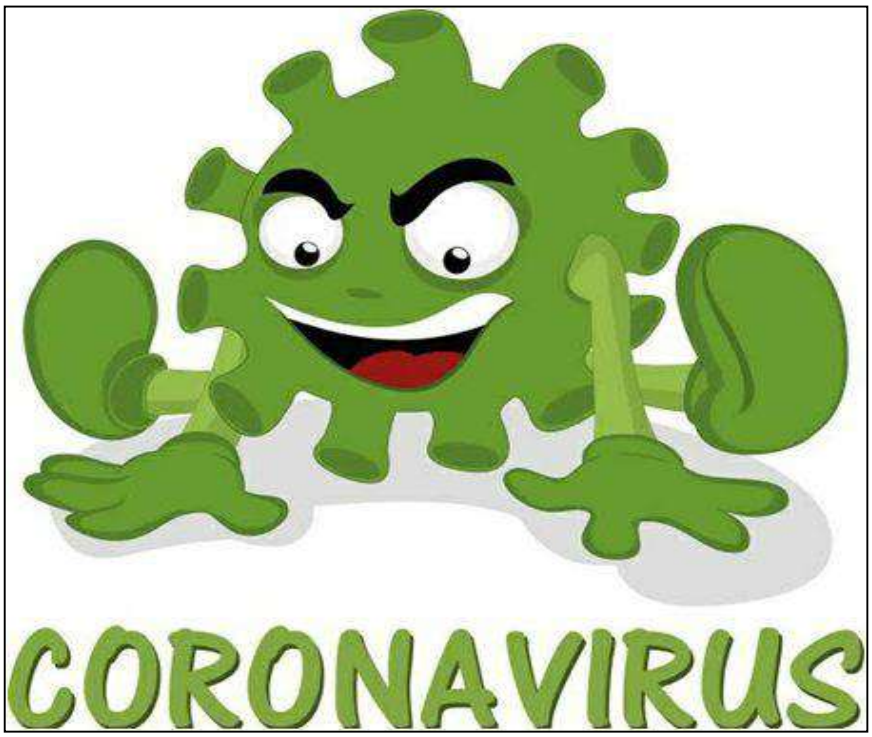

माहौल है बदला बदला, चारो तरफ है सुनसान.
इतने सारे भोजन पानी का, हो गया है नुकसान.

कोरोना ने चारों तरफ, अपना राज जमाया है.
टीवी चैनल समाचारों में, हर जगह पर छाया है.

बेटी की शादी है आज, कोई नही आया है.
वायरस के चक्कर मे, कोई भोजन नही खाया है.

पंडित जी आये है, बड़ी मुश्किल से आज.
जल्दी जल्दी मंत्र पढ़ के, निपटा रहे है काज.

मास्क लगा कर दूल्हा बैठा, मास्क लगाये बराती.
बैठे बैठे देख रहे, क्या करे घराती.

चली गयी बिटियां रानी, आज अपनी ससुराल में.
माँ बाप चिंता में बैठे, बिटियाँ होगी किस हाल में.

कोरोना के वायरस ने, कैसा जाल बिछाया है.
वैज्ञानिक भी परेशान हैं, कुछ समझ न आया है.

प्यारे बच्चों

रचनाकार-रीता गिरी

प्यारे बच्चों तुम्हारी नटखट नादानियां,
जब भी स्मृति पटल पर आती हैं.
हर शिक्षक के मन, मस्तिष्क और हृदय में,
अलौकिक मुस्कान छा जाती है.
तुम्हारी हर शैतानियां हमें चिंतित कर जाती है,
तुम्हारे उज्जवल भविष्य की चिंता बहुत सताती है.
कक्षा में अध्यापन के समय तुम्हारे मन मस्तिष्क,
भ्रमण पर निकल जाते हैं.
कुछ पूछने पर मासूमियत से कहना,
मैडमजी/सर जी हमें समझ नहीं आया है.
सांस्कृतिक कार्यक्रम और खेल कूद के समय,
सबके मन हर्षित हो उठते हैं.
मानों नृत्य गान, खेल कूद,
तुम्हारे रग रग में बसते हैं.
आपस में लड़-झगड़ कर,

शिकायत करने पहुंच जाते तुम.
तुम्हारी बातों को सुनकर,
हंसी रोक नहीं पाते हैं हम.
विद्यालय परिवेश में घुल-मिल कर,
अभिन्न अंग बन जाते हो.
अध्ययन पूर्ण होने पर,
विद्यालय छोड़कर चले जाते हो.
विद्यालय परिवार है बनता,
इन्ही खट्टी-मीठी बातों से.
हमारा मन भी ओत-प्रोत और भाव विभोर,
हो उठता तुम्हारी प्यारी यादों से .
विद्यालय परिवार की ओर से,
तुम सबको आशीर्वाद मिले.
जहां जिस क्षेत्र में जाओ,
यश कीर्ति और सम्मान मिले.
छू लो बड़े से बड़े सोपानों को,
परचम लहराओ विद्यालय का.
अपने कर्मों के तूफानो से,
सम्मान बनो विद्यालय का.
इस रचना के माध्यम से,
मेरी ये अभिलाषा है.
अपने अंदर की क्षमता जानो,
अपनी प्रतिभा को पहचानो.
निश्चित ही तुम सामान्य नहीं हो,
अपनी विशिष्टता को प्रखर करो.
सुयश बनो विद्यालय का,
सम्मान बनो विद्यालय का.

पढ़ेंगे पढ़ाएंगे - जल जरूर बचाएंगे

रचनाकार- यशवंत कुमार चौधरी

बच्चे प्रतिदिन विद्यालय पहुंचते और सीखते- सीखते समय गुजारते. खाने की छुट्टी में खाना खाते और बॉटल से पानी भी पीते. छुट्टी होती तो घर चले जाते. घर में माताजी बॉटल में बचे पानी को निकाल कर बाहर फेंक देती. यह रोज की बात थी.

एक बच्चे ने न्यूजपेपर में पढ़ा कि लगातार भू जल स्तर घटने लगा है, जिससे बोर,हैण्डपंप, कुएं सूखने लगे हैं. पानी की कमी के कारण बहुत सारे पेड़-पौधे, पक्षी-जानवर मरते जा रहे हैं. इस समाचार ने बच्चे को अन्दर से झकझोर दिया. उसे इसके बारे में सोचने को मजबूर कर दिया. अपने आसपास के क्षेत्र में भ्रमण से उसे पानी की कमी और उसका प्रभाव महसूस होने लगा. पर कहते हैं ना कि जहां चाह-वहां राह

गहन चिंतन के बाद बच्चे को इस भीषण समस्या के अंधेरेपन में एक रोशनी की किरण दिखाई पड़ी.

क्यूँ ना हम सब पानी बचाने का प्रयास करें उसने कक्षा में अपने सहपाठियों से पानी की समस्या से अवगत कराते हुए कहा, क्यों ना हम सब भी मिलकर पानी बचाएँ ?

एक बच्चे ने तपाक से पूछा कि- कैसे बचाएँ पानी?

उसने कहा- क्यूं ना हम सब अपने- अपने बॉटल में बचे पानी को रोज इकट्ठा करें और इसका उपयोग पेड़ -पौधों और पक्षी- जानवरों के लिए करें.

एक बच्चे ने कहा,चलो यह बात टीचर जी को बताते हैं. उनकी मदद लेकर हम आगे बढ़ेंगे.

सब मिलकर अपने स्कूल के टीचर से मिले और उन्हें अपनी सोच बताई. टीचर ने बच्चों को इस सोच के लिए शाबाशी दी. उन्होंने कहा कि आप सबके लिए मैं छुट्टी के समय सीढ़ियों के नीचे खाली बाल्टी रख दिया करूंगा. आप सब अपने बॉटल के बचे पानी को इसमें डालते जाना और जब भर जाएगा तो मैं इसे एक टंकी में इकट्ठा करता जाऊंगा. जरुरत के हिसाब से इसका सदुपयोग करेंगे.

कक्षा के बच्चों ने पानी इकट्ठा करना शुरु कर दिया. कुछ दिनों बाद बच्चों ने देखा कि स्कूल के आसपास बहुत सारे पक्षी उड़ रहे हैं. उन्होंने टीचर से पूछा, आज अचानक इतने सारे पक्षी स्कूल के आसपास कैसे ?

शिक्षक ने बच्चों को छत पर ले जाकर नजारा दिखाया और फिर बताया कि मैंने आप सबके बचाए हुए पानी को छत पर अलग- अलग जगहों पर बरतनों में रख दिया. ये सब अपनी प्यास बुझाने यहाँ आए हैं.

देखते ही देखते बच्चों को सब समझ में आ गया. बच्चों के इस अभियान में अन्य कक्षाओं के बच्चों –शिक्षकों ने भी साथ दिया जिससे कुछ ही दिनों में स्कूल की बगिया खिल उठी और आसपास के जानवरों के लिए भी पानी की व्यवस्था हो गई.

अब स्कूल में हरियाली ही हरियाली थी. बच्चे -शिक्षक सब खुश –खुश नजर आने लगे और स्कूल में चिड़ियों का रैन बसेरा होने लगा. अब चिड़ियों की चहचहाहट और खुशनुमा माहौल में पढ़ाई होने लगी.

बच्चों ने इस मुहीम को और आगे बढ़ाया और अपने पालकों को इसके लिए प्रेरित किया तथा अपने घरों में भी पानी बचाने की शुरुआत की. स्कूली बच्चों की यह पहल समाज में आकार लेने लगी. सबने इस नेक कार्य की सराहना की और सबकी सहज सहभागिता से जल- बचाव अब एक आन्दोलन का रूप लेने लगा. जल संरक्षण हमारा दायित्व ही नहीं वरन हमारा नैतिक कर्तव्य भी है.

कोरोना महामारी से सुरक्षा एंव बचाव

रचनाकार- पेश्वर राम यादव

पार करेंगे इस चुनौती को,
हर संभव कोशिश कर जायेंगे हम
हार न मानेंगे इस महामारी से,
इसे मात देकर जायेंगे हम.
करेंगे सब नियमों का पालन ,
न निकलेंगे न मिलेंगे किसी से,
छुए अगर किसी चीज़ को तब
झटपट हाथ धोकर आएंगे हम.
दूर रहेंगे अफवाहों से,
लोगों को यह समझायेंगे हम.
देश की रक्षा करने वालों का
मिलकर हौसला बढ़ाएंगे हम.
स्वच्छ रहेंगे स्वस्थ्य रहेंगे,
हर कोशिश कर जायेंगे हम.
हार न मानेंगे इस महामारी से,
इसे मात दे जायेंगे हम.

कोरोना

रचनाकार- गीता खूंटे

देख लिया हमने तेरा कुरुप चेहरा
तूने तो हमारी सांसो पर ही लगा दिया पहरा
कैसी बन पड़ी है आफत तू लाइलाज बीमारी
बरपा रहा कहर पड़ रहा तू दुनिया पर भारी
सिमट गई है दुनिया सब की चार दीवारी के अंदर
क्या बच्चे क्या बूढ़े किसी ने ना देखा ऐसा मंजर
गली और मोहल्ले चुपचाप पड़े हैं
दहशत हुई ऐसी दरख़्त भी मौन खड़े हैं
कब तक सताएगा कब तक रुलाएगा
कब तक फैलाएगा अपना प्रकोप
पूरी तैयारी से तैनात खड़े हम भी
कोई नहीं यहां डरपोक
जीतेंगे जंग तुमसे ठीक होगा सब
रहेंगे घरों पर करके पालन लाक डाउन का जब

खतरा है बड़ा मंजिल नहीं पास
मिलकर करेंगे बाधा पार छोड़ेंगे नहीं आस
हाथ में हाथ लिए आज साथ खड़ी दुनिया सारी
हारेगा कोरोना हम सब पड़ेंगे उस पर भारी

स्वच्छता

रचनाकार- यशवंत कुमार चौधरी

एक दिन की बात है. शाम का वक्त था. लोग रोज की तरह घर के बाहर गलियों में टहल रहे थे. बच्चे खेलकूद में मगन थे. मैं भी अपने बेटे आर्यन के साथ खेलने में व्यस्त था.

कुछ देर बाद आर्यन ने पास दुकान की ओर नजर डाली और आशा भरी दृष्टि से मेरी और देखते हुए कहा, पापा जी, चलिए ना...

मैंने बालपन की चाहत को सहज स्वीकार करते हुए हामी भर दी. दुकान पहुंचकर मैंने आर्यन से पूछा- क्या लेना है? आर्यन ने मधुर मुस्कान के साथ अपनी हाफ पेंट की जेब से चाकलेट का एक रेपर निकाला और दिखाते हुए कहा – ऐसा वाला चाकलेट.

दुकानदार ने प्यार से पूछा –कितना लोगे?

आर्यन ने मेरी तरफ देखते हुए कहा – पापा जी, पाँच.

दुकानदार ने आर्यन की मनपसंद पाँच चाकलेट उसे दे दी. आर्यन की खुशी का ठिकाना न रहा.

उसने कहा,पापा जी, इसको अभी खाऊँगा, इसको कल सुबह और बाकी को कल शाम में खाऊँगा. मैंने उसे हर्षित देख, हाँ में हाँ मिलाता रहा.

हमने दुकानकार को पैसे दिए और घर की ओर वापस लौट चले. मैंने देखा कि आर्यन ने पहले वाले चाकलेट रैपर को अपनी जेब में फिर से रख लिया.

मैंने कहा बेटा - चाकलेट के रैपर को फेंक दो.

आर्यन ने कहा –नहीं यह हमारा है?

मुझे समझ में नहीं आ रहा था आखिर वह चाकलेट का रैपर फेंक क्यों नहीं रहा है. हम दोनों घर आ गये. उसने घर में रखे डस्टबीन में धीरे से रैपर डाला और फिर वही वाक्य दुहराया, पापा जी, यह हमारा है ना?

मैंने कहा -हाँ.

मुझे समझ में आया कि हम जिन्हें बच्चे कहते हैं उन्हें जिम्मेदारी लेना खूब आता है. आर्यन ने यह संदेश दिया कि रैपर को सुरक्षित डस्टबीन में रखने की जिम्मेदारी हमारी अपनी होती है.

मेरे मन में विचार आ रहा था, बच्चे मन के सच्चे होते हैं. हमें उनकी अच्छी सोच का सम्मान करना चाहिए.

जामझरिया जाना है

रचनाकार- कु. मनीषा, कक्षा- चौथीं, शा. प्राथमिक शाला – जामझरिया

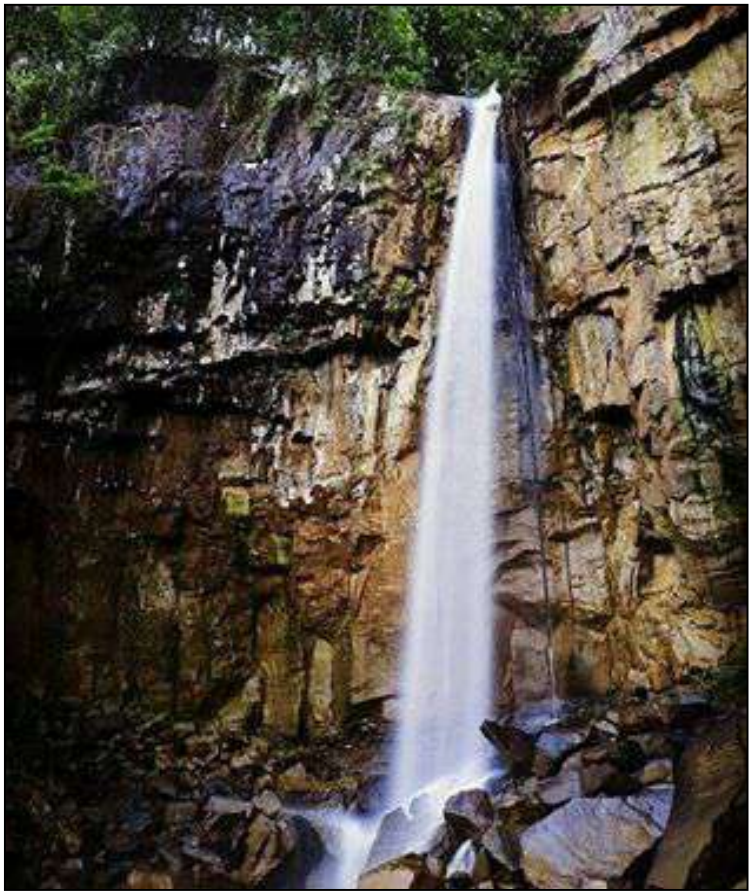

जामझरिया जाना है हमकों
जामझरिया जाना है,
जामझरिया जाकर मस्ती का
रंग जमाना है

जामझरिया जिसमें बच्चों की
इक दुनिया है प्यारी,
खेल कूद ,के साथ पढ़ाई में
खुशियां बिखरी सारी .

जामझरिया है अलग सभी से
रंग, रंग,बस रंग ,
जामझरिया में है जीने का
एक नया ही ढंग.

जामझरिया में तो सपनों का
ताना - बाना है,
जामझरिया से अजी हमारा
प्यार पुराना है.

जीवन

रचनाकार- यशवंत कुमार चौधरी

हमने तो बस इतना जाना.
जीवन क्या है, खोना- पाना.
मैल नहीं है जिसके दिल में.
अपना तो उससे याराना.

मस्त रहा करते हैं हम.
वीरान हो चाहे अपनी बस्ती.
संग सभी के खुशी से रहना.
मिटे कभी ना अपनी हस्ती.

थे पहले सच्चे लोग सभी.
अब तो हर कोई है सयाना.
कुछ तो होगा तेरे दिल में.

प्यार ना सही हमने माना.

काश कभी वो पल भी आए
कंधा तेरा हो सिरहाना .
खुद को बहलाने की खातिर.
उम्मीदें हैं एक बहाना.

छोड़ यहीं पर अपना सब कुछ.
सबको है एक दिन जाना.
नोट कमाती सारी दुनिया.
अपनी ख्वाहिश नाम कमाना.

गैर हुआ है आज वही.
जो था अपना यार पुराना
तुम जो सच लिखते हो.
दिया है इस पर, सबने ताना.

अच्छा लगता है मुझको तो.
बस तुमको यह बतलाना.
है पुरानी आदत सबकी.
गलती करके, फिर पछताना.

गर सफलता पानी है तो.
मुश्किल से फिर क्या घबराना.
हमने तो बस इतना जाना.
जीवन क्या है खोना -पाना.

कोरोना मुक्त भारत

रचनाकार- शशि पाठक

कोरोना को रोकने हेतु,
सबको सजग बनाना है
डरकर नहीं सावधानी रखकर,
कोरोना मुक्त भारत बनाना है
भाई बहन सभी समझ गए,
साबुन से हाथ धोना है
आंख, नाक ,मुँह को ना छूकर,
कोरोना को दूर भगाना है
जब भी मिलें कभी किसी से,
हाथ नहीं मिलाना है
हाथ जोड़ अभिनंदन करके,
भारत का मान बढ़ाना है

जनता कर्फ्यू सफल बनाकर ,
राष्ट्रहित कर जाना है
सजग रहें, सतर्क रहें अब ,
यह जागरूकता फैलाना है
आ गया है समय सभी को,
अपना फर्ज निभाना है
स्वस्थ बनें,व्यायाम करें
भारत को स्वस्थ बनाना है

श्यामपट्ट: शिक्षक का मित्र

रचनाकार- डॉ शिप्रा बेग

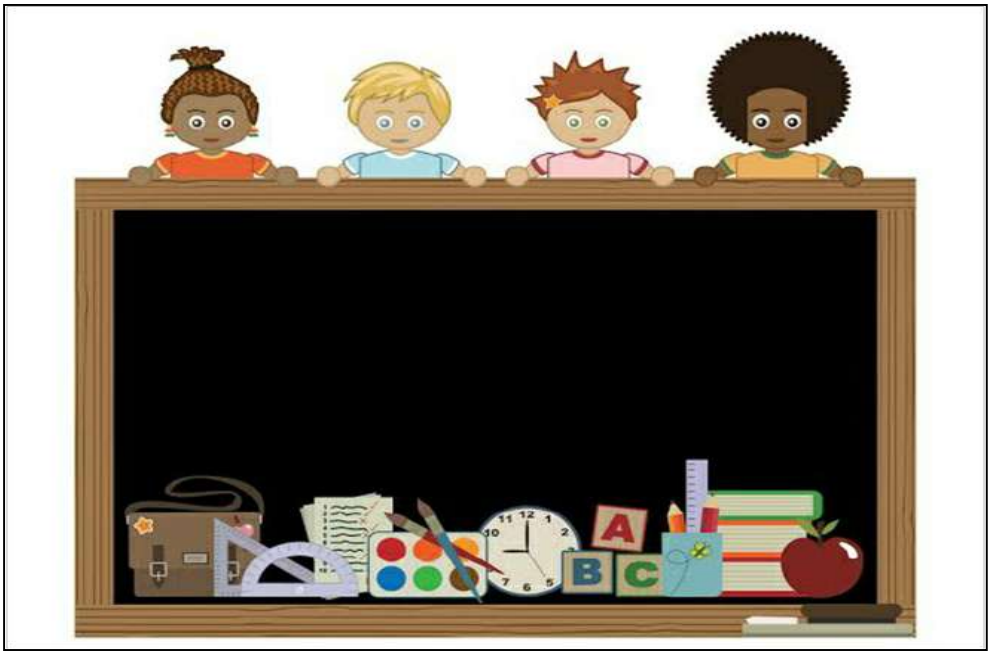

डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम ने कहा है कि **"ब्लैक बोर्ड का रंग काला होता है जो भावनात्मक रूप से बुरा होता है परन्तु हर ब्लैक बोर्ड विद्यार्थियों का जीवन उज्ज्वल बनाता है. "**

एक शिक्षक की पहचान, चाक और डस्टर से होती है, जिस का प्रयोग वह श्याम पट के लिए करता है. चाक और डस्टर के बिना श्यामपट अधूरा है. बचपन से लेकर आज तक हम सभी अपने स्कूलों में कक्षा की एक दीवार पर इसे देखते आए हैं. आज मेरे द्वारा जो लिखा जा रहा है, शायद वह भी श्यामपट की ही देन है.

जितना वह शिक्षकों का मित्र है उतना ही विद्यार्थियों का भी. कक्षा की मौन चार दीवारी में एक काला श्यामपट हमेशा मुखर रहता है. कितने विषयों, कितने चित्रों और कितनी विधाओं को अपने में समेटता, एक स्थान पर अटल किन्तु सत्य बन कर खड़ा है. छात्र बदलते हैं, शिक्षक बदलते हैं पर श्यामपट उसी स्थान पर अविचल, सबकी तकदीर लिखता रहता है.

श्यामपट शिक्षक के लिए प्रतिदिन एक ज़रूरी दोस्त बनकर उसके शिक्षण कौशल को बढ़ाता है, बच्चों के अधिगम को सरल और सहज बनाता है और शिक्षक के अध्यापन कौशल के विकास के मार्ग को प्रशस्त करता है.

समय के साथ श्यामपट का स्थान व्हाइटबोर्ड और ग्रीनबोर्ड ने ले लिया है. शायद यह समय की माँग हो सकती है. परंतु आज भी श्यामपट के बिना शिक्षक अधूरा है. समय कितना भी आगे चला जाए, शिक्षक का व्यक्तित्व श्यामपट की पृष्टभूमि में ही निखरता संवरता रहेगा, हमेशा.

बेटी तुम महान हो

रचनाकार- महेत्तर लाल देवांगन "राजू"

बेटी तुम महान हो
बेटी तुम आन हो
जग का तुम मान हो,
पिता का अरमान हो
बेटी तुम महान हो

भाई का दुलार हो
बिंब हो आधार हो
घर का सम्मान हो
बेटी तुम महान हो

बेटी तुम बढ़े चलो
नवीन पथ गढ़े चलो
तुम आन हो, शान हो
बेटी तुम महान हो

जब माँ बन जाती हो
ममता तुम लुटाती हो,
तुम विधि हो, विधान हो
बेटी तुम महान हो

तुम लक्ष्मी हो, शारदे
रूप दुर्गा का निखार ले
तुम कवि का गान हो
बेटी तुम महान हो

तुम करुणा का रूप हो
तुम दीप हो, धूप हो
दया, क्षमा की खान हो
बेटी तुम महान हो

बेटी तुम संस्कार हो
देवी का अवतार हो,
तुम ज्ञान हो, विज्ञान हो
बेटी तुम महान हो

चित्र देखकर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको कहानी लिखने के लिये यह चित्र दिया था

इस चित्र पर हमें कहानियाँ प्राप्त हुई हैं, जो हम नीचे प्रकाशित कर रहे हैं

हाथीराजा

लेखक- सुभाष राजवाड़े, कक्षा- 9वीं, शा उ मा वि कनकी, करतला, कोरबा

कोरबा जिले के कनकी गांव के पास एक छाता नाम का घना जंगल था. जिसमें शेर, हाथी, जिराफ, बंदर और अनेक प्रकार के जीव-जंतु रहते थे. उस जंगल में रहने वाले जीव-जंतु एक-दूसरे से हमेशा प्रेम की भावना रखते थे. वे कभी भी एक दूसरे का अहित नहीं होने देना चाहते थे. वे हमेशा एक दूसरे की मदद किया करते थे. एक वर्ष अचानक उस जंगल में अकाल पड़ गया. सभी जानवर भोजन की तलाश में इधर-उधर भटकने लगे और भूख के मारे तड़प रहे थे. उस जंगल में एक बड़ा सा तालाब भी था जिसमें एक मगरमच्छ रहता था. वह मगरमच्छ दिनभर पानी में रहता था लेकिन जब अकाल के कारण तालाब का पानी सुख गया वह पानी के बिना तड़पने लगा, उसका हाल बेहाल हो गया था. तालाब से बाहर आकर जानवरों को खाने लगा. छोटे जानवरों ने एक बुढ़े हाथी से शिकायत की जो बहुत ही बुद्धिमान और सज्जन हाथी था. उसने अकाल पड़ जाने के कारण के बारे में विचार विमर्श करना शुरू किया तो उसे समझ आया कि यह सब इंसानो के द्वारा पेड़ों की लगातार कटाई करने के कारण हो रहा है. उस सज्जन हाथी ने जंगल में एक सभा बुलाई और कहा कि जंगल में अकाल पड़ने का कारण मनुष्यों के द्वारा वृक्षों की लगातार कटाई है. हमें लोगों को जंगल में आने से रोकना होगा ताकि वे इस जंगल के वृक्षों को ना काट सके. उन्होंने लकड़हारों को डराया. शेर ने अपनी भयानक गुर्राहट से लोगों को भयभीत कर दिया जिससे कि लोगों का जंगल में आना बंद हो जाए. ग्रीष्म ऋतु खत्म ही होने वाला था. जैसे वर्षा ऋतु प्रारंभ हुआ, उस जंगल के सारे जीवों ने पेड़ लगाना शुरू कर दिया जिससे कि जंगल फिर से घना हो जाए. देखते ही देखते जंगल एक हरे - भरे एवं घने जंगल के रूप में परिवर्तित हो गया. अब अकाल की समस्या का निपटारा हो गया. उस जंगल के जानवरों को भोजन की तलाश में इधर-उधर भटकना भी बंद हो गया. सभी जीव-जंतु दोबारा प्रसन्न होकर आनंदपूर्वक जीवन बिताने लगे. फिर उस जंगल की रक्षा के लिए सभी जानवरों ने सज्जन हाथी को वहां का मुखिया चुन लिये. सज्जन हाथी ने सभी जानवरों को उनके अलग - अलग कार्यो के बारे में जानकारी दी और सभी को पर्यावरण संरक्षण के महत्व के बारे में बताया. अब वहाँ सभी जीव-जन्तु खुशी-खुशी जीवन बिताने लगे और प्रसन्न मन से अपने - अपने कार्यो को सुचारू रूप से करने लगे.

जैसी करनी वैसी भरनी

लेखक- संतोष कुमार कौशिक

एक जंगल का राजा हाथी रहता है. जिसके निर्देशन में उस जंगल के सभी जानवर व जीव-जंतु खुशी से अपने जीवन निर्वाह करते हैं. कुछ दिन पश्चात लोमड़ी और शेर दूसरे जंगल से भागकर आता है, जो अपने आप को असहाय वह दुःख दर्द की कहानी बता कर उस जंगल में रहने के लिए राजा से प्रार्थना करते है. फल स्वरुप राजा हाथी को उस पर दया आ जाती है. राजा हाथ अपने साथी जानवर से कहते हैं “बेचारे लोमड़ी और शेर दूसरे जंगल से हमारे जंगल में सहारा लेने के लिए आए हैं,असहाय व दुःखी है अगर हम एक दूसरे के दुःख को नहीं समझेंगे तो कौन समझेगा. "यह कहते हुए अपनी जंगल में उन दोनों को रहने के लिए आदेश देता है. जंगल के सभी जानवर अपने राजा के फैसले को मान्य करते हुए भाई-चारा से सभी उस जंगल में जीवन व्यतीत करते हैं.

कुछ दिन पश्चात जंगल में रहने वाले दूसरे जानवर अपने राजा हाथी से शिकायत करते हैं कि हमारे जंगल में छोटे-छोटे जीव-जंतु जैसे -चूहा, खरगोश,बिल्ली आदि दिखाई नहीं दे रहे हैं साथ ही दूसरे जंगल से भाग कर आए हुए लोमड़ी और शेर का व्यवहार उचित नहीं लग रहा है.

इधर राजा हाथी को चिंता हो रही थी कि जंगल में बारिश नहीं पड़ रही है. हर जगह बारिश हो रही है लेकिन हमारे जंगल में बारिश नहीं हो रही है जैसे कोई परीक्षा ले रहा है. इस वजह से जंगल धीरे-धीरे सूखने लग गया जंगल कला विहीन हो गया है. शाकाहारी जानवरों को खाना न मिलने के कारण भूख से बुरा हाल हो गया है. किस्मत में यही लिखा है,ऐसा सोचकर सूखे पत्तों से काम चलाने लगा. इस अकाल के बारे में चर्चा करने के लिए राजा हाथी के निर्देशन में जंगल के सभी जानवर एक जगह इकट्ठे हुए.

राजा हाथी ने कहा ”पता नहीं क्यों हर जगह बारिश हो रही है. लेकिन हमारे जमीन पर नहीं कुछ गड़बड़ लग रहा है. जिराफ जी इस समस्या का क्या हल है? ”जिराफ ने कहा-" राजा जी ! महर्षि मगर हमारे जंगल में धर्म के ज्ञाता है वह ही कुछ इसके बारे

में बता सकते हैं. "सभी जानवर महर्षि मगर से इसके बारे में बताने के लिए प्रार्थना करते हैं. महर्षि मगर ने थोड़ी देर अपनी आंखें बंद कर ली,फिर आंखें खोल कर कहा - "जंगल का मतलब है निर्मल और पवित्र जगह,जहाँ गंदगी केलिए कोई जगह नहीं है. जंगल में अच्छे जानवरों का रहना ही नियम है हमारे जंगल में इस नियम को तोड़ा गया है इसलिए बारिश नहीं हो रही है. "हम सभी को बादल के पास जाकर अपना दु:ख बताना चाहिए.

राजा ने उसके सलाह को उचित मानते हुए सभी जानवर के साथ दूसरे दिन सुबह जंगल पर छाए बादल से पूछने लगे-“हे बादल! तुम हमसे इस तरह नाराज क्यों हो गए हो,तुम्हारे दया से हमारा पेट भरता है,हमारे ऊपर क्रोध ना करो, शांत हो जाओ. ” बादल ने कहा-" हे राजा! आपके पवित्र जंगल में द्वेष,जलन, भेदभाव और दूसरे जानवरों को परेशान करने वाला जानवर है. आपका जंगल अपवित्र हो गया है. कुछ मूर्ख इस जंगल में घूम कर इसे अपवित्र कर रहा है. यह सब बहुत दिनों से चल रहा है, मुझे सहन नहीं हो रहा है इसलिए मैं ऐसा कर रहा हूं. जंगल में जब शांति होगी तभी बारिश होगी. राजा पूछते हैं वे कौन हैं बताओ बादल. वह कहता है “वे दो हैं. वे दोनोंअपनी गलती स्वीकार कर प्रायश्चित करे तो जंगल पहले की तरह हो जाएगा. ”सभी जानवर, दूसरे जंगल से आए हुए लोमड़ी और शेर को आश्चर्य से देखतें हैं.

लोमड़ी और शेर डर से कांपते हुए हाथ जोड़कर सभी को बताते हैं कि हम लोगों के द्वारा ही छोटे-छोटे जीव जंतु का भक्षण किया जाता था. हाथी राजा को हानि पहुंचाकर जंगल का राजा बनना चाहते थे. वास्तव में हम दोनों ने बहुत पाप किए हैं हमारी गलती क्षमा करने योग्य नहीं है. जिस राजा ने हमें आश्रय दिया उसी को मारने के लिए षड्यंत्र कर रहे थे इसलिए हमें जीने का कोई अधिकार नहीं यह कहते हुए पहाड़ की ओर दोनों भाग जाते हैं और फिर वह कभी वापस नहीं आते. उन दोनों जानवर के भाग जाने के पश्चात जंगल में बारिश होने लगती है और जंगल में चारों तरफ हरियाली छा जाती है. जानवरों की जिंदगी में फिर से सुख शांति आ जाती है.

शिक्षा:- कोई भी प्राणी जो भी अच्छा या बुरा कर्म करता है. उस कर्म के अनुसार उसका फल एक दिन अवश्य उसे मिलता है..

<u>लेखक- अतुल वर्मा, कक्षा सातवीं, शासकीय प्राथमिक शाला सुलौनी</u>

एक जंगल में एक शेर रहता था. उससे ताकतवर कोई नहीं था, जब कोई जानवर उस जंगल में आता तो उसका गर्दन दबोच कर खा जाता था. एक दिन उस जंगल में चार मित्र हाथी, बंदर, जिराफ और मगरमच्छ आए और वहीं रुक गए. चारों उस जंगल में खुशी से रहने लगे. एक बार बंदर ने जामुन खाते-खाते उस शेर को एक हिरण को खाते देखा,तो वह सोचने लगा कि वह हमें भी खा जाएगा. उसके बाद बंदर ने हाथी, जिराफ और मगरमच्छ को बताया. शेर के डर से जिराफ उस जंगल से चलने को कहा. हाथी और मगरमच्छ ने भी जाने के लिए हामी भर दी, किंतु बंदर ने बोला- हम शेर के डर से नहीं भागेंगे, तब हाथी गुस्से से बोला- हम उतना ताकतवर नहीं है. शेर झाड़ी में छुपकर सब कुछ देख रहा था,फिर वहां से चला गया. दूसरे दिन शेर ने उस बंदर को देखा और बोला- कि मैं तुम्हें खा जाऊंगा. बंदर ने एक चाल चली, तुम तो यहां के राजा हो तो तुम उस दूसरे शेर को मार दो फिर शेर बोला- तुम किस शेर की बात करते हो. तुम मुझे उस शेर के पास ले चलो उसे मारने के बाद तुम्हें खाऊंगा. बंदर शेर को तालाब के पास ले जाकर बोला- मुझे प्यास लगी है. पानी पीने के बहाने मगरमच्छ को ताक में बैठने को कह कर शेर से बोला- आप भी पानी पी लीजिए फिर आगे बढ़ेंगे. जैसे ही शेर पानी पीने के लिए तालाब में झुका मगरमच्छ ने शेर को अपनी जबड़ों में जकड़ लिया और मार डाला. इस प्रकार चारों दोस्तों की सूझबूझ,चतुराई और एकता की वजह से जान बच गई. फिर चारों खुशी-खुशी उसी जंगल में रहने लगे.

घमंडी मगरमच्छ

लेखक- विहान सिंह कंवर, कक्षा- दूसरी

एक जंगल था. उस जंगल में बहुत सारे जानवर शेर, हाथी भालू, हिरण,मगरमच्छ, जिराफ बाज,आदि बहुत से जानवर रहते थे. जंगल में एक ही तालाब था. जिसमें एक मगरमच्छ रहता था,जो बहुत ही घमंडी और बहुत ही क्रूर था. वह अपने आप को तालाब का राजा समझता था. जंगल के किसी भी प्राणी को वह तालाब में पानी नहीं पीने देता था. जो भी उस तालाब में पानी पीने जाता था वह उसे मार कर खा जाता था.

धीरे धीरे उस जंगल में जानवरों की संख्या घटने लगी. और देखते-देखते गर्मी का दिन भी आ गया. जिसे सभी जानवरों के सामने समस्या और गंभीर हो गई. जंगल के राजा शेर ने अचानक ही एक सभा बुलाई, और इस विषय पर चर्चा शुरू की. उन्होंने अपने मित्र बाज को भी इस सभा में बुलाया और उससे आग्रह किया कि मित्र यहां तो हम लोगों का जीना बड़ा दुभर हो गया है, तो कृपा करके तुम पास के जंगल में जाओ और वहां पता करके आओ कि वहां पानी के तालाब और है कि नहीं. बाज तुरंत अपने मित्र राजा शेर की आज्ञा मानकर पास के जंगल में गया, और आकर वहां की खबर राजा को बताई, की पास के जंगल में तो बहुत सारे ऐसे तालाब हैं.

तब जंगल के राजा शेर ने उपस्थित सभी जानवरों से कहा कि अब हमारा यहां रहना ठीक नहीं है यदि हम यहां रहेंगे तो प्यास के मारे मर जाएंगे और यदि पानी पीने जाएंगे तो मगर हमें मार डालेगा. इससे अच्छा तो यह होगा कि अब यह जंगल छोड़कर पड़ोस के जंगल में चले जाएं. सभी अपने राजा के इस निर्णय पर अपनी सहमति जताते हुए चलने को तैयार हो जाते हैं. और फिर दूसरे दिन सभी जानवर पास के जंगल में चले जाते हैं. दिन पर दिन बीतता जाता हैं इधर मगरमच्छ भी हैरान रहता हैं कि आजकल यहां पानी पीने कोई क्यों नहीं आता मैं किसे खाऊं. और वह कई दिनों से भूखा ही रह जाता है. भूख के कारण धीरे-धीरे उसकी प्राण ही निकल जाती है. इस तरह वह मर जाता है. और तालाब उस मगरमच्छ से मुक्त हो जाता है. फिर एक दिन राजा शेर अपने मित्र बाज को भेज कर उस जंगल के तालाब का पता लगाने के लिए कहता है.

बाज वहां जाता है और देख कर वापस आकर राजा को पूरी खबर बताता है. कि अब वह तालाब मगरमच्छ से मुक्त हो चुका है हम पुनः अपने घर जा सकते हैं. यह खबर सुनकर अन्य सभी जानवर खूब खुश हो जाते हैं. और खुशी-खुशी अपने घर की ओर वापस आ जाते हैं.

शिक्षा:- हमें कभी भी घमंड नहीं करना चाहिए.

लालची मगरमच्छ

लेखक- शानू पटेल कक्षा आठवीं, शा.पूर्व मा.शाला चंगोरा भाटा, रायपुर

एक समय की बात है. जंगल में एक पेड़ के नीचे चार दोस्त हाथी जिराफ बंदर और शेर रहते थे. आपस में कभी लड़ाई नहीं करते थे. उनका एक और मित्र भी था मगरमच्छ, जो बहुत कम आना-जाना करता था,क्योंकि अधिकतर समय उसे पानी में रहना पड़ता था. हाथी हमेशा जंगल से कंदमूल फल और केले आदि तोड़कर अपने दोस्तों के लिए लाया करता था और सभी बैठकर मज़े से बातें करते हुए उसे खाते रहते थे शेर भी मजे लेता था तथा समय होने पर वह अपने शिकार के लिए चला जाता था. तब एक दिन बंदर ने आम के पेड़ में कुछ पके हुए आम देखे तो उसे अपने दोस्तों की याद आ गई और वह बहुत सारे पके हुए आम तोड़कर लेकर आया और उसे छिपा कर रख दिया, ताकि वह अपने दोस्तों को अचानक अचंभित कर सके.

जब शाम को सभी दोस्त बैठे तब वह कहने लगा आज मैं भी कुछ सभी के लिए लेकर आया हूं देख कर तुम लोग खुश हो जाओगे ऐसा कहकर वह अपनी छुपाई हुई जगह पर पके आम खोजने लगा पर उसे नहीं मिला तब उसने कहा मेरे आम कौन ले गया,उसी समय मगरमच्छ वहां पर नदी के किनारे तैरते हुए आ गया और वह बोला मेरे पेट में बहुत ज्यादा दर्द हो रहा है मुझे कुछ दवाई दो कब बंदर को याद आया कि आम छुपाते वक्त मगरमच्छ ने देखा था उसने कहा तुम लालच में आकर हमारे सभी आमों को खा लिए और इसीलिए तुम्हारे पेट में दर्द हो रहा है.

फिर बंदर नहीं नीम के पत्तों को कूटकर उसका रस मगरमच्छ को पिलाया और मगरमच्छ का पेट दर्द ठीक हो गया और उसने अपने दोस्तों से माफी मांगी तथा कहा लालच का फल बुरा होता है यह मैंने आज जाना है.

लेखक- वसुन्धरा कुर्रे

एक बंदर रहता था. जिसका नाम दीनू था. वह बहुत ही चतुर निडर साहसी और दयालु था वह किसी भी चीज से नहीं डरता था बिंदास जंगल में घूमता फिरता था.

एक दिन उसकी मुलाकात एक जिराफ से हो गयी जिराफ शांत चुपचाप बैठा था दीनू उसे देख कर बोला भैया जिराफ भैया क्यों उदास हो जिराफ इधर उधर देखा कहीं कोई नहीं था फिर जिराफ ने पेड़ की ओर देखा पेड़ पर दीनू बंदर बैठा था जिराफ बोला क्या हुआ भाई क्यों पूछ रहे हो तब दीनू बोला आप गुमसुम क्यों हो तब जिराफ बोला क्या बताऊं भाई मैं अपने झुंड से अलग हो गया हूं दूर-दूर तक मेरे झुंड नहीं दिखाई दे रहे हैं अब मैं क्या करूं यह सुनकर दीनू बोला कोई बात नहीं मैं आपके साथ हूं आप आज से मेरे दोस्त हो मैं ऊंचे ऊंचे पेड़ पर चढ़कर दूर-दूर तक देखकर आपके झुण्ड को खोज निकाल लूंगा तब तक आप मेरे साथ रहना दोनों अच्छे से रहने लगे इनके बात को सुनकर पीछे झाड़ियों के झुरमुट में एक हाथी छिपा सुन रहा था कि देखो एक छोटा सा जानवर इस जिराफ को कैसे धर्य देकर अपना दोस्त बना लिया है या सुनकर हाथी के दिमाग में मन में विचार आने लगा और फिर सामने आया धीरे-धीरे दीनू और जिराफ के पास आ गया हाथी बोला आप दोनों की दोस्ती बहुत ही बढ़िया है मैं आप दोनों की बात सुन रहा था मुझे बहुत ही अच्छा लगा मुझे भी अपना दोस्त बना लो यह सुनकर दीनू और जिराफ फूले नहीं समाए एक से दो भला भला दो से आज हम तीन हो गए यह कह कर बहुत खुश हुए सभी एक साथ मिलकर रहते खाते पीते खेलते कूँदते एक ही जगह पर रहते इस तरह से उनकी मित्रता चलती रही थी

एक दिन यह तीनों पानी पीने नदी के किनारे गए वहां पर एक मगरमच्छ बैठा हुआ था उसे देख कर तीनो डर गए और पानी के पास नहीं गए दूर से ही उसके जाने का इंतजार करने लगे पर वह नहीं गया मगरमच्छ इन की तीनों की दोस्ती देखकर खुश हो गया और मन ही मन सोचने लगा कि मैं इतनी अच्छी दोस्ती आज तक नहीं देखा काश ऐसे ही मेरे भी दोस्त होते हैं मैं कहां इस पानी में दिन रात घुसा रहता. ऐसा सोच कर उसे दुख हुआ और मगरमच्छ से रहा नहीं गया उसने तीनों से दोस्ती करने की बात कही तब तीनों ने विचार करने लगे कि हम इन से दोस्ती करेंगे तो हमें क्या फायदा

होगा वह ना तो हमारे साथ कहीं जा सकता है और नहीं हमारे जैसा खा पी सकता है यह तो मांस खाने वाला है ऐसा वे सोचने लगे लेकिन दयालु दीनू से रहा नहीं गया उसने मगरमच्छ से दोस्ती की हामी भर दी अब चारों दोस्त बन गए चारों एक साथ नदी किनारे ही रहते खाते पीते एक साथ खेलते कूदते इस तरह से भी रहने लगे

एक दिन एक शेर नदी किनारे पानी पीने आया तो उसने देखा कि यह चारो नदी किनारे इतने मस्त खेल रहे हैं इनकी दोस्ती बहुत अच्छी है यह देख कर शेर जलने लगा और जिराफ को मारने की ताक में लगा रहने लगा रोज वह कुछ ना कुछ करता लेकिन दीनू बंदर पेड़ से ही उसका गतिविधि को देखकर समझ जाता, दीनू और हाथी दोनों मिलकर जिराफ को बचा लेते हैं इस तरह से वे अपने दोस्त की मदद करते हैं

दिन की बात है जंगल में आग लग जाती है सभी जानवर इधर उधर भागने लगते हैं तब दीनू जिराफ और हाथी चिंता में पड़ जाते हैं की अब हमारा क्या होगा यह विचार तीनों मिलकर करते हैं यह सुनकर उनका मित्र मगरमच्छ उनको चिंता ना करने की बात कहता है की मेरे रहते चिंता करने की जरूरत नहीं है मैं आप लोगों का सच्चा मित्र हूं मैं आपको नदी के उस पार एक जंगल है वहां तक पहुंचा दूंगा आप लोग मेरे रहते चिंता मत करो यह बात वह शेर सुनते रहता है वह भी आकर इन चारों के पास अपनी गलती की माफी मांगने लगता है और अपनी जान बचाने की बात उनके सामने कहता है मगर वे नहीं मानते तब से उनकी पैरों पर गिरकर माफी मांगता है और कहता है कि हम शेर बिना मांस खाए नहीं रह सकते इस कारण मुझे अन्य जानवरों को मारना पड़ता है मुझे माफ कर दो अब मैं किसी भी जानवरों को नहीं मारूंगा मुझे माफ कर दो मुझे माफ कर दो यह सुनकर दीनू बंदर से रहा नहीं गया आर शेर को माफ कर दिया फिर फिर मगरमच्छ बोला आप सभी मेरे पूछ को पकड़ लेना और मैं नदी के रास्ते आप लोगों को इस पार से उस पार पहुंचा दूंगा ऐसा कह कर सभी नदी किनारे पहुंच गए सबसे पहले मगरमच्छ की पूँछ को बंदर और बंदर की पूंछ को जिराफ और जिराफ के पूछ को हाथी और हाथी की पूंछ को शेर कसकर पकड़ लेते हैं इस तरह से मगरमच्छ धीरे-धीरे उन सबको नदी के पार पहुंचा देता है और उस पार पहुंचकर सभी मगरमच्छ को धन्यवाद देते हैं और सभी दोस्त मिलकर नदी के उस पार वाले जंगल में एक साथ रहने लगते हैं इस तरह से मुसीबत में जो काम आए वह सच्चा मित्र होता है.

अब नीचे दिये चित्र को देखकर एक बढ़िया सी कहानी स्वयं या अपने बच्चों को चित्र दिखाकर लिखने का अवसर दें और हमें ई-मेल से kilolmagazine@gmail.com पर भेज दें. अच्छी कहानियां हम किलोल के अगल अंक में प्रकाशित करेंगे.

हमर गाँव के स्कूल

रचनाकार- पेश्वर राम यादव

जाबो रे संगी जाबो रे संगी,
कहाँ जाबो रे....
हमर गाँव के सरकारी स्कूल म,
पढ़े बर जाबो रे....

पढ़बो अउ पढ़ाबो,
हमर अकल ल बढ़ाबो.
ग्यान की गठरी म,
मन ल मढ़ाबो रे.
नवाबिहिनिया उठ के,
रोज स्कूल जाबो रे.....

खेलबो कूदबो लिखबो,
अउ साग-भाजी ल लगाबो.
जुर-मिल के संगी,

बगीया ल हरीयाबो रे.
सुघ्घर शिक्षा पा के,
ऐ जिनगी ल गढ़बो रे.....

अड़बड़ पढ़बो सुघ्घर पढ़बो,
जब्बर पढ़बो रे.
गिनती गुना भाग म,
जोड़बो घटाबो रे.
पढ़ लिख के सीख के,
जिनगी म गनीत लगाबो रे....

नवा नवा बिचार ले,
सिखबो अउ सिखाबो.
ग्यान के अंजोर ल,
अँधियारा में फैलाबो रे.
छत्तीसगढ़ के नाँव ल,
दुनिया में बिगराबो रे.

हमर गाँव के सरकारी स्कूल म,
पढ़े बर जाबो रे....

शतरंज खेलने के फायदे

रचनाकार- हेमन्त खुटे

शतरंज आज एक लोकप्रिय खेल के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका है और खिलाड़ियों में भी लगातार इजाफा होता जा रहा है. शतरंज खेलने के कई फायदे हो रहे हैं इससे मानसिक एवं बौद्धिक विकास तो होता ही है अपितु जीवन कौशल निर्माण में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है. शरीरिक क्षमता का उपयोग कम होने के कारण इसमें जोखिम की कोई संभावना नहीं है बल्कि कई मनोवैज्ञानिक फायदे की पुष्टि हुई है. जिसका विवरण निम्नानुसार है

अल्जाइमर रोग के उपचार में सहायक

अल्जाइमर एक भयावह बीमारी है जिसमें याददाश्त कमजोर हो जाती है और दिमाग के काम करने की क्षमता नष्ट हो जाती है. एक शोध के अनुसार शतरंज खेलने से याददाश्त मजबूत होती है तथा मानसिक कोशिकाएं भी मजबूत होती है. यही कारण है कि इस बीमारी से ग्रसित मरीज को डॉक्टरों द्वारा शतरंज खेलने की सलाह दी जाती है.

बच्चों का आईक्यू लेवल बढ़ता है

शतरंज खेलने से बच्चों का मानसिक विकास होता है एवं इस खेल पर ध्यान केंद्रित होने के कारण बुद्धिमता भी तेज होती है. शतरंज खेलने वाले बच्चों में आई क्यू लेवल बढ़ता है. इसी कारण से विद्यालयों में शतरंज खेल को बढ़ावा दिया जाने लगा है. कई राज्यों में ऐच्छिक विषय के रूप में शतरंज को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया.

समस्या का समाधान

शतरंज खेलने से आदमी तनाव मुक्त होता है और दैनिक जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्याओं का वह आसानी से समाधान कर सकता है. शतरंज खेलने वाला व्यक्ति कभी निराश नहीं होता और वह साहस के साथ चुनौतियों का सामना करने के लिए तत्पर रहता है.

रचनात्मक कार्य कौशल में वृद्धि

शतरंज खेलने से मानसिक ताजगी मिलती है फलस्वरूप मन एकाग्रता के साथ एक लक्ष्य की ओर बढ़ता जाता है. शतरंज रचनात्मक कार्य करने प्रेरित करता है.

दिमागी क्षमता को बढ़ाता है

शतरंज एक मानसिक खेल के बतौर खेला जाता है जिसमे दिमागी शक्ति का उपयोग होता है. शतरंज खेलने से खिलाड़ियों की दिमागी क्षमता विकसित होती है और दिमाग के दोनों हिस्से सक्रिय रूप से कार्य करने लगते हैं. शतरंज खेलने से एकाग्रता एवं स्मरण शक्ति भी बढ़ती है.

त्वरित निर्णय लेने की क्षमता

शतरंज खेल में प्रतिद्वंदी एक दूसरे के सामने होते हैं और जरा सा भी चूक नुकसानदायक हो सकता है इसलिए खिलाड़ी चौकन्ना होकर खेलता है. जिस कारण विपरीत परिस्थितियों में त्वरित निर्णय लेने की क्षमता उसके अंदर समाहित होती है. इसके अलावा दूरदृष्टि एवं कल्पनाशीलता का भी इसमे समावेश होता है.

शतरंज एक करियर के रूप में

संपूर्ण विश्व स्तर पर शतरंज की लोकप्रियता काफी है और अनेक देशों में लगातार टूर्नामेंट के आयोजन होने से आर्थिक दृष्टिकोण से खिलाड़ी सक्षम बन रहे हैं. शतरंज खेल को इतना अच्छा प्रतिसाद मिल रहा है कि खिलाड़ियों के आजीविका के लिए एक प्रमुख जरिया बन गया है.

गणित विज्ञान विषय में पकड़ मजबूत

शतरंज खेलने से गणित, विज्ञान जैसे विषयों में पकड़ मजबूत बनती है. तार्किक क्षमता बढ़ती है. नई सोच का विकास होता है. विषय वस्तु को समझने में सहायता मिलती है

कोई शारीरिक थकान नहीं

शतरंज खेल खेलने से कोई शारीरिक थकान महसूस नहीं होती. अन्य खेलों की तुलना में इसमें कोई शारीरिक श्रम नही है. शतरंज एक आरामदायक एवं मनोरंजक खेल है जिसे धैर्य के साथ खेला जाता है.

अनुशासन की सीख

शतरंज खेलने से जीवन अनुशासनबद्ध होता है. संयम, धैर्य और लगन के द्वारा आंतरिक गुणों का विकास होने के कारण व्यक्ति में निखार आता है

Thank You God

Poet- Santosh kumar Patel

Thank you God for giving fresh air.
Thank you God for food to eat.
Thank you God for fresh and clean water.
Thank you God For shining everywhere.
You make our life happy without fear.
I never forget you because you are always here.

ज्ञान की पाती- वायरस के बारे में रोचक तथ्य

रचनाकार- चानी ऐरी

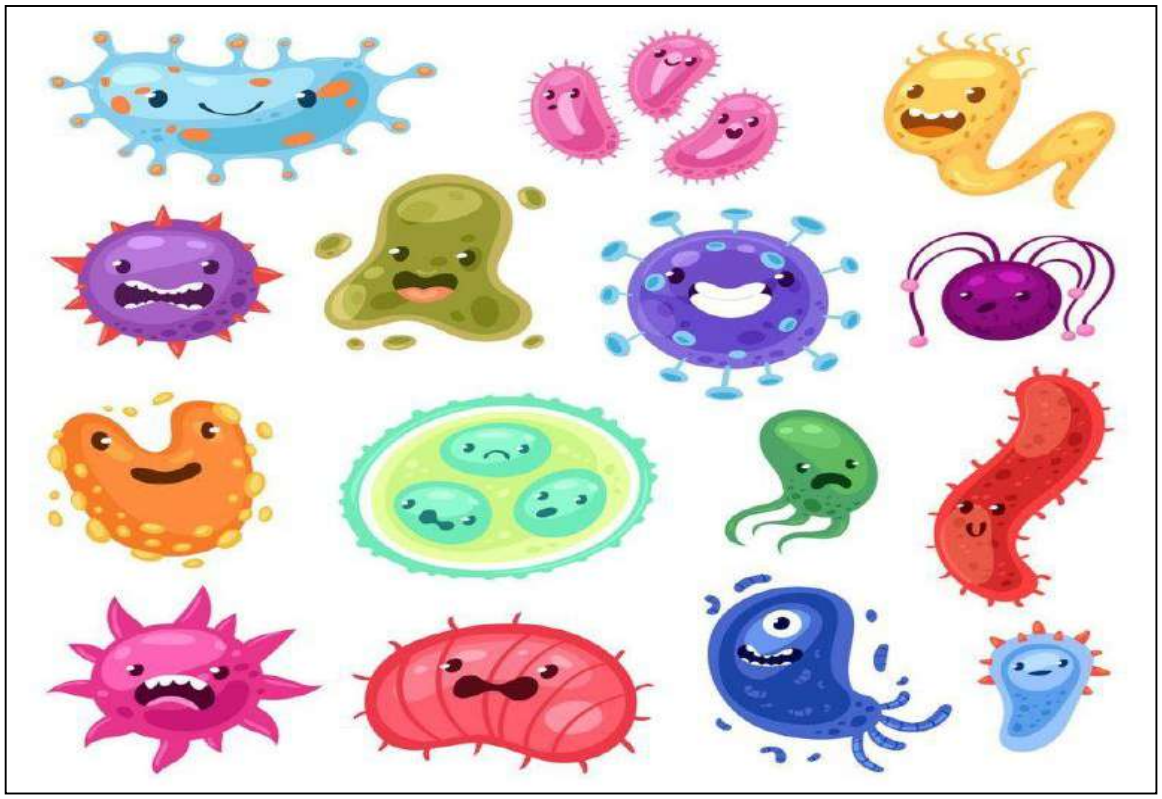

लैटिन भाषा में वायरस (Virus) शब्द का अर्थ होता है विष. क्या आप जानते हैं की उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में इस शब्द का प्रयोग विषाक्त (toxic) रोग पैदा करने वाले किसी भी पदार्थ के लिए किया जाता था. परन्तु अब वायरस शब्द का प्रयोग रोगजनक कणों के लिए भी किया जाता है. वायरस एक संक्रामक कण है जो जीवन और गैर-जीवन की विशेषताओं को प्रदर्शित करता है. वायरस, संरचना और कार्य में पौधों, जानवरों और बैक्टीरिया से भिन्न होते हैं. वे कोशिका नहीं होते हैं और स्वयं को दोहरा नहीं सकते हैं. हालांकि आम तौर पर वायरस केवल 20-400 नैनोमीटर तक होते हैं.

सर्वप्रथम सन् १७९६ में डाक्टर एडवर्ड जेनर ने पता लगाया कि चेचक, विषाणु के कारण होता है. उन्होने चेचक के टीका का अविष्कार भी किया.

वायरस के बारे में रोचक तथ्य

1. क्या आप जानते हैं कि सबसे छोटा वायरस टोबैको नेक्रोसिस वायरस (Tobacco necrosis virus) है जिसका परिमाण लगभग 17 nm होता है. इसके विपरीत सबसे बड़ा जन्तु वायरस (Animal virus) पोटैटो फीवर वायरस (Potato fever virus) है लगभग 400 nm.

2. लाखनऊ के पेलियोबोटनी संस्थान में 3.2 बिलियन वर्ष पुरानी चट्टान में सायनोबैक्टीरिया के जीवाश्म रखे हैं.

3. जीवाणुभोजी (Bacteriophage) की खोज टूवार्ट (Twart) एवं हेरिल ने की थी. ऐसे विषाणु या वायरस जो जीवाणुओं में प्रवेश करके बहुगुणन (Multiplication) करते हैं उन्हें जीवाणुभोजी या बैक्टीरियोफेज कहते हैं.

4. वायरस के प्रोटीन कोट को कैप्सिड (Capsid) कहते हैं.

5. बॉडन (Bawden) व डार्लिंगटन (Darlington) ने बताया कि वायरस न्यूक्लियोप्रोटीन से बने होते है.

6. वायरॉइड्स (Viroids) वायरस के छोटे रोगजनक हैं. इनमें वायरस के समान प्रोटीन कोर नहीं पाया जाता है. केवल आर.एन.ए से बनी इन रचनाओं को मेटावायरस (Metaviruses) भी कहते हैं.

7. सायनोबैक्टीरिया को प्रथम प्रकाश-संश्लेषी जीव माना गया है.

8. रेबीज या हाइड्रोफोबिया के वायरस में सिंगल स्ट्रेन्डेड RNA पाया जाता है.

9. चेचक (Small Pox) के वायरस में डबल स्ट्रेन्डेड DNA पाया जाता है.

10. क्या आप जानते हैं कि वायरस का संक्रामक भाग न्यूक्लिक अम्ल है.

11. वायरस को क्रिस्टल के रूप में सबसे पहले प्रथक करने का क्षेय स्टेनले को है.

12. विषाणुओं या वायरस पर प्रतिजैविकों (antibiotics) का प्रभाव नहीं होता है क्योंकि विषाणुओं में स्वयं की उपापचयी क्रियाएं नहीं होती तथा ये सदैव पोषी कोशिकाओं में रहते हैं अत: प्रतिजैविक का जहरीला प्रभाव पोषी कोशिका पर ही होता है.

13. सामान्य रूप से होने वाला जुकाम (common cold) Rhinovirus के कारण होता है.

14. एड्स वायरस (AIDS virus) का पूरा नाम Acquired Immune Deficiency Syndrome है. यह रोग वायरस द्वारा होता है. एड्स रोग फैलाने वाले विषाणुओं को निम्न विभिन्न नामों से जाना जाता है:

- - Human T lymphotropic Virus III (HLV-III)
- - Lymphadenopathy associated virus (LAV)
- - AIDS related retrovirus (ARV)

15. गंगा नदी के जल में असंख्य जीवाणुभोजी उपस्थित होते हैं. ये नदी के प्रदूषित जल में उपस्थित रोगजनक जीवाणुओं (Pathogenic bacteria) को नष्ट कर देते हैं. अत: ये अपमार्जक (Scavanger) का कार्य करके गंगा नदी के जल को शुद्ध बनाए रखते हैं.

यधपि वायरस का नाम लेते ही ब्यांक रोगों की याद आने लगती है, फिर भी वायरस का उपयोग लाभदायक कार्यों में भी संभव है जैसे हानिकारक जीवाणुओं को नष्ट करने के लिए बैक्टीरियोफेज का प्रयोग किया जाता है.

इनके द्वारा जल को सड़ने से बचाया जा सकता है आदि.

बंदर की चतुराई

रचनाकार- कु. नेहा खूँटे, कक्षा 4, शा प्रा विद्यालय बेलगहना

बंदरों का एक झुंड एक जंगल में रहता था. वे एक विशाल वृक्ष पर रहते थे. उनके पास ही केले का एक बाग था. छोटू बंदर की नजरें केले के एक गुच्छे पर थी. उन केलों को वह में खाने की योजना बना रहा था. छोटू केले के गुच्छे पर कूदने ही वाला था जब उसकी मां ने उसे रोक दिया. उनका सरदार बोल रहा था उम्मीद है तुम सभी को याद है हम आज उपवास कर रहे हैं. सब बंदरों ने अपने सिर हिलाया. छोटू बंदर ने भी सिर हिलाया हालांकि वह उपवास के बारे में बिल्कुल भूल चुका था. सरदार के एक इशारे पर सभी बंदरों ने अपनी आंखें बंद कर ली. "आंखें बंद करना उपवास करने में मदद करता है" मां ने समझाया. कुछ देर बाद छोटू ने धीरे से अपनी आंख का एक कोना खोला उसकी नजर केले पर पड़ी. उस केले को पाने की उसकी इच्छा बढ़ गई. छोटू बोला "मैं सोच रहा था." "तुम क्या सोच रहे थे" मां ने बेसब्री से पूछा. मैं सोच रहा था "उपवास करने का मतलब है कि हम कुछ भी नहीं खा सकते सही है ना". "हाँ कुछ भी नहीं खाना." माँ ने छोटू से बोला, छोटू फिर बोला मैं सोच रहा था.... "तुम क्या सोच रहे थे." माँ ने बेसब्री से फिर से पूछा छोटू बोला... "हम सब बैठे बैठे केले को देख तो सकते हैं." सरदार ने सुना और इस सवाल पर सावधानी से विचार किया सभी बंदर उनके आदेश का इंतजार करने लगे. सरदार अपनी आंखें खोलते हुए बोले

“केलों की ओर देखने में कोई नुकसान नहीं है मगर केवल देखना” उन्होंने आगे का शब्द संभालते हुए बोला. बंदर केले के पेड़ों से लटकते पीले केलो को देखते हुए बैठ गए. छोटू फिर बोला, “क्या हम एक एक केला अपने हाथ में पकड़ सकते हैं” एक अच्छा सुझाव सरदार ने कहा और इस तरह हर एक बंदर ने एक एक पीला केला अपने अपने हाथों में पकड़ कर रख लिया. सरदार ने सख्ती से कहा “अब अपनी आंखें बंद करो” तभी बंदरों ने अपनी आंखें बंद कर ली. छोटू फिर से अपनी आंख का एक कोना खोला और तरसते हुए अपने हाथ में लिए केले को देखा. “मैं सोच रहा था” छोटू फिर से बोला. सरदार ने पूछा “क्या सोच रहे थे.” छोटू बोले “क्या केले को छीलने में कोई नुकसान है.” “आप ध्यान दें इसे खाना नहीं सिर्फ केला छीलना और इसे देखना, मुझे इसमें कोई नुकसान नजर नहीं आता” सरदार ने कहा. कुछ ही समय में सभी ने अपने अपने केले छील लिए एक बार फिर बंदरों ने अपनी आंखें बंद कर ली और सारे बंदर बैठ गए.छोटू फिर से अपनी आंख का एक कोना खोला.माँ ने उसे धमकाया- “ छोटू इसे खा नहीं सकते.” मैं सोच रहा था--- यह सुनकर सभी सावधान हो गए. ये जानने के लिए उत्सुक थे कि चतुर छोटू के पास अब क्या सुझाव है. “क्या हम केले को अपने मुंह में रख सकते हैं लेकिन हम इसे खाएंगे नहीं” छोटू ने आश्वासन दिया. “केले को मुंह में रखने पर तुम निश्चित रूप से उपवास नहीं तोड़ोगे.” सरदार ने कहा. बंदरों ने केले अपने अपने मुंह में रख लिए फिर से एक सवाल भरी नजर से देखा माँ मुझे लगता है..... सभी बंदर ने अपनी सांसे थाम ली “मुझे लगता है केला चला गया है वह मेरे पेट में है.” वहां सन्नाटा छा गया. कुछ बंदरों ने छोटू को समझ भरी निगाह से देखा फिर सरदार ने कहा “हमने आज एक महान खोज की है” सभी बंदरों ने बूढ़े सरदार की ओर बड़े ध्यान से देखा. “हमने आज एक महान खोज किए है. आप एक केले को ज्यादा देर तक मुंह में नहीं रख सकते.” सभी बंदर ने गहरी साँस ली. अब केले उनके पेट में सुरक्षित है और यह उनके उपवास का अंत था.

मैराथन की धाकड़ गर्ल्स

रचनाकार- ताराचंद जायसवाल

छत्तीसगढ़ की नयी राजधानी अटल नगर से लगा हुआ गाँव भेलवा डीह विकाश्खंड अभनपुर जिला रायपुर इन दिनों छत्तीसगढ़ की धाकड़ गर्ल्स के गाँव के रूप से पहचाना जाने लगा है. शिक्षक श्री जितेंद्र सिन्हा एवं नर्स डीगेश्वरी सिन्हा की तीन बेटियां (सानिया 13 वर्ष , इशारानी 12 वर्ष और युवानी 9 वर्ष) विकासखंड से लेकर राज्यस्तरीय मैराथन दौड़ में भाग लेकर अपना पर्चम लहरा रही हैं. दौड़ हेतु इन्हें किसी भी प्रकार की सुविधाएँ व कोच उपलब्ध नहीं है फिर भी अपने पिता के साथ नंगे पैर प्रतिदिन सुबह शाम २ घंटे अभ्यास करती हैं. सानिया ने पहले दौड़ना प्रारंभ किया उसे देख कर इशारानी उसके संग हो चली. अखवार में जब अपनी दोनों बड़ी बहनों की फोटो को देख कर छोटी बहन युवानी ने मेरा भी फोटो अखवार में छपेगा यह सोचके दौड़ना प्रारंभ किया. राज्यस्तरीय मैराथन के लिए खेल विभाग द्वारा जिला स्तर पर आयोजित बालिका मैराथन दौड़ में जिले के चारों ब्लाक से 130 खिलाडियों के बीच इशारानी ने दूसरा, सानिया ने तीसरा एवं युवानी ने पांचवा स्थान प्राप्त किया. इन्होने

भारत सरकार के खेल विभाग के भारतीय खेल प्राधिकरण भोपाल के ट्रायल्स में हिस्सा लिया है. वे न सिर्फ खे में बल्कि पढाई में भी होशियार हैं. इशारानी उसेन बोल्ट की तरह एवं सानिया हिमा दास की तरह अपने देश का पर्चम दुनिया में लहराना चाहती हैं.

मुस्कान लाइब्रेरी

रचनाकार- डॉ शिप्रा बेग

"किताबें झांकती है. बंद अलमारी के शीशे से. बड़ी हसरत से ताकती हैं."

गुलज़ार जी की यह कविता अक्षरशः सही प्रतीत होती हैं. आज मोबाइल. लेपटॉप और कम्प्यूटर के डिजिटल युग में धीरे- धीरे किताबों की सांसे घुट रही है.

परन्तु इसी कड़ी में छत्तीसगढ़ शासन द्वारा स्कूली स्तर पर मुस्कान लाइब्रेरी द्वारा विद्यार्थियों में पढ़ने की ललक और कौशल को बढ़ाया हैं. बंद अलमारी के शीशो से पुस्तकों को निकालकर. बच्चों के हाथों में पकड़ा दिया हैं. स्कूलों में बेहतर शिक्षण व्यवस्था और पठन कौशल को विकसित करने वृहद स्तर पर मुस्कान लाइब्रेरी का शुभारंभ किया. जिसके अंतर्गत पहली से बारहवीं तक के विद्यार्थियों के लिए उनके स्तर अनुरूप पुस्तकों को प्रत्येक शाला में वितरित किया गया. इस सराहनीय पहल में एक उत्तम कड़ी और जुड़ गई. पठन कौशल. के नवीन स्वरूप के साथ.

मुस्कान लाइब्रेरी ने वर्तमान में विद्यार्थियों का रुझान किताबो की ओर मोड़ा हैं. छोटी - छोटी कहानियां हो. ज्ञान -विज्ञान के चमत्कार हो. या महापुरुषों के आदर्श हो ये सभी विविध पुस्तकें सामाजिक. सांस्कृतिक. एवं नैतिक स्तर पर बच्चों के व्यक्तित्व को

सँवारती है. सहेजती हैं. पुस्तकें बच्चों की भाषा. सोच. संवेदना और अभिव्यक्ति को जीवित रखती हैं. उन्हें बताना आवश्यक है कि. पुस्तकें ही उनकी सबसे अच्छी और सच्ची मित्र हैं. पुस्तकें भूत. वर्तमान और भविष्य के वर्तुलाकार चक्र में घूमती हुई भावनाओं का उदगार हैं. जो एक ही समय की कड़ी थामें अंदर की हँसी और पंखुरियों का पल्लवन हैं.

"किताबें सभ्यता की वाहक होती है. बिना किताबों के इतिहास मौन है. विज्ञान पंगु. साहित्य मूर्ख. और विचार गतिहीन हैं."

नटखट निन्नी

1. **मम्मी-** देखो निन्नी, अगर तुम सबसे अच्छा व्यवहार रखोगे और किसी को नुकसान नहीं पहुंचाओगे तो सभी तुमसे प्यार करेंगे.
   निन्नी- हाँ मम्मी, वो पड़ोस वाली चाची ने मुझसे प्यार से बातें की.
   मम्मी- अरे वाह! क्या कहा उन्होंने?
   निन्नी – उन्होंने कहा कि दोबारा अगर फूल तोड़ने मेरे घर में घुसी तो तुम्हारी टाँगे तोड़ दूंगी.

2. **पापा-** निन्नी बेटी, स्कूल के लिए जल्दी तैयार हो जाओ, नहीं तो देर हो जाएगी.
निन्नी- कोई बात नहीं पापा, मेरा स्कूल तो शाम तक खुला रहता है.

3. **निन्नी**- चुन्नी, मेरी बिल्ली को अपना नाम बोलना आता है.
चुन्नी- अरे वाह ! तुम्हारी बिल्ली का नाम क्या है?
निन्नी- म्याऊँ.

4. **निन्नी-** पापा, आपका पर्स कहीं खो तो नहीं गया है?
पापा- (चौंकते हुए) नहीं तो.
निन्नी- ठीक से देख लीजिए, कहीं गिर तो नहीं गया है.
पापा- (जेब में हाथ डालकर) नहीं चुन्नी, मेरा पर्स मेरी जेब मेंही है.
निन्नी- तो फिर मुझे सौ रूपये दे दीजिये.

5. निन्नी जोर जोर से रोते हुए अपनी मम्मी के पास आई.
मम्मी- अरे क्या हुआ, क्यों रो रही है?
निन्नी- पापा दीवार पर कील ठोक रहे थे. हथोड़ा उनकी ऊँगली में लग गया.
मम्मी- तेरे पापा को चोट लगी तो तू क्यों रो रही है? तुझे तो हँस देना था.
निन्नी- हाँ मम्मी, मैं तो हँस रही थी.

हमर अघवा क्रांतिकारी - मंगल पांडे

रचनाकार- खेमराज साहू

अंगरेजी शासन के विरोध म लंबा संघरष के बीड़ा उठाइया हमर अघवा क्रांतिवीर मंगल पांडे के जनम 19 जुलाई 1827 गांव नगवा, जिल्ला बलिया, उत्तर प्रदेश में होय रिहीस. जवानी म 22 बछछर के होइस, तहाने सयनिक म भरती हो गे. उहू दिन म छावनी मन म गुलामी के आगि हर सुलगत रहाय. अंग्रेजन मन जानत रहाय हिन्दुआ मन गउ माता ल पवित्र मानते, अउ मुसलमान मन सूरा ले घिरना करथे. तभो ले वोह मन उही कारतूस ल सयनिक मन ला देवे. गउ अउ सूरा के चर्बी ल मिलाय रहे, जेला चलाय बर अपन मुहु ले चाबके खोले बार पड़थे. अइसने अब्बड़ दिन ले चलत रहिस, एकर जानबा सयनिक मन ला नई रहाय.

मंगल पांडे उही बेरा म बैरकपुर 34 वी हिंदुस्तानी बटालियन म तयनात रहाय. उहा पानी पीआइया एक झन हिन्दुआ रहाय. जेहा एकर जानबा

सयनिक मन ल बता दीस, जेकर सेती सयनिक मन भड़क गे. मंगल पांडे ल नई रहे गिस अउ 29 मार्च 1857 के दिन विद्रोह कर दिस. एक झन भारतीय हवलदार मेजर हा जाके सार्जेंट मेजर ह्यूसन ल सब बात ल बता दिस. येला सुनके मेजर हा घोड़ा म बइठ के छावनी डहर चल दीस. उहा मंगल पांडे हा सयनिक मन ला भड़कावत रिहीस कि "अंग्रेजन मन हमर धरम ला बिगाढ़त हाबे. हमन ला ओकर नौकरी चाकरी ल छोड़ देना चाही. मेहा परतिज्ञा लेवत हाओ जेन भी अंग्रेजन मनला देख ले हूँ ओला मेहा जान ले मार देहूँ". सारजेंट मेजर ह्यूसन हा सयनिक मन ला आदेश दे दीस -"जाहूँ अऊ मंगल पांडे ला पकड़ के ला हूँ ". उही बेरा म मंगल पांडे ह धर के मेजर के छाती मा गोली मारके छेदा छेदा कर दीस. मेजर के लाश ह घोडा के तरी में गिर गे. गोली के आवाज़ ला सुनके एक झन अंग्रेजन लेफ्टिनेंट उहा पहुंच गे. मंगल पांडे ह ओकरो ऊपर घलो गोली चला दिस. उही बेरा म ओहा घोडा ले कूदके भागत रहाय, तभ्भे ओकर ऊपर झपट्टा मारके तलवार ले ओखरो काम तमाम कर दिस

लेफ्टिनेंट के सहायता बर एक झन सार्जेंट मेजर हा आगे, उहू ल मंगल पांडे ह मार दिस. चारो डहर हल्ला मच गे. 34 वी पल्टन के कर्नल हीसर हा सयनिक मन ला पकडेबर आदेश दे दीस पर ओला पकडेबर तइयार नई होइस. फेर ओला पकडे बर अंग्रेजी सेना ला बलाइस अउ मंगल पांडे ल चारो कोती ले घेर लिस. मंगल पांडे ह समझगे अब बाचना मुस्कल हो गेहे, तभ्भे अपन बन्दूक ले अपन ऊपर गोली चला दीस. तब्भो ले नई मरिस. घायल हो के गिर पड़िस अउ अंग्रेजन सेना मन ओला पकड़ लिस.

आगू दिन मंगल पांडे ल सैनिक कचहरी में मुकदमा चलाये गिस तब्भे मंगल पांडे हा बोलिस " मेहा अंग्रेजन मन ला अपन देश के भाग्यविधाता नई मानो अपन देश ला आजाद करवाना अपराध हाबे तब मेहा हर दंड ला भुगते बर तैयार हबो. नियाव करयेया न्यायधीश ह ओला फांसी के सजा दे दीस. एकरबार 18 अप्रैल के दिन ल नेमे रहिस. तभो ले अंगेजन मन ल देश भर म विद्रोह ल डर्रा के घायल मंगल पांडे ला 8

अप्रैल 1958 के दिन अघवा के फांसी दे दीस. बैरकपुर छावनी म ओला काहू भी ह फांसी दे बार मना कर दीस. तब कलकत्ता के जल्लाद ला बलाइस.

मंगल पांडे ह क्रांति के जे जोत ल जला हे ;ओला आघू म 1857 में बड़े रूप धरके स्वाधीनता संग्राम के रूप धर लिस 15 अगस्त 1947 के दिन हमरदेश हा स्वाधीन होगे. तब ले हमर अघवा क्रन्तिकारी मंगल पांडे के बलिदान ल हजारो बछर ले याद रखे जाहि.

धरती दाई के रतन बेटा,
मंगल तोर नाम.
गाड़ा गाड़ा जोहार हे तोला,
तेहा देश बर आएस काम

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी –

गरियाबंद के जंगल में एक बहुत बड़े अधिकारी रहते थे. स्वभाव से वे बहुत अच्छे थे. सबकी सहायता करते थे. एक बार उनसे एक सन्यासी मिलने घर पर आए. घर में उनकी अच्छी सेवा की गयी. बच्चों ने भी उन्हें बहुत स्नेह दिया. सन्यासी ने उस अधिकारी से जंगल में रहकर विभिन्न बीमारियों के लिए जड़ी-बूटी खोजने हेतु अनुमति मांगी. उन्होंने जनहित को ध्यान में रखकर उस सन्यासी को जंगल में रहकर अपने काम को जारी रखने में पूरा सहयोग किया. उस अधिकारी का स्वभाव इतना बढ़िया था कि जंगल के जानवर भी बिना डरे उनके आसपास घूमते रहते थे और उनका भोजन भी खा लेते थे. एक बार लेटे लेटे उस अधिकारी ने एक जानवर का झूठा किया हुआ फल बिना देखे खा लिया. उसके बाद वह बहुत बीमार हो गए. उनकी पत्नी और बच्चे बहुत परेशान हो गए. जंगल में आसपास कोई डाक्टर भी नहीं था.

संतोष कुमार कौशिक व्दारा पूरी की गई कहानी

फलों से संक्रमण

इस जंगल के आसपास डॉक्टर ना होने के कारण अधिकारी की पत्नी एवं पुत्र कुछ समझ नहीं पा रहे थे. अब क्या होगा, क्या करें, कहां जाएं? यही सोचकर परेशान हो रहे थे. इधर अधिकारी के बीमार होने की सूचना पूरे जंगल में आग की तरह फैल गई. बन्दर के निर्देशन में जंगल के सभी जीव-जंतु अधिकारी के घर पहुंचकर उनके ठीक होने की कामना करते हुए घरवालों को सांत्वना दिए.

अधिकारी के पुत्र को बन्दर कहता है कि यहां दूर दराज तक कोई हॉस्पिटल नहीं है ना ही डॉक्टर लेकिन मुझे कुछ याद आ रहा है कुछ दिन पहले आपके घर में एक सन्यासी जी आए थे. जो अधिकारी जी से अनुमति लेकर जंगल से जड़ी-बूटी इकठ्ठा कर वापस घर चले गए हैं. उन्हें जरूर ही इस बीमारी के बारे में जानकारी होगी. आपकी अनुमति हो तो उन्हें बुलाने के लिए मैं चिड़िया रानी को उनका पता बता कर तुरंत भेजता हूं. अधिकारी का पुत्र राजी हो जाता है. जल्द ही चिड़िया रानी वहां पहुंचकर सन्यासी को अधिकारी के स्वास्थ्य खराब के बारे में जानकारी देती है.

सन्यासी देर न करते हुए तुरंत अधिकारी के घर पहुंचकर उनका इलाज प्रारंभ कर देते हैं. उनके इलाज से अधिकारी की बेहोशी ठीक होने लगती है, हाथ पैर हिलने लगते है, आंख खुल जाती है और धीमी आवाज में बात करने लगते है. अधिकारी के स्वास्थ्य ठीक होने के संकेत देखकर सभी की चिंता दूर हो जाती है. घरवाले सन्यासी को विस्तारपूर्वक बताते हैं कि अधिकारी का स्वास्थ्य खराब होने का कारण अनजाने में जानवर का झूठा फल खाना है तब सन्यासी जी को पता चल जाता है कि बेहोशी होने के कारण झूठा फल खाने का ही संक्रमण है.

वहां उपस्थित सभी लोगों को सन्यासी जी बताते हैं कि-आजकल जानवरों, चमगादड़ जैसे पक्षियों में इंफेक्शन के कारण निपाह, कोरोना जैसे वायरस फैलने से लोग डरे हुए हैं. W.H.O. ने निपाह वायरस को उभरती हुई बीमारी घोषित किया हैं. यह वायरस चमगादड़ की एक विशेष नस्ल में पाया जाता है. चमगादड़ जिस फल को खाता है

उसके लार में विशेष प्रकार का वायरस पाया जाता है, जिसे वह फल में छोड़ देता है. उसके अपशिष्ट के संपर्क में आने से किसी जानवर या व्यक्ति को यह ट्रांसफर हो जाता है. वही पक्षियों के काटने से, उनके मल मूत्र से,घोंसले और पंखों से भी वायरल फैलाता है. इसके बारे में जानकारी नहीं होने की वजह से लोगों में एलर्जी और नियमोनिया होना सामान्य समस्या है. शुरुआती स्टेज में यह इन्फेक्शन भी बुखार और सिर दर्द से शुरू होता है. यह वायरस स्वाइन फ्लू, कोरोना वायरस की तरह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है लेकिन कोरोना वायरस जैसे तेजी से नहीं फैलता है फिर भी आप लोगों को कोई भी जंगली जीव जंतु का झूठा फल, बीट किए हुए फल नहीं खाना चाहिए, हमें अपने जीवन में इसकाविशेष ध्यान रखना चाहिए.

सन्यासी जी पुनः कहते हैं कि-अधिकारी जी की स्थिति अभी ठीक है फिर भी सुविधायुक्त अस्पताल में जाकर विशेषज्ञ डॉक्टर से इलाज कराने के पश्चात ही कह सकते हैं कि पूरी तरह ठीक हो गया है.

सन्यासी जी उन लोगों को शहर ले जाने में मदद करते हैं. वहां पहुंचकर,विशेषज्ञ चिकित्सक से इलाज कराते हैं. अधिकारी जी का स्वास्थ्य पूरी तरह ठीक हो जाते है. ठीक होने के पश्चात वापस अपने कर्तव्य क्षेत्र में उपस्थित हो जाते हैं. वहां पहुंचकर अधिकारी जी सभी जानवरों को धन्यवाद देते हैं. सभी जंगल के जीव जंतु उसे देखकर बहुत खुश हो जाते हैं.

शिक्षा- कोई भी जीव जंतु का झूठा फल नहीं खाना चाहिए. बाजार से फल और सब्जी लेते हैं, उसे अच्छी तरह से धोकर उपयोग करना चाहिए.

प्रियंका सिंह व्दारा पूरी की गई कहानी

वह अधिकारी इतना बीमार हो गया कि स्वयं शहर में जाकर अपना इलाज भी नहीं करा पा रहे थे1 वह उठने में भी स्वयं को असमर्थ पा रहे थे1 जंगल के जानवरों को उनसे बहुत प्रेम था, उन्होंने उनका इलाज कराने हेतु सभी जानवरों की बैठक बुलाई जिसमें शेर हाथी, खरगोश, बाघ, भालू, हिरण और बंदर इत्यादि सभी आए. सभी ने अपना - अपना सुझाव दिया क्योंकि उस अधिकारी ने बंदर का जूठा फल खाया था. जिस वजह से अंदर ही अंदर वह बहुत शर्मिंदा है वह पश्चाताप करना चाहता है और अधिकारी को इस मुसीबत से निकालना चाहता है बंदर उनकी बातें बड़े ध्यान से सुन रहा था बंदर ने कहा कि वह उस सन्यासी के घर का पता जानता है जो कुछ दिनों पहले हमारे जंगल में जड़ी-बूटी तलाशने हेतु आया था और हमारे जंगल के अधिकारी ने उस सन्यासी की बहुत सहायता की थी. मुझे उम्मीद है कि सन्यासी हमारी मदद जरूर करेंगे और उनकी जड़ी बूटी से निर्मित औषधियों का सेवन कर उनका स्वास्थ्य जल्दी ही ठीक हो जाएगा. मैं अभी जाता हूं और उन्हें बुला लाता हूं तभी वहां उपस्थित और जानवर भी कहने लगे कि बंदर भाई आप ठीक कह रहे हैं हमें उस सन्यासी की अभी बहुत जरूरत है वहीं हैं जो हमारी मदद कर सकते हैं हमारे जंगल के आसपास कोई डॉक्टर भी नहीं है तुम जाओ और तुरंत उस सन्यासी को यहां लेकर आओ ताकि हम अपने मित्र को जल्द से जल्द ठीक कर सकें और बंदर ने वैसा ही किया वह गया और सन्यासी के समीप पहुंचते ही उसने उस सन्यासी के पैर पकड़ लिए और रोने लगा सन्यासी शुरू में तो घबराए परंतु जल्द ही उन्हें समझ में आ गया कि वह किसी मुसीबत में है या उसका कोई साथी किसी बड़ी मुसीबत में है इसलिए वह उसके पीछे -पीछे हो लिये और जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाते हुए अधिकारी के पास पहुंच गए और सन्यासी ने सबसे पहले उनके स्वास्थ्य की जांच की और अपने थैले जिसे वह हमेशा अपने साथ रखते थे उसमें से जड़ी बूटियों की पत्तियां निकालकर पत्थरों पर पीसकर उन्होंने उनके लिए औषधि तैयार की और उन्हें पिलाया औषधि का सेवन करते ही अधिकारी के स्वास्थ्य में सुधार होने लगा और कुछ ही दिनों में वे बिल्कुल स्वस्थ हो गये और सभी जानवर, अधिकारी और अधिकारी के परिवार ने सन्यासी को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया और उन्हें उपहार स्वरूप जंगल से ढेर सारे फल फूल तोड़कर उनको भेंट किये और सभी फिर से खुशी-खुशी जंगल में रहने लगे 1 जंगल का अधिकारी शिकारियों से उन जानवरों की हमेशा रक्षा

करता था और जानवर भी अधिकारी को किसी प्रकार का नुकसान नहीं पहुंचाते थे इस प्रकार प्रेम से रहने की वजह से अधिकारी की जान बच गई और सभी खुशी-खुशी जंगल में फिर से एक साथ रहने लगे.

इंद्रभान सिंह कंवर व्दारा पूरी की गई कहानी

सत्कर्म

उसकी पत्नी और उसके बच्चे सभी परेशान हो गए. दूर-दूर तक जंगल में किसी का अता-पता नहीं चल रहा था. जैसे- तैसे उसके घरवाले उपचार करने में लगे हुए थे. दिन पर दिन बीतते गए पर उसकी बीमारी ठीक होने का नाम ही नहीं ले रही थी. जिसका फायदा घुसपैठिए लोग जंगल को बर्बाद करने में उठा रहे थे.

इधर जंगल के सभी जानवर भी उसके घर का सन्नाटा देखकर चिंतित थे कि आज कल यहां इतनी शांति क्यों है? और इधर जंगल में लोगों ने उत्पात मचा रखा है. यह सब सोचकर जंगल के जानवरों ने सभा बुलाकर चालाक बब्बन बंदर को उसके घर जानकारी पता करने के लिए भेजा. बब्बन वहां जाता है और उसे पूरी स्थिति का पता चलता है. वह वापस आकर सभी को उसके घर की स्थिति बताता है. स्थिति को जानकर सभी जानवर उस भले व्यक्ति की मदद करने का विचार करते हैं और फिर सभी में मंत्रणा होती है उसकी सहायता करने की. इतने में बब्बन फिर कहता है कि मैं एक व्यक्ति को जानता हूं जो इस समय हमारी मदद कर सकता है. मैंने कुछ दिन पहले एक सन्यासी को उस अधिकारी के घर में देखा था जो दवा की खोज में यहां आया हुआ है. पेसे से वह वैद्य मालूम पड़ता है और मैंने सुना था कि वह कुछ दिन इसी जंगल में रहकर दवा की शोध करेगा. यदि हम उसे ढूंढ लें तो वह निश्चित ही हमारी मदद कर सकता है. फिर क्या था सभी ने बब्बन की बात मानी और उस सन्यासी की खोज में जुट गए.

काफी मेहनत के बाद आखिरकार उसका पता चल ही गया और फिर बब्बन ने उसके पास जाकर अधिकारी की बीमार होने का समाचार सुनाया और उसे मदद के लिए कहा. यह सुनकर सन्यासी तुरंत तैयार होकर उसके साथ घर की ओर चल पड़े. घर पहुंचकर उसका इलाज किया. सन्यासी के इलाज से कुछ दिन बाद वह अधिकारी ठीक हो जाता है और सन्यासी को धन्यवाद देता है. जिस पर सन्यासी उसे जानवरों की बात बताता है कि इन्होंने तुम्हारी मदद की है. यह तुम्हारे सत्कर्म और सद्भाव का परिणाम है

जिस कारण आज तुम्हारा जीवन सुरक्षित है. तुम सदैव अपना आचरण ऐसे ही बनाए रखना.

इतना कह कर सन्यासी पुनः जंगल की ओर शोध के लिए चला जाता है. अधिकारी भी जंगल के सभी जानवरों को धन्यवाद देता है और अगले दिन से पुनः जंगल और जानवरों की सेवा में लग जाता है

यशवंत कुमार चौधरी व्दारा पूरी की गई कहानी

गरियाबंद के उस बड़े अधिकारी के बीमार पड़ने से घरवाले काफी परेशान हो गए, उनको इस परेशानी से उबरने का कोई रास्ता नहीं सुझ रहा था. जंगल में ना कोई अस्पताल था ना कोई राह दिखाने वाला. परिवारजनों ने उसे सघन पेड़ों के बीच शीतल छाँव वाले स्थान पर ले जाना उचित समझा और उसके लिए पेड़ की शाखाओं पर रस्सी -डंडे एवं साडी के सहारे एक झुला बनाया जो बिस्तर की तरह था. उस अधिकारी के अच्छे स्वभाव एवं सेवाभाव से आसपास के जीव-जंतु काफी स्नेहिल थे उन्होंने भी मदद करने की खूब कोशिश की और तरह- तरह का सेवा कार्य कर अपना अमूल्य योगदान दिया. हाथी ने केले लाए, बंदरों ने आम लाए और अन्य जानवरों ने भी तरह- तरह के फल -कंदमूल लाए. बन्दर के जूठे फल खाने से हुए बीमार की वजह से बन्दर और अधिक विचलित थे. कुछ समय बीतने पर बच्चों को वह सन्यासी याद आया उन्होंने सोचा - क्यों ना हम उस सन्यासी के पास जाकर अपने पापा के उपचार हेतु मदद मांगें ? पर दिक्कत यह थी कि उस संन्यासी को आखिर इस जंगल में ढूंढे कौन और कैसे ढूंढें ? यह चिंता का सबब बना रहा. उसी समय बंदरों का एक दल वहां एकाएक आ पहुंचा और उन्होंने इस काम में मदद करने की ठानी और फिर क्या था बन्दर तो आखिर चंचल प्रवृत्ति के होते ही हैं उन्होंने आंव देखा- ना तांव झट से दौड़ पड़े और सन्यासी को तलाशने लगे. बहुत दूर जाने पर वह सन्यासी जड़ी- बूटी खोजते हुए उन्हें आखिर मिल ही गया फिर उन्होंने वापस आकर बच्चे को उस संन्यासी का पता बताया और उसे साथ लेकर गए और बच्चों ने सन्यासी को पापा की बीमार होने संबंधी पूरी जानकारी बताई और स्वास्थ्य लाभ हेतु मदद मांगी. सन्यासी भावुक हो गया उसने शीघ्र ही पास में इकट्ठा किए हुए जड़ी बूटी उठाई और उनके साथ चलने को राजी हो गया. जब वे सब गरियाबंद के उस बीमार अधिकारी के पास पहुंचे तो वह बीमारी से व्याकुल होकर बेचैन था. सन्यासी ने बिना देर किए नब्ज टटोली और जाँच पड़ताल करके झट से दवा बनाकर एक खुराक पिलाई, अधिकारी को थोड़ी राहत महसूस हुई और वह उठ खडा हुआ. अधिकारी ने संन्यासी को धन्यवाद ज्ञापित किया एवं ईलाज करने हेतु अपनी एक अंगूठी उपहार स्वरूप भेंट की. सन्यासी ने 3 खुराक दवा और दी और कहा आप इसके सेवन एवं बेहतर निगरानी के साथ उचित खानपान से जल्दी ही ठीक होकर अपने काम पर जा सकेंगे. सन्यासी ने उस दिन सबको अपना परिचय दिया कि वह कोई संन्यासी

नहीं बल्कि आयुर्वेद के अच्छे जानकार होने के साथ एक प्रशिक्षित आयुर्वेद अधिकारी हैं जो इसी प्रदेश के हैं. अधिकारी का आग्रह स्वीकार कर सन्यासी कुछ दिन रुककर ईलाज किया जिससे वह अधिकारी ठीक हो गया और दोनों में मित्रता हो गई, इस मित्रता से वह जंगल का अधिकारी भी बहुत सारी जड़ी बूटियों के बारे में सीख गया और सन्यासी के सतत मार्गदर्शन से बीमारी दूर भगाने में उपयोग करने लगा.

गीता खूंटे व्दारा पूरी की गई कहानी

अधिकारी की बढ़ती बीमारी से उसके घर वाले बहुत परेशान रहने लगे, उन्होंने आसपास के बड़े बुजुर्ग लोगों से मदद लेने की सोची मगर अफसोस उन्हें निराशा ही हाथ लगी.

वह अधिकारी इतना अच्छा था कि उसकी बीमारी के बारे में सब बातें करने लगे और अफसोस जताने लगे, तभी यह बात उस सन्यासी के कानों में पहुंची, सन्यासी ने बिना देर किए कुछ जंगली जड़ी बूटियां पकड़ी और चल पड़ा उस अधिकारी के घर.

घर जाकर सन्यासी ने अधिकारी का हाल देखा वह बेहद कमजोर और बीमार हो गया था. अधिकारी की हालत देखकर सन्यासी को बहुत दुख हुआ. सन्यासी ने तुरंत जंगल में खोजी गई जड़ी बूटियों का रस निकाला और अधिकारी को पिला दिया. कुछ देर बाद अधिकारी के शरीर में हरकत हुई उसने आंखें खोली, तब सन्यासी ने जड़ी बूटियों का रस दोबारा पिलाया अब अधिकारी थोड़ा और स्वस्थ हो गया. थोड़ी देर बाद अधिकारी को ताजे फलों का जूस दिया गया. कुछ दिन में ही अधिकारी स्वस्थ हो गया और वह चलने फिरने लगा. अधिकारी के स्वस्थ होने से उसके घर वाले और जंगल के जीव जंतु भी बहुत खुश हो गए. अधिकारी के साथ सभी ने सन्यासी को बहुत-बहुत धन्यवाद दियाऔर सन्यासी को वही जंगल में रहने के लिए आग्रह करने लगे. सन्यासी के हामी भरने के बाद सभी ने सन्यासी के रहने के लिए कुटिया की व्यवस्था कर दिया. अब जंगल में कोई भी बीमार पड़ने से सभी सन्यासी के पास जाकर तुरंत ही ठीक हो जाते हैं. वह अधिकारी जंगली जानवरों के स्वास्थ्य का भी बहुत अधिक ख्याल रखता है ताकि उन्हें कुछ बीमारी ना हो और एक बार फिर उस जंगल में सभी खुशी-खुशी रहने लगे.

टेकराम ध्रुव 'दिनेश' व्दारा पूरी की गई कहानी

इलाज जंगल का

जंगल के आसपास कोई डाक्टर न होने के कारण अधिकारी का उपचार वहां पर कर पाना संभव नहीं हो रहा था. उसकी पत्नी सोच में पड़ गई कि -"इतने दिन हो गए यहां जंगल में प्रकृति के बीच, प्राकृतिक वातावरण में आनंद पूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे थे. ये अचानक इन्हें क्या हुआ कि बीमार हो गए. उस सन्यासी का भी अता-पता नहीं जो विभिन्न बीमारियों का इलाज करने हेतु यहां जड़ी-बूटी की खोज में आया था. यहां पर होते तो इनकी बीमारी के उपचार के बारे में कुछ बताते, हमें कुछ सलाह देते. अब क्या करें? किसी तरह इन्हें शहर ले जाकर डाक्टर को दिखाना पड़ेगा. "अगले दिन अधिकारी को शहर ले जाने की तैयारी होने लगी, तभी उस सन्यासी का आगमन होता है.

घर में छाई खामोशी के बारे में पूछने पर उसे पता चलता है कि अधिकारी विगत दिनों से बीमार हैं और उन्हें शहर ले जाने की तैयारी चल रही है ताकि अच्छे से उपचार हो सके.

सन्यासी अधिकारी के पास जाकर उनसे उनकी तबीयत के बारे में पूछताछ करने के बाद कहा- ' साहब आप चिंता न करें धीरज से काम लें. जनहित कार्य हेतु मैंने कई बीमारियों के इलाज हेतु कई प्रकार की जड़ी-बूटियां एकत्र कर लिया है, उनमें से कुछ जड़ी-बूटियों का उपयोग कर आप जल्द ही ठीक हो जायेंगे. मैं अभी से ही उपचार करना शुरू कर देता हूं.

कुछ दिनों बाद सन्यासी ने अधिकारी से कहा -' साहब, जड़ी बूटियों के असर से अब आप पूर्णतः ठीक हो गए हैं. अब मुझे जन कल्याण के कार्य हेतु यहां से जाना होगा, अनुमति दीजिए.

अधिकारी ने खुशी-खुशी सन्यासी को विदा कर दिया.

कन्हैया साहू 'कान्हा' व्दारा पूरी की गई कहानी

वन औषधी का महत्व

वन चपरासी से अधिकारी की पत्नी ने कहा कि तुम आसपास गांव में जाकर वैद्य या हकीम को ढूंढकर लाओ जो साहब का इलाज कर सके. चपरासी गांवों में जाकर वैद्य की खोजबीन करने लगा उसे एक गांव में वैद्य तो नही परन्तु एक ओझा जरूर मिल गया, जो झाड़ फूंक करके लोगो का इलाज करता था. चपरासी ने पूरी बात उस ओझा को समझाकर उसे अपने साथ चलने के लिए राजी कर लिया. ओझा अब अपने तंत्र मंत्र की शक्ति से वन अधिकारी का इलाज करने लगा. इसके लिए उसने मुर्गियों की बलि भी दिया. कई दिनों तक लगातार झाड़ फूंक करने के बाद भी जब अधिकारी की तबियत में सुधार नही हुआ तो ओझा हार मान कर अपने गांव वापस चला गया इधर अधिकारी की पत्नी बच्चे और चपरासी तबियत में सुधार न होने के बजाय बिगड़ती हालात को देखकर बहुत चिंतित हो गए इधर सन्यासी कई बीमारियों के लिए अपने अथक मेहनत व ज्ञान के बल पर जड़ीबूटी जंगलो से खोजकर दवाई तैयार कर रहा था. उसने जंगली जानवरों से होने वाले बीमारियों के लिए बहुत से जड़ीबूटी खोज लिया था अब वह अपने निवास स्थान जाने का सोचकर उस अधिकारी के घर धन्यवाद देने के लिए आया. जिसकी अनुमति मिलने पर ही वह इन गुणकारी औषधियों को खोज पाया था. उसने देखा कि अधिकारी तो बहुत अधिक बीमार और कमजोर हो गया है. उसने पूरी जानकारी लेकर अब उसका इलाज अपने ज्ञान व जंगली औषधी से करने लगा, धीरे धीरे अब अधिकारी की तबियत में सुधार आने लगा. एक माह के उपचार से उसकी तबियत में बहुत सुधार हो गया. अब अधिकारी को समझ मे आ गया कि जंगलो में बहुत से गुणकारी चीज़े उपलब्ध है जिनका उपयोग इलाज के लिए किया जा सकता है. अब उसे बहुत खुशी भी हुआ कि उसने इस सन्यासी को जंगल मे औषधी खोजने से मना नही किया था जिसके कारण ही आज वह पूरी तरह अब स्वस्थ्य हो सका. अधिकारी ने उस सन्यासी को अब वही रहकर और नए बीमारियों की औषधी जंगल मे खोजने के लिये आग्रह कर रोक लिया. सन्यासी अब उसी इलाके में रहकर अपनी औषधियों से लोगो का इलाज करने लगा. खाली समय मे वह कुछ लोगो को अपने ज्ञान सेऔषधियों के गुणों व उनकी पहचान की जानकारी देता जिससे अधिक से

अधिक लोग जंगल मे उपलब्ध चीज़ो को पहचान कर उनका उपयोग कर सकें. अब उस इलाके में लोगो को इलाज सहज ही उपलब्ध हो जाता है. लोग उस सन्यासी को देवतुल्य मनाने लगे और वन को देवी के रूप में पूजने लगे. वनदेवी के सम्मान में अब प्रतिवर्ष उत्सव का आयोजन भी होने लगा.

सीख:-- हमारे प्राकृतिक संसाधनों को पहचान कर आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति से बहुत से बीमारियों का इलाज किया जा रहा है. इसे और ब्यापक रूप में विस्तार किया जाना चाहिये और हमे अपने प्राकृतिक संपदा का संरक्षण करना चाहिए

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

रिश्ता

शनिवार का दिन था. कक्षा में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का कालखंड चल रहा था. बच्चे एक-एक कर कविता, कहानी, गीत, चुटकुले आदि प्रस्तुत कर रहे थे. कई बच्चे अपनी पारी की प्रतीक्षा किए बिना दौड़ - दौड़ कर आगे आते जा रहे थे. उनका उत्साह और उनकी तैयारी देखकर तिवारी सर को बहुत खुशी हो रही थी.

हो भी क्यों ना? वे बच्चों के लिए बड़ा परिश्रम करते थे. बच्चों की भाषा संबंधी योग्यता हो या उनके नैतिक मूल्यों का विकास, हर बात के लिए वे नए-नए प्रयत्न करते ही रहते थे.

कक्षा में यह सब चल रहा था. जो बच्चे मुखर थे, जिनमें किसी प्रकार का संकोच न था वे अपनी पारी आने के पहले ही सामने खड़े होकर अपनी प्रस्तुति दिए जा रहे थे.

पर इन सबसे अलग एक बच्चा और भी था, विवेक. विवेक बहुत योग्य था पर शांत रहता था. वह कभी खुद को दिखाने की कोशिश नहीं करता था. आज कक्षा में वह हर प्रस्तुति के बाद अपना हाथ उठाता था, शायद सर की दृष्टि पड़ जाए और वे उसे सामने आने की अनुमति दे दें. पर पता नहीं क्यों, ऐसा नहीं हुआ और छुट्टी का समय पास आ गया.

अचानक तिवारी सर की आवाज गूंजी, "आज बस इतना ही. और हां, जो अभी तक सामने नहीं आ पाए वह सब खड़े हो जाएं. "

देखते-देखते पंद्रह बीस बच्चे खड़े हो गए. तिवारी जी की कड़कती हुई आवाज फिर आई, " तो तुम लोगों ने कोई तैयारी नहीं की, चलो घुटनों के बल बैठ जाओ. "

जिन बच्चों ने कोई तैयारी नहीं की थी उन्होंने सोचा, चलो सस्ते में छूटे. पर ऐसे बच्चे जिन्हें बहुत सी कविताएं, कहानियां, गीत आदि याद थे, पर जिन्हें आगे आने का अवसर नहीं मिल पाया, वे दुखी हो गए. विवेक भी उन्हीं में से एक था. सर का आदेश होते ही अपमान और दुख से उसका चेहरा लाल हो गया. दूसरे बच्चों की तरह वह भी कक्षा में पीछे की दीवार के किनारे घुटनों पर बैठ गया.

उसका सिर झुका हुआ था. वह सोच रहा था, मेरा अपराध क्या है, मैंने दूसरों के मौके नहीं छीने या मैंने अपनी बारी की प्रतीक्षा की या फिर चिल्ला-चिल्लाकर सर का ध्यान अपनी ओर नहीं खींचा. यह सब सोचते-सोचते उसका मन पीड़ा से भर गया. उसकी आंखें छलक पड़ीं और आंसू टप-टप नीचे गिरने लगे. उसके अगल- बगल के बच्चों ने जब यह देखा तो तुरंत चिल्लाने लगे सर विवेक रो रहा है.....

अब इसके बाद क्या हुआ होगा, इसकी आप कल्पना कीजिए और कहानी पूरी कर हमें ई मेल kilolmagazine@gmail.comपर भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगल अंक में प्रकाशित करेंगे

भाखा जनऊला

पर्यायवाची शब्द पहेली

1		2	3		4	5
6	7	8		9		10
11	12		13	14	15	
	16	17	18		19	
20			21	22		
23	24	25			26	27
28	29		30	31	32	

ऊपर से नीचे –

1) हवा, वायु, समीर
2) अमृत, सोम, पीयूष
5) वृक्ष, पेड़, पादप
7) फूल, कुसुम, पुष्प
9) घोड़ा, अश्व, तुरंग
13) आग, पावक, अग्नि
15) आकाश, गगन, अंबर
20) रात, निशा, रात्रि
24) मनुष्य, आदमी, मानव
26) तालाब, जलाशय, ताल

बांये से दांये–

2) बेटी, पुत्री, तनुजा
4) मित्र, सखा, साथी
6) पृथ्वी, भू, धरा
11) गीला, तर, झुका हुआ
13) घर, गृह, सदन
16) आँख, नेत्र, लोचन
21) बाल, केश, कुन्तल
23) पिता, पालनकर्ता, पालक
24) मनुष्य, आदमी, मानव
28) पानी, वारि, पय
30) समुद्र, सिंधु, रत्नाकर

पर्यायवाची शब्द पहेली का सही हल

1 प		2 सु	3 ता		4 मी	5 त
6 व	7 सु	8 धा		9 ह		10 रू
11 न	12 म		13 अ	14 य	15 न	
	16 न	17 य	18 न		19 भ	
20 र			21 ल	22 ट		
23 ज	24 न	25 क			26 स	27 र्व
28 नी	29 र		30 सा	31 ग	32 र	